जनवरी, 1980
वर्ष 15 ❋ अंक 8

# ज्ञानामृत

मूल्य 1.75

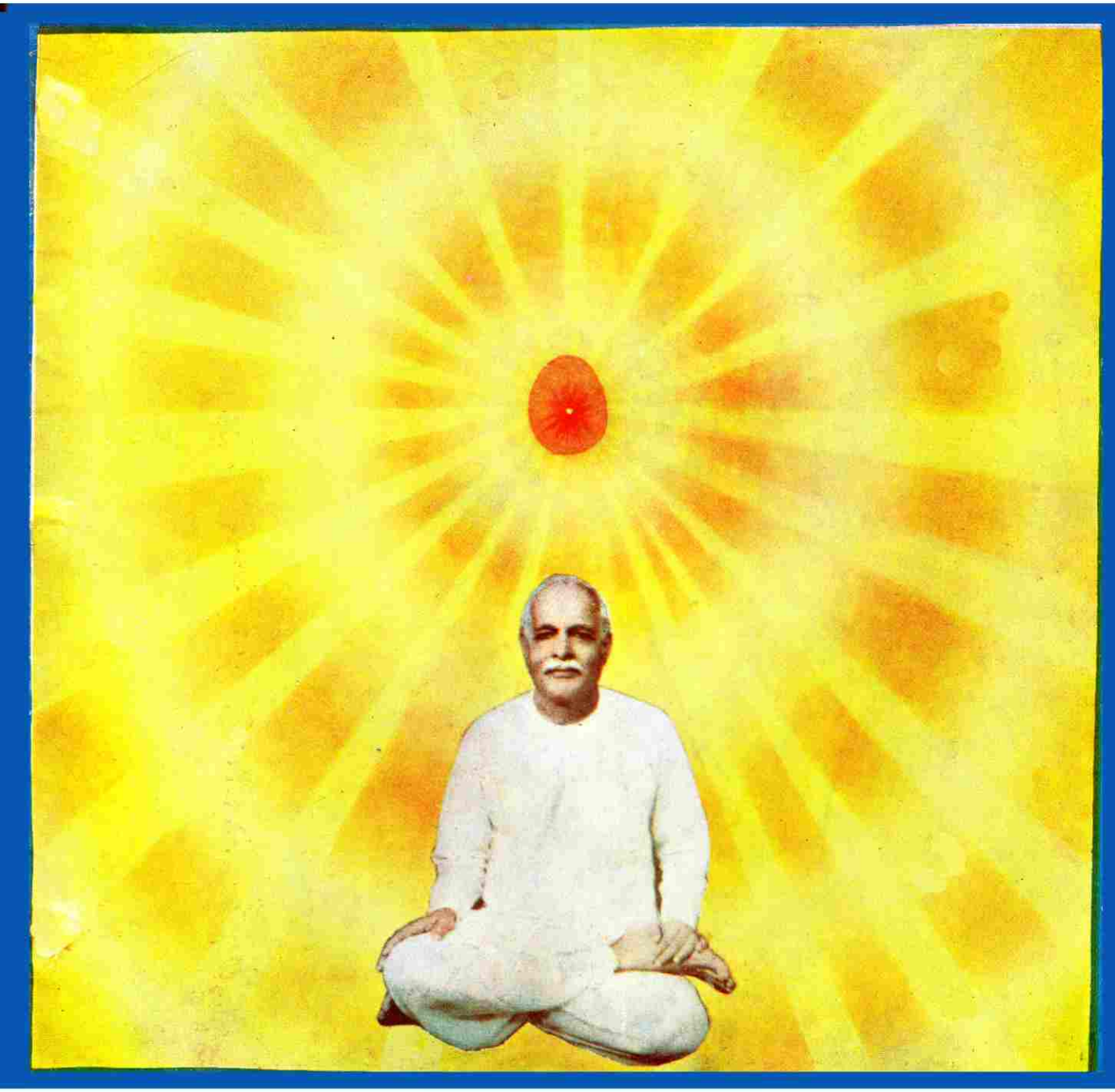

ऐसे थे शिव बाबा के साकार माध्यम–प्रजापिता ब्रह्मा

तन-मन-धन अर्पण करके ईश्वरीय सेवा की

आधार-मूर्त्त और उद्धारमूर्त्त बने

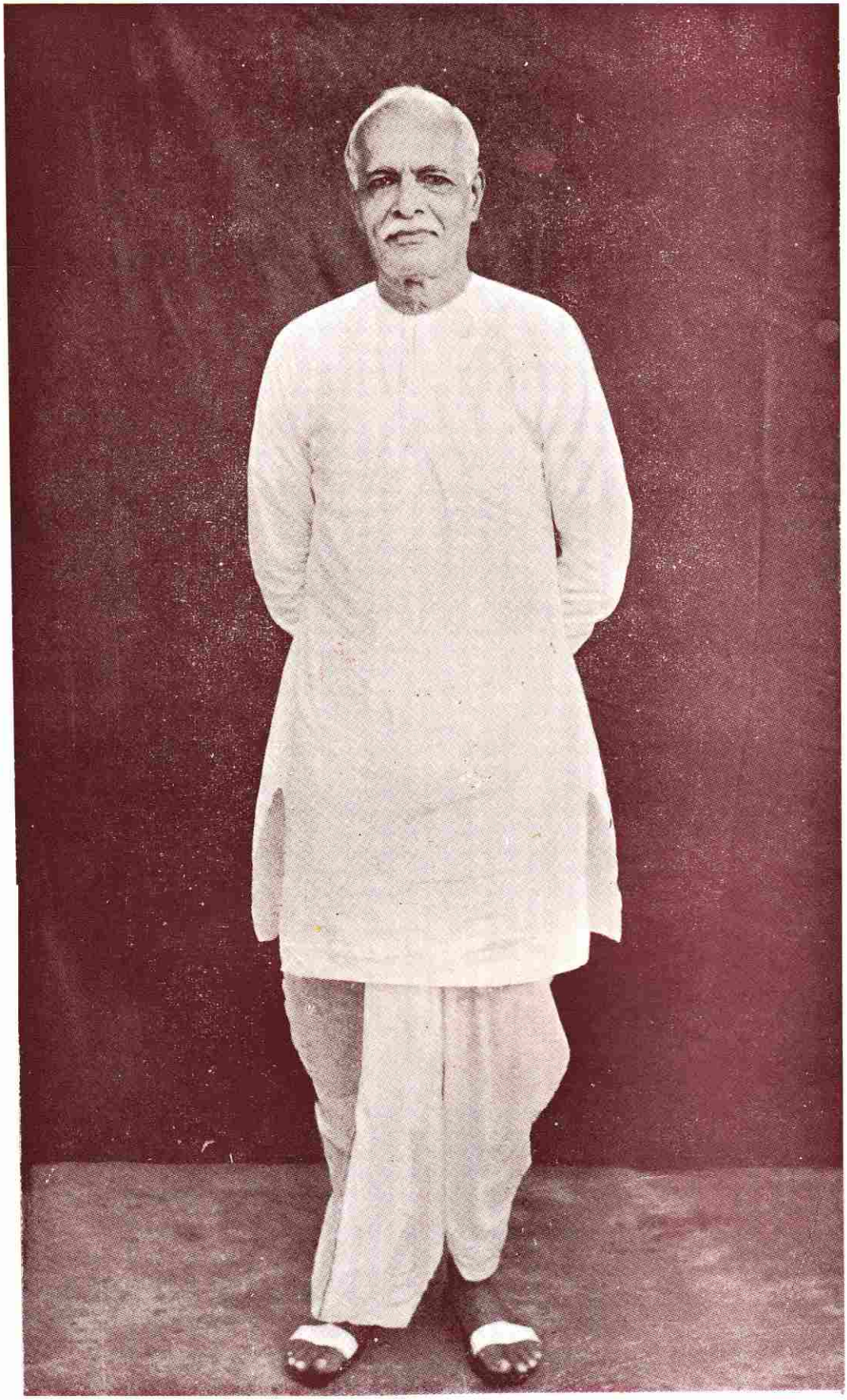

जीवन कमल-पुष्प के समान बनाया

अब अव्यक्त रूप में विश्व-कल्याण का कार्य कर रहे हैं

# अमृत-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | परमपिता शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा (मुख पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित | १ | |
| २. | ऐसे थे हमारे और जगत के बाबा | २ | |
| ३. | 'सिक्कीलधे' बाप 'सिक्कीलधे' बच्चों से न्यारी बातें और बातों की गहरी परतें | ६ | |
| ४. | नैतिक शिक्षा बालकों और बालिकाओं की और दास्तान ओम मण्डली की | ११ | |
| ५. | ऐसी थी बाबा की मीठी युक्तियां | १६ | |
| ६. | यज्ञ इतिहास | १७ | |
| ७. | अनैतिकता से नैतिकता का छिड़ा संग्राम जब बिगल बजाया परमात्मा ने | १६ | |
| ८. | दास्तान दादी आलराऊण्डर की | २३ | |
| ९. | सेवा समाचार (चित्रों में) | २७ | |
| १०. | बाप-दादा (कविता) | २६ | |
| ११. | कैसी अद्भुत थी वे सुहावनी घड़ियां | ३२ | |
| १२. | मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मुझे त्रिलोकी मिल गई है | ३४ | |
| १३. | सतयुग सम्पूर्ण क्रान्ति और स्वतन्त्रता | ३५ | |
| १४. | मेरे बाबा आज भी वे कर्म अपना कर रहे | ३८ | |
| १४. | ब्रह्मा (कविता) | ४० | |
| १६. | आध्यात्मिक सेवा समाचार | ४१ | |


मुख-पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित

## परमपिता शिव के साकार माध्यम—प्रजापिता ब्रह्मा

पिता-श्री, जिनके शरीर का नाम दादा लेखराज था, परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य प्रवेश से पहले श्री नारायण के अनन्य भक्त थे। वे एक प्रसिद्ध जवाहिरी थे और इस व्यवसाय के कारण नेपाल, उदयपुर आदि के महाराजाओं से उनके सम्बन्ध हुए। वे भक्ति मार्ग के नियमों में पक्के थे और अपने स्नेह, ईमानदारी तथा धार्मिक निष्ठा के कारण महाराजाओं सम्बन्धियों तथा व्यापारियों में प्रिय थे।

सन् १९३५ के आसपास उनकी भक्ति पराकाष्ठा पर थी। अनायास ही एक-के-बाद-एक उन्हें कई साक्षात्कार हुए। एक साक्षात्कार में उन्हें विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ और उसने महावाक्य उच्चारे—"अहम् चतुर्भुज तत् त्वम।" एक अन्य साक्षात्कार में उन्होंने इस कलियुगी, पतित एवं दुखी सृष्टि का महाविनाश देखा। उसमें एटम और हाइड्रोजन बमों, जो उन दिनों अभी बने नहीं थे, द्वारा तथा भारत में गृह-युद्धों और प्राकृतिक आपदाओं द्वारा महाविनाश होता दिखाई दिया।

फिर एक दिन जब वे एक 'सत्संग' से उठकर अपने कमरे में आकर बैठे थे, तो अनायास ही उस कमरे में लाल-सुनहरी अव्यक्त प्रकाश प्रगट हुआ और दादा के तन में परमपिता परमात्मा ने प्रविष्ट होकर ये महावाक्य उच्चारण किये—

निजानन्द रूपं शिवोऽहम शिवोऽहम
ज्ञानस्वरूपं शिवोऽहम शिवोऽहम
आनन्द स्वरूपं शिवोहम शिवोऽहम ॥

यह परमपिता परमात्मा शिव का दिव्य प्रवेश था। दादा ने दिव्य साक्षात्कार किया कोई तारे-तारे से आकाश से उतरते हैं और उनमें से कोई दैवी राजकुमारी और कोई दैवी राजकुमार बन जाता है। परमपिता परमात्मा शिव ने कहा कि आपको ऐसी दिव्य सृष्टि की स्थापना के निमित्त बनना है।

तब दादा अपने जवाहिरात के व्यवसाय से अलग हुए और सन् १९३७ में कन्याओं माताओं के एक ट्रस्ट को अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति संभालने के लिये निमित्त बनाकर वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की स्थापना के कार्य में साकार माध्यम बने। १८ जनवरी सन् १९६९ को वे पार्थिव शरीर को छोड़कर अव्यक्त हो गये और उसी दिव्य रूप से परमपिता शिव के साथ वे सतयुगी, १००% पवित्रता-सुख-शान्ति सम्पन्न सृष्टि की स्थापना के कार्य में निमित्त हैं।

बहनों और भाइयों से निवेदन है कि हमें अपने अनुभव और आध्यात्मिक जीवन कहानी लिख भेजें ताकि उस द्वारा दूसरों की सेवा हो—सम्पादक

सम्पादकीय

# ऐसे थे हमारे और जगत् के बाबा!

सन् १९५३ से लेकर १९६९ के प्रारम्भ तक बाबा से साकार रूप में ईश्वरीय सेवा के निमित्त जो प्रायः मिलन अथवा वार्तालाप होता उससे विभिन्न प्रकार के अनुभवों का एक अतुल ख़ज़ाना बाबा से मिला। उसी के कुछ अनमोल मोती यहाँ अन्य बहन-भाइयों के लिए बाबा की प्रिय देन के रूप में प्रस्तुत करता हूँ :—

### ईश्वरीय सेवार्थ सदा प्रोत्साहन

यह बात सन् १९५५-५६ की है। तब मुझे समाचार मिला कि दादी कुमारिका जी, रत्न मोहिनी बहन और भाई आनन्द किशोर जी अमुक तिथि को एक समुद्री जहाज़ से मद्रास बन्दरगाह पर लौट रहे हैं। उन दिनों जापान में हो रहे सम्मेलन से सम्बन्धित सारे पत्राचार (Correspondence) और छपाई इत्यादि का कार्य बाबा ने मुझे सौंपा हुआ था। मैंने बाबा को लिखा—"प्यारे बाबा, मेरा विचार है कि जब ये बहन-भाई मद्रास में पहुंचें तब मद्रास में पत्रकार सम्मेलन (Press Conference) हो।" उन दिनों यह यज्ञ कठोर आर्थिक कठिनाई के दौर में से गुज़र रहा था परन्तु पत्र मिलते ही बाबा ने मुझे इसके लिए स्वीकृति की सूचना दे दी और मधुबन बुला लिया। मैं मधुबन पहुंचा तो बाबा को मालूम हुआ कि मेरे पास पर्याप्त वस्त्र ही नहीं हैं कि चार-पाँच दिन की लगातार इतनी लम्बी यात्रा कर सकूं और वहाँ जाते ही कपड़े धुलाये बिना उस मौके को ठीक तरह से निभा सकूँ। परन्तु एक तो आर्थिक कठिनाई, दूसरे अब तुरन्त तीन-चार जोड़े कहाँ से सिलवाऊँ? बाबा ने वस्त्रों के स्टॉक की संभाल रखने वाली बहन को निर्देश दिया कि वह पुराने कपड़ों के स्टाक में से मेरे लिए कोई वस्त्र ढूंढ और यदि उसमें से कोई पैन्ट इत्यादि मिल जाए तो मेरे लिए निकाल दे। उसने ऐसा ही किया। मेरे लिए दो सफ़ेद पैन्ट निकाल दीं। वो पैन्ट मुझे बहुत छोटी होती थी, टखनों से भी ऊपर तक ही पहुंच पाती थी परन्तु जब बाबा ने मुझसे पूछा—"बच्चे वस्त्र ठीक हैं" परिस्थिति को देखते हुए तो मैंने कहा—"हाँ, बाबा।" वास्तव में मुझे पैन्ट पहनने का अभ्यास भी नहीं था। मैंने जीवन में केवल एक रात्रि को ही अपने एक बड़े भाई के विवाह के अवसर पर, अज्ञान काल में, उनके आग्रह पर पैन्ट पहनी थी। परन्तु ये अब बाबा ने दी थी, इसीलिये इसी को वरदान मानकर स्वीकार किया। सोचा कि इसको पेट से काफ़ी नीचे बाँध लूंगा।

आबू से अहमदाबाद और फिर बम्बई पहुंचा। वहाँ से जानकी बहन भी पत्रकार सम्मेलन करने मेरे साथ मद्रास गईं। वहाँ उनके एक लौकिक सम्बन्धी के यहाँ हम ठहरे जिनका निवास तत्कालीन मुख्य मन्त्री के बंगले के साथ वाली बिल्डिंग में ही था। अतः उनके सम्बन्ध से मुख्य मन्त्री के यहाँ से ही हमने प्रैस वालों को फ़ोन कर दिये कि आज अमुक समय प्रैस कान्फ्रेन्स होगी और उन्हें पूछताछ के लिए वहीं का ही टेलीफ़ोन नम्बर हमने दे दिया। हम तो इस बात से अनभिज्ञ थे और हमने भोलेपन से ही वह नम्बर दे दिया था परन्तु सभी समाचार पत्रों के सम्वाददाताओं को तो यह मालूम था कि यह मुख्य मन्त्री के बंगले का फ़ोन नम्बर है। हमने सम्मेलन के लिए सायंकाल का समय दिया था और जापान से आने वाले हमारे भाई-बहनों ने प्रातः लगभग १०-११ बजे तक पहुंच जाना था परन्तु वे सायंकाल प्रैस कान्फ्रेन्स के समय तक भी नहीं पहुंचे। तथापि हमने प्रैस वालों के लिए एक वक्तव्य बना रखा था। मुख्य मन्त्री के आवास के टेलीफ़ोन नम्बर के कारण काफ़ी रिपोर्टर आ गये थे। हमने उन्हें उस वक्तव्य की टंकित लिपि (Typed Copy) दे दी। वह वहाँ के मुख्य समाचार पत्र 'हिन्दु' (The Hindu) तथा अन्य पत्रों में छप गई।

इसके बाद जब हम बम्बई आये तो बम्बई में

भी रिपोर्टस को बुलाया गया था। वहाँ टाइम्स आफ़ इन्डिया का संवाददाता और फ्री प्रैस जरनल (Free Press Journal) का सम्वाददाता भी स्टेशन पर आया था और दैनिक इन्डियन एक्सप्रेस ने अपने एक स्थाई स्तम्भ में फ़ोटो-सहित प्रैस-इन्टरव्यू (Press Interview) छापा था। इस प्रकार उससे ईश्वरीय सेवा हो गई थी।

आज जब वह वृत्तान्त याद आता है तो सोचता हूं कि **कितनी कठिन परिस्थितियाँ होने के बावजूद भी ईश्वरीय सेवा के लिए बाबा ने सदा ही प्रोत्साहन दिया। बाबा हमेशा कहा करते कि "बच्चे, पेट के भोजन के खर्च से भी बचाकर ईश्वरीय सेवा में लगाना चाहिए। इतनी प्रेरणा देते थे बाबा ईश्वरीय सेवा के लिए!**

### ईश्वरीय सेवा की तीव्र गति

ईश्वरीय सेवार्थ बाबा के कार्य करने और कराने की रफ़्तार देखते ही बनता था। उससे तो किसी को भी यह आभास हो सकता था कि सचमुच यहाँ सारे विश्व को सन्देश देने की मुहिम चल रही है अथवा यह युग-परिवर्तन एवं विश्व-परिवर्तन का कार्य चल रहा है। प्रतिदिन डाक द्वारा भेजने के लिए लिटरेचर के बहुत-से पैकेट बड़ी तीव्र गति से बन रहे होते। प्रतिदिन प्रातः बाबा स्वयं भी बहुत तीव्र गति से बहुत-से पत्र लिख रहे होते। हर आये दिन बाबा किसी विषय पर कोई पुस्तिका, फ़ोल्डर या हैंडबिल आदि छपवाने का निर्देश देते। उन दिनों दिल्ली में डाक घर दिन में तीन बार डाक बाँटता था और हर डाक में बाबा के दो-तीन या कम-से-कम एक पत्र कोई-न-कोई नई चीज़ छपवाने के बारे में होता और मज़े की बात तो यह है कि हर बार एक तिथि निश्चित की गई होती जिस तिथि तक वह साहित्य छपवा कर सेवास्-थानों पर पहुंचा देना होता। जिस समय पत्र मिलता उसी समय ही लिखने और अनुवाद करने का कार्य शुरू हो जाता क्योंकि उसमें समय की गुंजाइश ही न होती कि एक-आध दिन या ४-५ घन्टे का वक़्फ़ा (अवधि) डालने से वह समय पर हो पाये। जब हम हाँपते-हाँपते प्रैस में पहुंचते तो छापेख़ाने का मालिक या मैनेजर बैठते ही मुस्कुराते हुए, हाथ जोड़कर कहता—'जगदीश भाई, आप अर्जेन्ट (Urgent) काम ही लाये होंगे? है न अर्जेन्ट? देखो भाई, इस बार मैं हाथ जोड़कर कहता हूं कि मुझे माफ़ करो।" मैं कहता—"माफ़ी तो भगवान् से माँगो, यह तो उसी का काम है और इस बार तो बहुत ही अर्जेन्ट (Urgent) है। बेचारा बहुत आवेदन-निवेदन करता परन्तु हम उसकी कहाँ मानते थे? मान भी कैसे सकते थे? वह कहता—"जगदीश भाई, अर्जेन्ट तो कभी-कभी होता है परन्तु आप तो हर बार यही कहते हो कि यह अर्जेन्ट है।" कई बार तो वे बिल्कुल ही अड़ जाते और हमारी ओर से अनुनय-विनय से भी काम न चलता। छापेख़ाने में अक्षर जोड़ने वाले (Compositor) भी हमारी ओर से मैनेजर को कहते—"आप इनका काम ले लीजिये, हम रात को देर तक कर देंगे," परन्तु वे मिट्टी का माधो बनकर बैठ जाते और 'हाँ' न करते। तब हमें भी रूप रचना पड़ता। जब यह कहने से बात न बनती कि यह तो सतयुग की स्थापना के लिए कार्य है, आदि-आदि···तब कई बार तो यह भी कहना पड़ता कि "प्रैस तो शिव बाबा की है यहाँ तो उसी का काम चलेगा। क्या यह शिव बाबा का नहीं है?" वह कहते "है तो सब-कुछ शिव बाबा का ही, हम भी उन्हीं के हैं।" इस प्रकार हुज्जत भी न चलती तो हम साफ़ बोल देते कि हम तो मशीन रोक देंगे। परस्पर प्रेम तो था ही। आख़िर वह समझ जाते कि सचमुच इन्हें इस काम की जल्दी है और बाद में फ़ुर्सत में कभी संस्था की प्रशंसा करते हुए कहते कि —**"आपके बाबा सचमुच कमाल हैं जो सारा ही काम वैरी अर्जेन्ट (Very Urgent) बताते हैं। बाबा** ने आप लोगों की लग्न इतनी तीव्र कर दी है कि इस संस्था के कार्यकर्त्ता न अपने भोजन का ख़्याल करते हैं न आराम का और हम लोग उन्हें कुछ खाने के लिए पेश करते हैं तो वे कहते हैं कि हमें बाहर का नहीं खाना। आप सब लोगों की लग्न देखकर और इसे शिव बाबा का ही कार्य समझकर हम और काम छोड़कर भी पहले इसे करते हैं·····"

\+ \+ \+

बाबा केवल छपाई के लिए ही जल्दी नहीं करते बल्कि उसे जल्दी भिजवाने के लिए भी कोई कोर-कसर न छोड़ते। हम हर बार जब स्टेशन पर पार्सल बुक करवाते, तब अपने सामने ही पहली गाड़ी में चढ़वाने पड़ते। बहुत बार स्टेशन सुपरिन्टेन्डेन्ट से

पार्सल के फ़ार्म पर "तुरन्त भेजो" (Send at once) लिखवाना पड़ता और कितने ही पार्सल तो स्टेशन पर पहली गाड़ी से जाने वाले फ़र्स्ट क्लास या एयर-कंडीशन्ड कोच में जाने वाले यात्रियों द्वारा भेजने पड़ते। ऐसा भी होता कि किसी भाई को एक दिशा में एक गाड़ी में सब पार्सल देने पड़ते और रास्ते में आने वाले सब सेवा-केन्द्रों पर तार कर दी जाती अथवा टेलीफ़ोन खड़का दिये जाते कि वे अमुक गाड़ी से अपना पार्सल ले लें। रात-दिन सेवा का कार्य चालू था।

उन दिनों रिवाज यह था कि किसी के घर में तो तब तार आती थी जब उनके किसी निकट सम्बन्धी का शरीर छूट गया होता परन्तु यहाँ तो प्रतिदिन दो-दो, तीन-तीन तार आते थे। देहली में कमला नगर-स्थित सेवा केन्द्र, जहाँ से यह कार्य होता है, वहाँ ही पहले दीदी जी भी रहा करती थीं। उस सेवा केन्द्र के नीचे वाली मंज़िल पर मकान मालिक रहता है। वह रात्रि को नीचे का द्वार बन्द कर दिया करते थे। अतः प्रायः हर रात्रि को तार वाला नीचे से आकर आवाज़ देता—"तार वाला। ब्रह्माकुमारी जी ! तार ले लो।" आसपास के लोग यह आवाज़ें सुनकर आश्चर्यचकित होते कि यहाँ रोज़ ही तार आते हैं ! यह है तो धार्मिक संस्था, धर्म के कार्य में रोज़ तार की क्या आवश्यकता !! तार में या तो यह लिखा होता कि तुरन्त साहित्य भेजो या अमुक ब्रह्माकुमारी को अमुक सेवा केन्द्र पर भेजो। पड़ोसी भी रोज़ देखते कि अभी-अभी एक ताँगे में कुछ ब्रह्माकुमारी बहनें सेवा-केन्द्र पर आकर अपना सामान उतार रही हैं और पास में ही खड़े दूसरे टाँगे में पहले ही से कुछ दूसरी ब्रह्मा-कुमारियों का सामान लादा जा रहा है। अवश्य ही उनके मन में प्रश्न उठते होंगे कि यह कैसी विचित्र संस्था है ! मानो कहीं लड़ाई हो रही है, कुछ फ़ौजी भेजे जा रहे हैं और कुछ आ रहे हैं। और वास्तव में बात थी भी ऐसी ही। माया अथवा विकारों से युद्ध के लिये ही तो ईश्वरीय सैना द्वारा यह सब-कुछ हो रहा था।

### जितनी सेवा की तीव्र गति की पराकाष्ठा उतनी ही प्रेम की पराकाष्ठा

एक बार की बात है कि बाबा यहाँ देहली में राजोरी गार्डन में ठहरे हुए थे। शिव रात्रि में केवल ४ या ५ दिन रहते थे। प्रातः मुरली में बाबा ने 'मनुष्य मत' और 'ईश्वरीय मत' में महान् अन्तर की बात कही थी। क्लास के बाद बाबा बोले—"बच्चे, मनुष्य मत और ईश्वरीय मत पर एक पुस्तक लिख-कर, उसे झटपट छपवा कर सब केन्द्रों पर भेज दो। बोलो बच्चे, कब तक छप जायेगी ?"

मैंने कहा—"बाबा, कोशिश करूँगा कि एक हफ़्ते में तैयार हो जाये।"

इस पर बाबा ने कहा—"कोशिश नहीं और एक हफ़्ता भी नहीं; यह तो शिवरात्रि पर सबको बाँटनी होगी।"

मैंने कहा—"बाबा, किताब कितने पृष्ठ की हो ?"

बाबा बोले—"यह आप जानो। परन्तु उसमें मनुष्य मत और ईश्वरीय मत की सभी मुख्य बातों का अन्तर आ जाना चाहिए।"

मैं सोचने लगा कि चार-पाँच ही तो दिन रहते हैं। किताब को पहले हिन्दी में लिखा जाए, फिर उसे पढ़कर कुछ सुधार किया जाये, फिर उसका अंग्रेज़ी में अनुवाद किया जाये। और, उसमें कोई महान् अन्तर का प्वाइन्ट भी न छूटे और उसमें मनुष्य मत तथा ईश्वरीय मत पर लिखे गये वाक्य भी लगभग बराबर-बराबर आयें ताकि किताब के आमने-सामने के पृष्ठ ठीक लगें—यह सब हो और फिर प्रैस वाला भी छाप दे ; और फिर सबको समय पर पहुंच भी जाये ! परन्तु मन में यह भी भाव था कि बाबा ने कहा है तो होगा ज़रूर। "हिम्मते मरदाँ मद्दे ख़ुदा।"

मैंने रात-दिन लगाकर हिन्दी में मूल लेख तैयार किया और प्रैस में ही बैठकर वहाँ मैं अंग्रेज़ी अनु-वाद कर-कर के देता गया। भाई विश्व रत्न जी भी दो-तीन रात लगातार वहीं छापेखाने में प्रूफ़ आदि देखते रहे। आराम और भोजन को छोड़कर हमारी और समय की दौड़ लग गई। ६४ पेज की हिन्दी और ६४ पेज की अंग्रेज़ी की बड़े पृष्ठ वाली दो किताबें छपकर तैयार हो गईं। बाबा की सहायता से सारा काम ठीक हो गया।

परन्तु कुछ फ़ाका मस्ती से, दिनचर्या में हेर-फेर से, आराम न करने से और प्रैस में ठंड लग जाने से

काम समाप्त होने के दूसरे दिन मुझे लगभग १०४° बुखार हो गया। ईश्वरीय कार्य के बल के कारण फिर भी कुछ महसूस नहीं हुआ ! एक मित्र डाक्टर के कहने के अनुसार मैं सेवा-केन्द्र में थोड़ा आराम करने के विचार से लेट गया। मैं वहाँ अकेला ही था क्योंकि अन्य सभी बहन-भाई राजोरी गार्डन सेवा केन्द्र पर बाबा के पास ठहरे हुए थे। अचानक से सेवा-केन्द्र के द्वार की घन्टी बजी। उठकर दरवाज़ा खोला तो यह देखकर आश्चर्य की कोई हद न रही कि भाई विश्व किशोर के साथ बाबा स्वयं आये हैं ! मालूम नहीं, बाबा को किस प्रकार से सूचना मिली थी। बाबा ने कितना प्यार किया होगा और कैसे स्नेह-युक्त शब्द बोले होंगे, वह आप समझ सकते हैं। बाबा को मिल कर मेरी सारी थकान तत्क्षण ही दूर हो गई। मैंने सोचा, बाबा ने जितनी जल्दी छपाने के लिए की थी, उससे भी ज़्यादा जल्दी आकर इस बच्चे को प्यार देने के लिए की। छपाई के लिए तो बाबा ने चार दिन दिये थे और प्यार देने में तो बाबा ने एक दिन का वक़्फ़ा भी नहीं डाला।

### साहित्य-कार्य में बाबा की मार्ग-प्रदर्शना

साहित्य के सम्बन्ध में बाबा से मिलने और बात करने का प्रायः जो मौका मिलता उससे ज्ञान को और अधिक समझने में मदद मिलती और बाबा के विचारों को नज़दीक से समझ पाते। जब हम लिख-कर बाबा के पास ले जाते तो उसे देखकर बाबा समय-समय पर कई प्रकार के निर्देश-आदेश देते और उस लेख में परिवर्तन या परिवर्धन करते। मैंने देखा कि जहाँ कहीं हिन्दी में 'परमपिता परमात्मा' शब्दों का और अंग्रेजी में 'सुप्रीम फ़ादर' (Supreme Father) शब्दों का प्रयोग होता वहाँ बाबा क्रमशः 'परमप्रिय' और 'Most Beloved' शब्द जोड़ देते। अपने लाल अक्षरों में जब बाबा ये शब्द जोड़ रहे होते, मन में प्रेम की एक लहर दौड़ जाती। यदि मैं बाबा के सामने न बैठकर बाबा के बाजू की ओर बैठा होता तो बाबा लिखित पृष्ठ में ये शब्द जोड़कर मेरी ओर मुड़कर मुस्कुराहट से मुझे मीठी दृष्टि देते जैसे लिखने के साथ-साथ वे प्रैक्टीकल में भी परमप्रिय का पार्ट बजा रहे हों। उस समय यह आभास होता कि, देखो न, बाबा तो सचमुच परमप्रिय हैं ही। एक बार तो मैंने यह देखा कि सारे लेख में जितनी बार भी 'परमपिता' शब्द आया था, बाबा ने उन सब जगहों पर उनके साथ 'परमप्रिय' शब्द लिख दिया। तब मैंने कहा—"बाबा, अगर एक-दो जगह पर यह परमप्रिय शब्द आ जाये तो क्या बार-बार इसका सब जगह प्रयोग करना ज़रूरी है ? क्या यह पुनरावृत्ति (repetition) तो नहीं लगेगी ?" तब बाबा बोले—"बच्चे, यह तो मीठा शब्द है न ! इसे बार-बार लिखने में किसी को क्या एतराज़ है ? अच्छा, यदि कभी 'परमप्रिय' न लिखो तो 'ज्ञान के सागर' या अन्य कुछ लिख दिया करो !"

इसी प्रकार जहाँ कहीं सतयुग या कलियुग का वर्णन आता तो बाबा कहते—बच्चे, गोल्डन एज (Golden Age) के साथ लिखो – १००% राइटियस, (righteous), रिलिजियस (religious), सॉलवेन्ट (solvent), और इसी तरह कलियुग के साथ इसका विपरीतार्थ लिये हुए शब्द ले लिया करो। बाबा के कहने का भाव यह था कि "१००%" शब्द और 'सालवेन्ट' (solvent) शब्द (कलियुग के लिए इन-सालवेन्ट) भी लिखा करो। हम तो प्रायः 'रिली-जियस' और 'राइटियस' लिख देना ही काफ़ी समझते थे परन्तु बाबा "१००%" और "सालवेन्ट" शब्द पर भी ज़ोर दिया करते थे। बाबा सतयुग और कलियुग के साथ इतने विशेषण प्रयोग करते कि वाक्य बहुत लम्बा हो जाता और विशेषण बहुत अधिक दिखाई देते। हाँ, उन द्वारा इन युगों के बारे में हमारा मन्तव्य तो स्पष्ट हो जाता। मैंने एक बार बाबा से कहा—"बाबा, आजकल लोग छोटे-छोटे वाक्य पसन्द करते हैं। ऐसे बड़े वाक्यों को समझना लोगों के लिए कठिन हो जाता है। तब बाबा बोले—"पढ़ने वालों को इतनी समझ नहीं है क्या ?" तो मैंने कहा—"बाबा, आप ही तो कहते हैं कि माया ने समझ ख़त्म कर दी है। बाबा बोले—"अब तो बाबा आकर समझ दे रहा है न। बच्चे, इससे तो उनकी बुद्धि का ताला ज़ोर से खुलेगा।"

### चित्रों के बारे में बाबा के महत्वपूर्ण निर्देश

चित्र बनवाने के सिलसिले में भी बाबा से कई बार बात होती। जब श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का चित्र बन रहा था तब बाबा बोले कि इसके ऊपर

त्रिमूर्ति का चित्र भी होना चाहिए। त्रिमूर्ति के बिना यह चित्र किस काम का ? त्रिमूर्ति के बिना तो यह चित्र भक्ति मार्ग का हो जायेगा; तब उसे छाप कर हम क्या करेंगे ? त्रिमूर्ति का चित्र होने से ही हम समझा सकते हैं कि इनको ऐसा पद देने वाला अथवा राज्य-भाग्य देने वाला कौन है ? वर्ना लोग तो इन्हें ही भगवान और भगवती मानते हैं। उन्हें यह थोड़े ही मालूम है कि ये तो 'रचना' हैं और इनका 'रचयिता' तो शिव बाबा है। हमारा उद्देश्य तो उन्हीं का परिचय देना है क्योंकि ऐसी ऊंची पढ़ाई पढ़ाकर नर से नारायण बनाने वाले तो वे ही हैं। श्री लक्ष्मी और श्री नारायण तो हमारी पढ़ाई का लक्ष्य हैं। इस लक्ष्य को स्वयं तो कोई प्राप्त कर नहीं सकता और न ही संसार को यह पता है कि इनको ऐसी ऊँची प्राप्ति कराने वाला कौन है। अतः इनको आगे रखकर हमें इशारा तो शिव बाबा ही की ओर ही करना है क्योंकि ऊँचे से ऊँचा भगवन्त तो एक वही है। जब बाबा यह बात बता रहे थे तो समीप बैठे हुए किसी ने कहा—"बाबा, अगर केवल शिव बाबा ही का चित्र दे दें तो कैसा रहेगा ?"

इस पर बाबा ने कहा—"शिव बाबा तो निराकार हैं, वह साकार में आये बिना थोड़े ही पढ़ाई पढ़ा सकता है ? इसलिए जिस साकार तन में आकर वह पढ़ाई पढ़ाता है, उसका भी तो चित्र देना ही पड़ेगा वर्ना लोग क्या समझेंगे कि यह गोल-गोल निराकार बाबा कैसे पढ़ाता है ? ज्ञान देने के लिए तो मुख रूपी इन्द्रिय चाहिए न और 'ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले और ब्राह्मण सो देवता बने और देवताओं में शिरोमणी श्री नारायण हुए'—यह तो सहज और स्पष्ट व्याख्या है। हाँ, बच्चे, अगर स्थानाभाव के कारण मजबूरी हो तब त्रिमूर्ति की बजाय शिव बाबा का चित्र डाल दो तो और बात है।

जब अकेले शिव बाबा का अलग से चित्र छपने की बात हुई, तब बाबा बोले—"कर्त्तव्य (occupation) के चित्र के बिना अकेले नाम और रूप के इस चित्र से लोग क्या समझेंगे ? यों तो मन्दिरों में शिव पिंडी की पूजा होती है और लोग उसे "शिव भोलानाथ" भी कहते हैं ; परन्तु उससे वे कुछ समझते थोड़े ही हैं कि ये बाबा हमारे भंडारे कैसे भरपूर करता है और काल-कंटक कैसे दूर करता है ? बच्चे, गोले-सहित त्रिमूर्ति का चित्र अर्थ-सहित है, युक्ति-युक्त है और उसमें सारा ज्ञान समाया हुआ है परन्तु, हाँ, यदि शिव बाबा के चित्र बनाने से ईश्वरीय सेवा में बच्चों के लिए सहज होता है तो भले ही बनाओ। परन्तु इसके साथ शिव बाबा के कर्त्तव्य का परिचय ज़रूर देना।

ऐसी ही बात बाबा श्रीकृष्ण के चित्र के बारे में कहते। बाबा समझाते कि उसमें अनेक जन्मों की कहानी दिये बिना वह भक्ति मार्ग का चित्र हो जाता है। परन्तु यदि ऐसे ही छापना है तो फिर ज़बानी इसकी कहानी बतानी ज़रूर है। सभी को बताना है कि यह सतयुग के प्रथम राजकुमार थे और अब यह फिर निकट भविष्य में आने वाले हैं।

### ज्ञान की गरिमा और महत्ता

बाबा न केवल ज्ञान के अनमोल महावाक्य हमें सुनाते और न केवल जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु खूब दिल खोलकर कोई-न-कोई नई पुस्तिका अथवा चित्र छपवाते बल्कि बाबा की एक बहुत बड़ी खूबी यह भी थी कि वे साक्षी होकर हम बच्चों को उन महावाक्यों अथवा चित्रों का महत्त्व प्रैक्टीकल रीति से समझाते भी। जब श्री-लक्ष्मी श्री नारायण का चित्र अभी छपा नहीं था बल्कि उसका केवल डिज़ाईन ही बनकर बाबा के पास आया था तब भी बाबा से जो कोई विशेष व्यक्ति मिलने आता, तब बाबा हाथ में प्वाइन्टर (Pointer) लेकर बहुत ही रुचि से हम सभी के सामने उस चित्र की व्याख्या देते। इसी प्रकार पहले-पहल मधुबन में जब चित्रकार त्रिमूर्ति और सृष्टि-चक्र का चित्र बना रहे थे तब भी बाबा ज्ञान की एक बहुत बड़ी उछल और उमंग से, उसको अनमोल मानने की भावना में स्थित होकर और स्पष्टतः ज्ञानमय और ज्ञान स्वरूप रूप से, प्रेम-पूर्वक उस चित्र को समझाते। ऐसे ही देहली में जब शिव बाबा का चित्र बन रहा था तब भी बाबा शिव बाबा के बारे में रोज़-रोज़ ऐसा प्यार-भरा स्पष्टीकरण देते कि आखिर सुनने वाले की बुद्धि के कपाट खुल जाते और सुनने वाले को ऐसा आभास होता कि बस, उसे यह चित्र तो अपने पास रखना ही चाहिए। तब उसका स्वतः ही यह प्रश्न होता—

"क्या यह चित्र हमें मिल सकता है ? यह तो बहुत अच्छा है !" अगर उसे यह कहा जाता कि अभी यह चित्र छपा नहीं है, तब वह यह पूछता कि कब तक छप जाएगा ? उसे यह बताने पर कि आठ-दस दिन में छप जायेगा, वह कहता —"१० चित्र मेरे लिए ज़रूर रख लेना।" जाती बार वह फिर ताकीद कर जाता कि—"देखना, कहीं चित्र खत्म न हो जायें" और साथ-साथ वह यह भी पूछ लेता कि "क्या ऐसी व्याख्या भी छपी हुई है ?···।" स्पष्ट है कि यह सब बाबा की ज्ञानमय स्थिति, रुचि, उमंग और प्यार तथा ज्ञान के महत्त्व के गहरे एहसास ही का मधुर फल या प्रभाव होता था।

ऐसे ही इलाहाबाद में कुम्भ का मेला था। बाबा ने कहा कि "एक फ़ोल्डर छपवा लो जिसमें बताया गया हो कि पतित-पावनी जल की गंगा नहीं है बल्कि परमपिता परमात्मा शिव और उससे निकली ज्ञान-गंगा है।" बाबा ने लिखा—"बच्चे, यहफ़ोल्डर होना तो लाखों की संख्या में चाहिए, परन्तु हाल-फ़िलहाल ५०,०००-६०,००० छपवा ही लो। दो दिन के अन्दर फोल्डर छप कर तैयार हो गया और तुरन्त ही कई जगह भेज दिया गया। इधर बाबा ने अनेक सेवा-केन्द्रों पर काग़ज़ी घोड़े दौड़ाये जो यह संदेश लेकर पहुंचे कि इसमें खूब ईश्वरीय सेवा की जाये और उस द्वारा होने वाली सर्विस के बारे में बाबा ने ऐसी प्रेरणा भरी कि सभी सोचते हम भी निमित्त बन कर किसी-न-किसी कुम्भकरण को जगायें। बाबा के शब्द ही ऐसे होते कि बुड्ढे भी उसे सुनकर ईश्वरीय सेवा के लिए जवान हो जाते और म्याऊँ-म्याऊँ करने वाले मिचनू भी हाथ में शिव बाबा का झंडा मज़बूती से थाम लेते।

उन दिनों अभी-अभी टेप मशीन का प्रयोग होना शुरू हुआ था तो बाबा साक्षी होकर हरेक को यह राय देते कि आपस में मिलकर एक टेप मशीन ले लो; टेप पर ही मुरली सुनने में बहुत मज़ा आएगा। बाबा की बातों से ही ऐसा लगता कि बाबा अपने मुख से निकली आवाज़ को अपनी आवाज़ नहीं समझते थे बल्कि वे उन्हें शिव बाबा के ही महावाक्य मानते थे। इसलिए बाबा के सामने जो आता, बाबा उससे पूछते—"बच्ची, आज बाबा की मुरली सुनी ? जाओ, पहले टेप सुनो, फिर बाबा से मिलना। बच्ची, आज बाबा ने बहुत नई-नई प्वाइन्ट्स सुनाई हैं, बहुत खज़ाना दिया है।"

कई बार ऐसा होता कि बाबा कहते—"बच्चे, सुना आज बाबा ने क्या कहा ? कितनी गुह्य बातें बताईं। यह बाप और बच्चों का सेमीनार सुना ? यह बातें तो और कोई बताता नहीं है। हम और तुम पहले इन बातों को जानते थोड़े ही थे। हम और तुम तो सभी भुट्टू थे; वह बाप ही आकर यह बुद्धि दे रहा है।" इस प्रकार वह कैसा अनोखा समाँ होता कि अभी एक क्षण पहले हम शिव बाबा के महावचन सुन रहे होते और दूसरे ही क्षण उसी मुख से ब्रह्मा बाबा द्वारा एक वत्स अथवा विद्यार्थी के रूप में शिव बाबा के महावाक्यों की महिमा सुन रहे होते !

○ ○ ○

**खेलते समय भी ज्ञान के बोल**

ज्ञान-सागर शिव बाबा के संग में ब्रह्मा बाबा भी ज्ञान-स्वरूप ही हो गये थे। ज्ञान अब उनसे कोई अलग नहीं था बल्कि वह उनका स्वभाव, स्वरूप अथवा नेचर (Nature) बन गया था। ज्ञान-रहित कोई शब्द बाबा के मुख से निकलता ही नहीं था। एक दिन बाबा मेरे साथ बैडमिन्टन (Badminton) खेल रहे थे। आस-पास खड़े कुछ बहन-भाई देख रहे थे। जब बाबा जीत जाते तो कहते —"इस तन में डबल सोल (दो आत्माएँ – ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा) है न, इसलिए यह जीत जाता है। शिव बाबा जिसके साथ है, विजय तो उसकी होगी ही।" (इससे मुझे चेतावनी मिलती कि मुझे भी शिव बाबा को याद करते हुए और उसे अपना साथी बनाते हुए खेल खेलना चाहिए।)जब वे हार जाते तो कहते—"बाबा तो बच्चों को सदा आगे ही रखता है। कहते हैं न लव और कुश ने राम पर विजय पाई। बच्चे कोशिश करें तो ज्ञान में भी बाबा से तीखे जा सकते हैं।"

○ ○ ○

मेरी एक आदत बन गई थी कि जब शटल कॉक (बैडमिन्टन की 'चिड़िया') पर मेरा रैकेट (Racket) न लगता तो वह 'चिड़िया' पृथ्वी पर गिरकर गुल खाती और उसके गुल होने (उछलने) पर मैं उसे रैकेट मारकर बाबा की ओर भेज देता ताकि हार न जाऊँ। खड़े हुए लोग हँसकर कहते—"बाबा, देखो यह क्या करता है !" इस पर बाबा उत्तर देते—

"बच्ची, गिरते हुओं को उठाना ही तो हमारी सेवा है। बच्चे ने उठा दिया तो क्या बुरा किया ?" इन सभी बातों से प्रतीत होता कि जैसे किसी कवि ने कहा है—"घट में जल है, जल में घट है, बाहर-भीतर पानी" ऐसे ही बाबा और ज्ञान ओत-प्रोत अथवा अभिन्न थे।

### धारणा-स्वरूप

जैसे मिश्री मिठास-स्वरूप होती है, बाबा भी वैसे ही ज्ञान-स्वरूप तो थे ही, साथ-साथ वह धारणा का भी स्वरूप थे। वे धारणा की जो बातें हमें समझाते थे, उनका अपना जीवन उनकी चेतन झाँकी था। इसलिए यद्यपि कभी-कभी बाबा माडल बनवाने के लिये कहते भी तथा कई बार वे यह भी बाबा कहते—"बच्चे, मॉडल क्या करोगे ? स्वयं ही दर्शनीय मूर्त, चेतन मॉडल बनो।" कभी-कभी ऐसी उग्र परिस्थिति होती, जनता का ऐसा कड़ा विरोध होता, उपद्रवी लोग ऐसा उपद्रव करते कि किसी-किसी के मन में यह प्रश्न उठ जाता कि—"अब क्या होगा ?" जिनके साथ ऐसी घटनायें बीततीं, उनके चेहरे पर कभी ईश्वरीय आनन्द की रेखायें फीकी भी पड़ जातीं और उसकी बजाय सोच-विचार के चिह्न नेत्रों की आकृति से प्रदर्शित होते। परन्तु वे जब बाबा को उसका लम्बा-चौड़ा वृत्तान्त लिख भेजते ताकि स्थिति का पूरा चित्रण बाबा के सन्मुख हो आये तो बाबा लिखते—"बच्चे, नथिंग न्यू (Nothing New)—यह कोई नई बात नहीं है। यह तो असंख्य बार पुनरावृत्त हो चुकी है।" इस प्रकार परिस्थिति की उग्रता उन्हें चिन्तित अथवा व्यथित नहीं करती बल्कि वे सदा फिक्र से फ़ारिग रहते।

○ ○ ○

### याद रूपी यात्रा की रफ़्तार

इतना व्यस्त रहने पर भी बाबा के मन की तार शिव बाबा से जुटी रहती। बाबा कहते—"बच्चे, मैं भी तो पुरुषार्थी हूँ। शिव बाबा हर समय थोड़े ही मेरे तन में रहते हैं ? हर समय थोड़े ही शिव बैल पर सवारी करते होंगे ? बच्चे, बाबा भी तो अपना पुरुषार्थ करता है, वरना इसका पद कैसे उच्च बनेगा ? हाँ, शिव बाबा इसका तन किराये पर लेता है, गोया वह 'सेठ' इसका लेंड लार्ड (मकान-मालिक) है, इसलिये उसका भी अजूरा-इवजाना (Compensation) इसे मिल जाता है, परन्तु हरेक को अपना पुरुषार्थ तो करना ही है। यह ठीक है कि यह भी बाबा है, वह भी बाबा है और यह (ब्रह्मा) सारा दिन "बाबा···बाबा···" करता रहता है, इसलिये इसके लिये थोड़ा सहज है और उस बाबा का हो जाने से यह 'फ़िक्र से फ़ारिग़' है तो बुद्धि और कहीं जाती नहीं है, बाबा ही में जाती है। आप बच्चों की बुद्धि कई लफ़रों में लटकी रहती है तो आपको कुछ मुश्किल हो सकता है; परन्तु वास्तव में तो आप बच्चों को अधिक सहज होना चाहिये क्योंकि आप तो फ़िक्र से फ़ारिग़ हैं, अपनी ज़िम्मेदारी तो अब आपने बाबा को दे दी है न ? हाँ, बाबा को सभी बच्चों का 'ओना' (ख़याल) रहता है; बाबा का सोच (विचार) चलता है कि बच्चों की आगे-आगे उन्नति कैसे हो और नयों-नयों को यह ईश्वरीय सन्देश कैसे मिले। इसलिए मुश्किल तो बाबा को होनी चाहिये।

परन्तु हम प्रेक्टीकल में देखते कि बाबा से जो भी बच्चे मिलते, उन्हें आगे बढ़ाने के लिये बाबा निराकार बाबा का माध्यम बन जाते और स्वयं भी योगारूढ़, स्थित-प्रज्ञ, आत्मनिष्ठ, उच्च भूमिका में रहते, तभी तो उनके पास बैठकर सभी शान्ति, आत्म का शरीर से न्यारापन, प्रेम, कल्याण-कामना इत्यादि का अनुभव कर जाते। ऐसे थे हमारे और विश्व के बाबा ! —जगदीश

—: ० :—

# 'सिक्कीलधे' बाप 'सिक्कीलधे बच्चों से न्यारी बातें और बातों की गहरी परतें

जिन ब्रह्माकुमारियों और ब्रह्माकुमारों को बाबा के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वे इस बात के अनुभवी हैं कि बाबा का हरेक वाक्य अथवा हरेक कार्य किस प्रकार ज्ञान के गहन रहस्यों से युक्त होता था। बहुत बार तो ऊन्हें समझना भी कठिन हो जाता था क्योंकि एक अवसर पर बाबा ने जो बात कही होती, वह दूसरे अवसर पर कही बात से कई बार नहीं मिलती मालूम होती थी परन्तु यदि ज्ञान के तीसरे नेत्र से देखा जाये, तो वे दोनों बातें अपने-अपने स्थान पर और अपने-अपने अवसर के अनुसार ठीक होती थीं। उदाहरण के तौर पर जब-कभी बाबा ने देहली में या अन्य किसी नगर के सेवा केन्द्र पर जाना होता तो मधुबन से प्रस्थान करने से कई दिन पहले ही बाबा पत्र द्वारा यह निर्देश भेज देते कि बाबा का स्वागत करने के लिये कोई भीड़-भड़क्का नहीं होना चाहिए

### बच्चों को तकलीफ़ मत देना

बाबा लिखते—"सिक्कीलदे बच्चो प्रति, देखो, बाबा अति साधारण है। बाबा का ज्ञान गुप्त है, बाबा का आना भी गुप्त है और बाबा का सारा पार्ट भी गुप्त है तो बच्चों का सारा पार्ट भी गुप्त है। इसलिए बाबा कहते हैं कि देहली में बाबा का आना भी गुप्त ही होगा। स्टेशन पर कोई भीड़-भड़क्का न होना चाहिए क्योंकि बेहद सुख देने वाले बाप के कारण किसी बच्चे को कष्ट न हो। देखो, यह बाप तो सबके कष्ट मिटाने आया है। यह बाप निराला है तो इसका बच्चों से मिलन भी निराला होना है। इसलिए बाबा कहते हैं कि फ़ालतू ख़र्चा करने की ज़रूरत नहीं। बच्चे आराम से सेन्टर पर बैठे रहें; बाबा वहाँ ही सबको आकर मिलेंगे। बच्चों को कोई भी तकलीफ़ देनी न है। यह कोई साधु-सन्त या गुरु-गोसाईं थोड़े ही है, यह तो आत्माओं का बाप है और बाप तो बच्चों का सेवाधारी होता है। अतः बाबा तो स्वयं ही सब से आ मिलेंगे…"

अब देख लीजिये कि बाबा का ऐसा लिखना ज्ञान-युक्त और युक्तियुक्त ही तो है ना। इसमें कितनी नम्रता और कितना सेवा-भाव समाया हुआ है ! **इसमें उस प्रियवर बाप का कितना प्यार भरा हुआ है जो कि बच्चों को ज़रा भी तकलीफ़ देना नहीं चाहता।** इस में कितनी नम्रता और सादगी छिपी हुई है। लेकिन जब स्टेशन पर गाड़ी पहुँचती और विभिन्न सेवा-केन्द्रों से ब्रह्मा-वत्स स्टेशन पर आये हुए होते तब बाबा हरेक बच्चे को देखकर खुश भी बहुत होते। वे एक-एक को प्रेम-भरी रूहानी दृष्टि देते और एक-एक से ऐसी भाव-भीनी मुलाकात करते कि सबके दिल की कली खिल जाती। तब वे ज़रा भी न कहते कि चिट्ठी लिखने के बाद भी आप लोग यहाँ किस लिये आये, क्योंकि उस पिता को ये बच्चे इतने प्यारे लगते कि उनको देखकर उसके मन में प्रेम की मौजें उठने लगतीं और वह प्रेम ही तो उन सबको खींच कर ले आता कि न तो आने वाले रह पाते, न बाबा ही उनको रोक पाते।

"बाबा गुप्त हैं, बाबा का ज्ञान भी गुप्त है, बाबा से प्राप्त होने वाला ख़ुशी का ख़ज़ाना भी गुप्त है" —बाबा के ये शब्द भी कितनी सेवा करते ! बच्चों को ख़ुशी होती कि हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमने उस बाबा को पहचाना है। परन्तु उस गुप्त बाबा की रंगत प्लेटफ़ार्म पर देखने जैसी होती, जैसे हंसों के झुण्ड में परमहंस खड़ा हो। उतरने वाले यात्री उस दिन तेज़ रफ़्तार से अपने सामान को नहीं उठा रहे होते क्योंकि सबका ध्यान बरबस ही स्वतः ही बाबा की ओर खिंच जाता। यात्रियों को जाना तो पुल की ओर होता परन्तु वे मुड़-मुड़ कर बाबा की ओर देख रहे होते मानो उनके मन में यह इच्छा हो कि उन्हें भी बाबा अपने पास बुला लें। ऐसे ही जब बाबा उस नगर से प्रस्थान करने के लिए स्टेशन पर आते तो ब्रह्मा-वत्सों के झुण्ड में अन्य अनेक यात्री भी अपनी सीट छोड़कर वहीं आ खड़े होते और कान लगाकर सुनने की कोशिश करते कि बाबा इन्हें क्या

कह रहे हैं। बुलन्द कद, नूरानी पेशानी, मुस्कुराता हुआ चेहरा, एक फ़रिश्ता-सीरत बुज़ुर्ग गाड़ी के कम्पार्टमेन्ट के दरवाज़े में खड़े हुए दर्शनीय मूर्त दिखाई देते। गाड़ी में अपनी सीट ढूँढना भूल कर बहुत व्यक्ति कुछ टाईम वहीं रुक जाते। कभी-कभी तो ऐसा भी होता कि गार्ड झंडी दिखाता हुआ इंजन की तरफ़ देखने के बजाय बाबा की ओर ही देख रहा होता और जब बाबा अपने वरद हस्तों से प्रसाद, जिसे 'टोली' कहा जाता है, बाँटने लगते तो कितने ही अपरिचित लोग भी 'टोली' लेने के लिए आगे बढ़ आते। अवश्य ही एक दिन ऐसा आयेगा जब उस समय का चित्र साक्षात्कार के रूप में फिर से आएगा और वे लोग पहचानेंगे कि उन्होंने किससे वह प्यार-भरी 'टोली' ली थी।

**शौक फूलों का – परन्तु कौनसे फूल ?**

(२) इसी प्रकार एक ओर तो बाबा कहते कि—"देखो, बाबा के लिये कोई फूल मालाएँ इत्यादी मत लाना। बाबा को तो चेतन, मनुष्य रूपी फूल चाहिएँ। जो बच्चे अपवित्र हैं, वे ही मानों काँटे हैं, और जो ईश्वरीय ज्ञान को धारण करते हैं और पवित्र बनते हैं, वे ही खुश्बूदार फूल हैं। बाबा तो ऐसे ही बच्चों की 'विजय माला' बनाने आया है। बाबा मुरझाने वाले फूलों को पसन्द नहीं करता। ज्ञान और योग सीखने वाली आत्मा ही सदा बहार फूल है। इनमें ही कोई चमेली है, कोई गुलाब, कोई मोतिया है कोई रतनजोत, कोई नरगिस है और कोई रात की रानी। बस बाबा को तो यही फुलवाड़ी अच्छी लगती है, इसी फुलवाड़ी का बाबा माली है क्योंकि इन्हीं को तैयार करके बाबा शिव बाबा के सामने पेश करता है···"

परन्तु दूसरी ओर बाबा को वसे भी फूलों और फुलवारी का शौक था। मधुबन में प्रतिदिन कोई वत्स अथवा माली बाबा के पास कुछ फूल ले आया करता था। बाबा इन्हें बहुत पसन्द करत थे और उनमें से अनेक बच्चों को फूल भेंट किया करते। हर वत्स को फूल देते हुए वे कहते—"देखो बच्चे, यह फूल कितना ख़ुश्बूदार है और कितना सुन्दर है ! तुम भी बाबा को इतने ही अच्छे लगते हो। बाबा तुम्हारे जैसे फूलों को ही सृष्टि रूपी वाटिका में उगान आया है। यह दुनिया जो काँटों का जँगल बन चुकी थी, अब इसे फूलों का बग़ीचा बनाना है···।" इस प्रकार बाबा फूल पर ख़र्च करके उसे व्यर्थ गँवाने के लिए मना भी करते परन्तु उसका प्रतीकार्थ लेकर उसे सेवा करने का साधन भी बनाते। हैं न बाबा की दोनों बातें कमाल की—इन में उच्च अर्थ भी है और सन्तुलन भी। इनमें सेवा भी है, सादगी भी, प्रेम भी और 'नेम' भी।

**फ़ायदा फोटो का ?**

(३) फिर कोई व्यक्ति यदि बाबा की फ़ोटो माँगता या फ़ोटो लेने लगता तो बाबा कहते—"बच्चे, मिट्टी के शरीर का फ़ोटो लेकर क्या करोगे ?—इसकी तो टूट-फूट हो जानी है। यह तो तमोगुणी शरीर है, गुलगुल शरीर तो सतयुग में होता है; तब तुम वहाँ तो फ़ोटो लोगे ही नहीं। इस कलियुगी शरीर की फ़ोटो लेने पर पैसा ख़र्च करने का क्या फ़ायदा ? बच्चे, यह जो इन आखों से देखने में आता है, वह सब-कुछ ख़त्म हो जाना है और शिव बाबा तो गुप्त है; उसका फ़ोटो तो यह कैमरा ले नहीं सकता। बोलो, फिर क्या करोगे ?" बाबा के चेहरे पर विचित्र प्रकार से प्रश्न चिह्न बना होता।

तब वह व्यक्ति कहता कि –"इसका फ़ोटो देख-कर शिव बाबा की याद आएगी क्योंकि इसमें ही तो शिव बाबा आता है।"

तब बाबा कहते –"सच बताओ, याद तो शिव बाबा को ही करोगे न ? बच्चे, इस (तन) को याद करने से तो कोई भी फ़ायदा नहीं होगा। अगर तुम वायदा करते हो कि शिव बाबा ही की याद आयेगी, तब मैं एलाऊ (allow) करता हूँ वरना फ़ोटो निकालना मना है···।"

फिर बाबा कहते – "अच्छा भाई, यह वायदा करता है तो इसको फ़ोटो ले लेने दो। बच्चे, याद रखना कि शिव बाबा को याद करने से ही विकर्म दग्ध होते हैं। इस तन का फ़ोटो तो कोई काम का नहीं, यह तो वर्थ नॉट ए पैनी था। बाबा ने ही इसको मालामाल बनाया है। हाँ, यह शिव बाबा का रथ ज़रूर है। क्या ऐसा समझ कर फ़ोटो लेते हो कि यह शिव बाबा का रथ है ?"

उधर से जवाब मिलता—"हाँ, बाबा, यही मान-कर तो फ़ोटो ले रहा हूँ।"

बाबा कहते –"अच्छा भला नहीं मानते हो तो ले लो। बच्चे में पूरा ज्ञान नहीं है। भक्त है भक्त।"

❑

# नैतिक शिक्षा बालकों और बालिकाओं की
# और
# दास्तान 'ओम् मण्डली' की

संयुक्त राष्ट्र संघ (U. N. O.) ने सन् १९७९ को बाल वर्ष के रूप में घोषित किया था। अत: इस वर्ष कहीं तो निबन्ध प्रतियोगिता के रूप में, कहीं कला प्रतियोगिता के रूप में और कहीं शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन के रूप में इस वर्ष को मनाया गया। कहीं-कहीं देशीय और प्रादेशिक सरकार के अनुदान से बच्चों को दोपहर में भोजन भी कराया जाता रहा। परन्तु समूचे विश्व को यह नहीं मालूम कि परमपिता परमात्मा शिव ने सतयुगी सृष्टि की स्थापना के कार्य के प्रारम्भ में ही बच्चों के लिए ऐसा योजना-बद्ध और ठोस कार्य शुरू किया जिसका उदाहरण अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। उन्होंने बालक-बालिकाओं और युवा जनों के लिए न केवल लौकिक और नैतिक शिक्षा की आदर्श व्यवस्था की बल्कि विश्व-क्रान्ति का झंडा उन्हीं के हाथ में दिया। हम देखते हैं कि आज जब पाठ्य संस्थाओं में अनुशासन-हीनता, नैतिक ह्रास, उपद्रव और विद्रोह ने ज़ोर पकड़ लिया है तभी लोग यह आवाज़ उठाने लगे हैं कि बच्चों की नैतिक शिक्षा के लिए कोई व्यवस्था होनी चाहिए परन्तु बाबा की दूर-दर्शिता देखिये कि उन्होंने पहले ही से बालकों और बालिकाओं के आध्यात्मिक विकास की ओर ध्यान खिचवाया। तत्कालीन भारत वर्ष के ऐसे इलाके में जहाँ प्राय: व्यापारी वर्ग और मध्यम श्रेणी तथा उससे निम्न स्तर के लोग बालिकाओं को शिक्षा या उच्च शिक्षा नहीं दिलाते थे और जहाँ रूढ़ि, पर्दे आदि ज़ंजीरों में लोग जकड़े हुए थे वहाँ ही बालकों और बालिकाओं के लिए एक नये ढंग से नई शिक्षा पद्धति का प्रचलन किया। वहाँ प्रात: उठने के समय से लेकर रात को सोने तक का ऐसा मनोवैज्ञानिक ढंग से कल्याण-प्रद प्रोग्राम बना हुआ था कि जिसे देखकर हरेक का मन करने लगा कि वह भी अपने बच्चों की शिक्षा के लिए उसी स्कूल में स्वीकृति लें।

बाबा ने उस विद्यालय का नाम भी बहुत अलौकिक रखा जिस नाम से सारे कल्प में आज तक शायद कोई स्कूल नहीं खोला गया। प्राय: धनाढ्य व्यक्ति अथवा दानशील संस्थायें किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम से ही किसी शिक्षा-संस्था का नामकरण किया करते हैं। परन्तु बाबा ने उसका नाम रखा – **'ओम निवास'** जो कि शुद्ध आध्यात्मिक सुगन्धि को लिए हुए हैं और जिससे किसी देहधारी के सम्बन्ध की तनिक भी भनक नहीं पड़ती। पाठशाला के पाठ्यक्रम की ऐसी उच्च योजना बनाई गई कि उसमें बच्चे स्वत: ही शारीरिक व्यायाम भी कर लेते, उनका अपने शरीर, वस्त्रों, निवास स्थान की स्वच्छता की ओर भी ध्यान खिचवाया जाता और वे कुछ गीत, भजन, गाना-बजाना आदि सांस्कृतिक एवं मनोरंजनकारी कार्यक्रमों में भी भाग लेते और विशेष बात यह है कि सारे पाठ्यक्रम को आध्यात्मिकता की ऐसी मीठी और सुरुचिकर पुट दी गई थी कि बच्चे उसमें सहर्ष हिस्सा लेते। इस विषय में कुछेक शिक्षा शास्त्रियों व अन्य बुद्धि-जीवी व्यक्तियों ने पक्षपात-रहित और स्वयं निरीक्षण करने के बाद जो सम्मतियाँ दी थीं और जो उन्होंने उन दिनों समाचार पत्रों में छपवाई थीं, वे पठनीय हैं। ये लोग, जिन्होंने ओम निवास में आकर वहाँ स्वयं सारी शिक्षा-पद्धति देखी, इस विद्यालय के किसी भी कार्यकर्ता से लौकिक रूप में सम्बन्धित नहीं थे और, विशेष बात यह है कि ये सम्मतियाँ उन्होंने उन दिनों में लिखित रूप में समाचार पत्रों इत्यादि के द्वारा लोगों के सामने रखीं जिन दिनों में कुछ विरोधी तत्व अपने घरेलू मामलों को लेकर उग्रतापूर्ण रीति से अपना विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। उनमें से एक, जिसका नाम प्रो० एम० एन० फेरवानी था, ने सम्मति निम्न शब्दों में व्यक्त की है—

**कन्याओं के लिए 'ओम निवास' एक आधुनिक गुरुकुल**

सन्त-स्वभाव भाई मूलचन्द के भतीजे दादा लेखराज खूबचन्द द्वारा दिल खोलकर दिये गये दान के फलस्वरूप ओम निवास की स्थापना हुई, उसका विकास हुआ और आज भी वह सुचारू रूप से चल रहा है। नव विद्यालय से पूर्व की ओर ओम निवास एक भव्य एवं विशाल भवन-समूह में स्थित है। ये एक दो-मंज़िला इमारत है जिसमें पहले, भूमि पर, १२ बहुत ही बड़े-बड़े कमरे हैं। उसके ऊपर, पहली मंज़िल पर, फिर १२ कमरे हैं और फिर दूसरी मंज़िल पर एक बहुत बड़ा हाल है जिसके साथ एक बरामदा है और कुछ कार्यकर्त्ताओं के लिए कमरे हैं। ऊपर के हाल और बरामदे में सामूहिक रूप से रहने और सोने की व्यवस्था है। पहली मंज़िल के कमरों में पढ़ाई के लिए कक्षायें लगती हैं और वहाँ भोजन के लिए तथा वस्त्र बदलने के लिए भी व्यवस्था है और, सबसे नीचे वाली मंज़िल में दोपहर के समय आराम करने का इन्तज़ाम है और, यदि कोई रोगी हो तो उसके आराम या शयन के लिए भी प्रबन्ध है।

यह शिक्षा-संस्था आधुनिक प्रकार का शिक्षिकाओं का एक आवास-स्थान भी है। इसमें ३४ कन्यायें और १३ बालक रहते भी हैं और पढ़ते भी हैं। इनमें से हर ७ बच्चों को एक मैट्रन (Matron) संभालती है। यहाँ ४० बच्चे शहर से भी प्रतिदिन पढ़ने आते हैं। यहाँ के सभी कार्यकर्त्ता शिक्षिकायें आदि अपना पूरा समय इसी कार्य में देते हैं और दो कार्यकर्त्ता ऐसे भी हैं जो सारा समय यहाँ नहीं रहते। शिक्षा देने के लिए एक के सिवा शेष सभी महिलाएँ हैं।

यहाँ हरेक चीज़ इतनी साफ़-सुथरी है और सभी कमरे इतने स्वच्छ और सुव्यवस्थित हैं और यहाँ का भोजन ऐसा स्वास्थ्यप्रद है और यहाँ के वातावरण में ऐसे ख़ुशी की लहर है कि मुझे निश्चय है कि इन बच्चों के माता-पिता यह सब देखकर बहुत खुश होंगे। इस नगर में ऐसा अच्छा कार्य देखकर हैदराबाद के वासियों को प्रसन्न और कृतज्ञ अनुभव करना चाहिए। यहाँ ८०% बच्चों को सब-कुछ इस शिक्षा-संस्था की ओर से निःशुल्क और निर्मूल्य ही मिलता है। सबको एक-जैसा भोजन मिलता है और एक-जैसे वस्त्र दिये जाते हैं यहाँ बाज़ार से न तो मिठाई मंगवाई जाती है न ही खाने की और कोई ऐसी-वैसी चीज़।

यहाँ सभी बच्चे प्रातः ४-३० बजे उठ जाते हैं और अपने दाँत साफ़ करते, नहाते और रोज़ ही अपने सफ़ेद फ्रॉक आदि वस्त्र बदलते हैं और सभी बहुत साफ़-सुथरे और प्रसन्न-चित्त दिखाई देते हैं। उसके पश्चात पौने छः बजे दूध आदि लेकर छः बजे वे सभी सतसंग के लिए इकट्ठे हो जाते हैं। जब दिन साफ़ होते हैं, तब यह सत्संग भवन के खुले आँगन में होता है। इसमें सबसे पहले हारमोनियम की सुर के साथ ओम की ध्वनि की जाती है। उसके पश्चात इस संस्था के आदर्श को व्यक्त करने वाले दो या तीन भजन अथवा ईश्वरीय महिमा के गीत गाये जाते हैं और एक बार फिर ओ३म् की ध्वनी होती है। फिर इन बच्चों में से या शिक्षिकाओं में से या व्यवस्थापकों में से कोई एक लकड़ी की चौकी पर बैठकर अपने ज्ञान-मंथन की कोई प्रेरणाप्रद बात सुनाते या ओ३म मंडली के बने हुए किसी नये गीत की व्याख्या करते हैं।

> ···ये कहते हैं कि "मैं कौन हूँ ?"—सबको स्वयं से यह प्रश्न पूछना चाहिए। पाप, सन्ताप, दुःख और अशान्ति इसलिए हैं कि मनुष्य को स्वयं का ज्ञान अथवा अनुभव नहीं है। ···यहाँ पर सृष्टि रूपी ड्रामा अथवा रचना का, स्वयं का और परमात्मा का ज्ञान देकर मनुष्य को स्वरूप-स्थित कराया जाता है जिससे उसको बेहद की शान्ति अनुभव होती है।
>
> सचमुच यहाँ बच्चों के चेहरों पर ख़ुशी झलकती है। उन्हें गीत बहुत पसन्द आते हैं, वे उनका अर्थ भी समझते हैं और वे सिन्धी, हिन्दी और अंग्रेज़ी उन आध्यात्मिक गीतों के माध्यम से लिखना, पढ़ना और बोलना सीखते हैं। **वे कहते हैं कि हम सभी ब्रह्मा विद्या के विद्यार्थी हैं और हम 'अल्लिफ़' अल्लाह के बारे में और 'आ' आत्मा के बारे में पढ़ाई पढ़ते हैं। उन्हें लौकिक विषय भी पढ़ाये जाते हैं। वे घर का हिसाब रखना सीखते हैं। उनकी कोई पाठ्य पुस्तकें नहीं हैं उनके पास केवल नोट बुक्स हैं जिसमें वे लिखते हैं और फिर लिखे हुए को पढ़ते हैं और पढ़ कर सीखते हैं।**

इन का यह सब प्रोग्राम, सत्संग अर्थात भजन, ईश्वरीय प्रेरणायुक्त महावाक्य, भजनों की व्याख्या आदि-आदि ७-३० बजे तक चलता है। फिर वे सभी

७-४५ बजे नाश्ता करते हैं और ८ से ८-१५ के बीच में अपनी-अपनी कक्षाओं में पहुँच जाते हैं जहाँ फिर भजनों, दार्शनिक एवं नैतिक उक्तियों इत्यादि द्वारा उनका शिक्षा-क्रम चालू हो जाता है। ११ बजे उन्हें अर्द्ध अवकाश (Recess) मिलता है और उन्हें फल खिलाया जाता है और ११-३० से १२-३० बजे तक फिर उनका स्कूल लगता है। १-०० बजे वे भोजन करते हैं और ४-०० बजे तक उन्हें छूट होती है जिसमें वे थोड़ा आराम भी करते हैं। फिर वे कुछ अपने तौर से भी पढ़ते हैं और खेलकूद भी करते हैं। इतने में ६-०० बज जाता है। तब फिर उन्हें जलपान-अल्पहार कराया जाता है और फिर ६-३० से ८-०० बजे तक सतसंग होता है। फिर ८-३० बजे वे रात्रि का भोजन करते और ९-३० बजे दूध पीकर आत्म स्वरूप में स्थित हो जाते हैं और फिर अगले दिन वैसी ही दिनचर्या की पुनरावृत्ति होती है। बीच-बीच में इस संस्था की अपनी बस बच्चों को किसी बाग़-बग़ीचे इत्यादि रम्य स्थानों पर ले जाती। यही बस प्रतिदिन स्कूल में छुट्टी होने पर छात्रालय में न रहने वाले विद्यार्थियों को उनके घर पहुँचा आती है। इस प्रकार आत्मानुभूति की यह शिक्षा और लौकिक विद्या के इस कार्यक्रम की २४ घन्टे की दिनचर्या चलती रहती है।"

### इन का लक्ष्य क्या है?

प्रो० फेरवानी लिखते हैं—**"इन छात्रों और छात्राओं के लिए स्वयं आत्मानुभूति करना और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरणा और ज्ञान देना उनके जीवन का चरम लक्ष्य है। वे यह मानते हैं कि भिन्न-भिन्न नाम और रूप वाले शरीरों में आत्मायें ही विराजमान हैं। उनके विचार में यह ज्ञान ही अमृत है जिसका सेवन हरेक को करना चाहिए और जो कि दूसरी भी दुःखी और अधिकारी आत्माओं को दिया जाना चाहिए ताकि इस संसार से दुःख समाप्त हो, जीवन में खुशी आये और इस धरा पर स्वर्ग का निर्माण हो।**

ये लोग कहते हैं कि इतिहास में अब जो दौर चल रहा है, ये धर्म-ग्लानि का समय है जबकि लोगों को धार्मिक ज्ञान के बारे में स्पष्ट बोध नहीं है और अब यह संसार एक महाविनाश की ओर बढ़ रहा है। यह ऐसा समय है जब परमात्मा का अवतरण अज्ञानता तथा असुरीयता रूपी अन्धकार से छुटकारा दिलाने के लिए होता है। उसी के अनुसार अब परमपिता परमात्मा ने वर्तमान दुःख के समय में इस संस्था की स्थापना की है जिसमें कि माताओं के रूप में ये आत्मायें सबको आत्म-साक्षात्कार अथवा आत्मानुभूति का ही अमृत पिलायेंगी और इस पर भी वे न तो स्वयं को पण्डितों और पुरोहितों की तरह पेश आयेंगी और न ही किसी प्रकार से इसके बदले महन्तपन का दावा करेंगी और न किसी प्रकार से इसके बदले में लेने की अपेक्षा रखेंगी क्योंकि आत्मानुभूति वाली आत्मायें तो स्वतः ही दूसरों की सहायता करने के लिए जीती हैं। ऐसा है संक्षिप्त विवरण कन्याओं के इस गुरुकुल का जिसका नाम है **'ओम निवास।'**

अब देख लीजिये जहाँ अपने चार-पाँच बच्चों को भी संभालना, शिक्षा दिलाना तथा उनके चरित्र का ध्यान रखना माता-पिता के लिये कठिन हो जाता है और विशेषकर कन्या को तो थोड़ा बड़ा होने पर आध्यात्मिक एवं नैतिक ऊँचाई पर टिकाये रखना उनके लिये चिन्ता का कारण बन जाता है वहाँ बाबा इतनी कन्याओं की पूरी ज़िम्मेवारी ली थी। वे निःशुल्क ही उनकी इतनी उच्च सेवा की व्यवस्था किये हुए थे। कन्या को शिक्षा देना कोई बड़ी बात नहीं है परन्तु उसे एक महान् आत्मा बनाना, एक दिव्य शक्ति के रूप में उसका विकास करना बहुत परिश्रम का कार्य है। जिस नारी वर्ग के सम्पर्क को 'आग और कपास' का संग बता कर पहले उपदेशक वर्ग उनका तिरस्कार या उनकी अवहेलना करता आया था, बाबा ने अब उन्हें ही ज्ञानामृत का कलश देकर कल्याणी बनाने का उच्च कर्त्तव्य किया जो कि श्रीमद्भागवत् के अनुसार स्वयं ईश्वर ही का कार्य है। बालकों की शिक्षा में भी बाबा ने कन्याओं को यह आध्यात्मिक शिक्षा देकर 'सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्या' बनाने का युग-प्रवर्तक कार्य प्रारम्भ किया।

बाबा ने इस संस्था की जो प्रबन्धक समिति (Managing Committee) बनाई, उसके सभी सदस्य कन्याएँ-माताएँ ही थीं और उनमें भी कन्याओं की संख्या अधिक थी। यहाँ तक कि उनमें से उस समय तीन तो अठारह वर्ष से भी कम आयु की थीं और शेष सभी (छः) भी बीस-बाईस-पच्चीस वर्ष तक ही की थीं। इस प्रबन्धक समिति की प्रधान 'ओम राधे', जिन्हें ही 'मातेश्वरी' कहा जाता है, उस समय लग-

कार्य बाबा ने उनके हाथों सौंप दिया था, यहां तक कि समस्त सम्पति उनके हवाले कर दी थी।

### कन्या को इस शिक्षा द्वारा सौ ब्राह्मणों से उत्तम बनाने का कार्य

इस विषय में एक व्यक्ति जिसका नाम था जगतराय ईशर दास शिव दासानी के लिखित अनुभव में से कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं—

"आज कुछ मित्रों के सौजन्य से हमें ओम मंडली के संस्थापक दादा लेखराज से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ हमने काफ़ी बड़ी संख्या में छोटी कन्याओं को भी देखा। पूछने पर हमें मालूम हुआ कि वहाँ छोटी-बड़ी ६० कन्यायें रहती हैं जिन्हें लौकिक शिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञान दिया जाता है। वहाँ कन्यायें बहुत खुश दिखाई देती थीं। वहाँ का वातावरण अनुशासनपूर्ण और शान्त था। उनके रहने और शिक्षा का सारा खर्च दादा की अपनी ही धन-सम्पत्ति से होता है। वे बाहर की बनी हुई मिठाई तथा अन्य कोई चीज़ नहीं लेतीं बल्कि जो-कुछ ओम निवास में बनता है, वही लेती हैं। बातचीत करने के फलस्वरूप हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि वहाँ की सारी शिक्षा-पद्धति का ज़ोर आत्म-साक्षात्कार पर है। दादा कहते हैं कि कोई भी जिज्ञासु उनके सम्पर्क में आकर अथवा ओम निवास में शिक्षा प्राप्त करने वाली किसी भी ऐसी कन्या, जिसने कि शाश्वत आनन्द प्राप्त किया है से ज्ञान प्राप्त करके एक सप्ताह अथवा एक मास में आत्मानुभूति कर सकता है। दादा का यह विश्वास है कि एक कन्या सौ ब्राह्मणों से भी उत्तम है। दादा का यह विश्वास शास्त्रों के विपरीत नहीं है। जो कन्यायें आत्म-ज्ञान और शाश्वत आनन्द प्राप्त कर लेती हैं, स्वभावतः वे घर वालों को तथा अन्यों को भी इससे लाभान्वित करती हैं। दादा कहते हैं कि विनाश का एक बहुत बड़ा तूफ़ान तेज़ रफ़्तार से बढ़ा आ रहा है और एक दिन आएगा कि इन देवियों से शिक्षा प्राप्त करने वाली आत्मायें ही उस विनाश के भयंकर परिणामों से त्रास पायेंगी। दादा का यह विश्वास बहुत पक्का है।"

जगतराय जी आगे लिखते हैं—दादा यह भी कहते हैं कि विवाह के समय पत्नी यह वचन करती है कि वह अपने **पतिदेव** की आज्ञा का पालन करेगी; वह यह तो नहीं कहती कि वह **पतिदैत्य** जिसमें कि पाँचों विकार हैं, की आज्ञा का पालन करेगी। अतः यदि कोई पति अपने देवता पद से गिर जाता है तो ऐसे दैत्य की आज्ञा पालन करने की बात पत्नी पर लागू नहीं होती जबकि उसकी (पति की) आज्ञा अध्यात्म के नियमों के विरुद्ध होती है।"

जगतराय जी कहते हैं—"ओम निवास के बाद हमने ओम मंडली भी देखी। वहाँ हमने अनेकानेक बहनों को एक बहुत सादा ड्रैस पहने हुए सभा-स्थल में निश्चल व सुव्यवस्थित ढंग से बैठे हुए देखा और वहाँ दूसरी ओर कुछ युवक-जन व वृद्ध लोग शान्तिपूर्वक और ध्यान-मग्न बैठे थे। वहाँ हमने मन को हर्षाने वाले बहुत अच्छे गीत सुने जिनसे हमें मन की शान्ति मिली और हमने देखा कि दादा लेखराज जी की अनुपस्थिति में सारा कार्यक्रम बड़े सुचारु रूप से किया गया। इस प्रकार भाई-बन्धों की कन्याओं, और बहनों को देखकर हमारे मन में उनके प्रति बहुत सम्मान की भावना उत्पन्न हुई और हमारी बुद्धि उस वक्त दंग रह गई जब हमने एक १६ वर्षीय कन्या को लगातार ६० मिनट तक आत्मानुभूति पर एक व्याख्यात्मक प्रवचन करते सुना।

इस प्रकार देखिये कि बाबा ने छोटी-छोटी कन्याओं में कैसा उत्साह भर दिया था! बड़े-बड़े शिक्षाविदों के सामने भी एक १६ वर्षीय कन्या बेधड़क होकर अध्यात्म के निगूढ़ तत्त्वों पर धारावाहिक बोल सकती थी और तत्काल ही उन्हें शान्ति का अनुभव करा सकती थी उनके सामने अपने प्रदेश की कन्याओं-माताओं के बारे में न केवल आशा की किरण जगा सकती थी बल्कि सूक्ष्म गर्व उत्पन्न कर सकती थी क्योंकि प्रदेश में इस प्रकार आध्यात्मिक क्रान्तिकारी कार्य छोटी-छोटी बालिकाओं द्वारा हो रहा था। बिजली की कौंध की तरह की आध्यात्मिक शक्ति एवं ज्ञान-ऊर्जा से सम्पन्न कन्याओं रूपी शक्तियों को देखकर प्रथम भेंट में ही बुद्धिजीवी लोग बाबा की इस घोषणा को स्वीकार करते कि ऐसी ज्ञानवान कन्या निश्चय ही सौ ब्राह्मणों से उत्तम है। जब हम बाबा के इस दावे को सुनते हैं कि इन छोटी कन्याओं से एक मास ज्ञान सुनने पर आत्मानुभूति-जैसी सर्वोत्कृष्ट प्राप्ति हो सकती है तब बालकों और बालिकाओं में नैतिक शिक्षा की बात तो इसके आगे भग उन्नीस वर्ष ही की थीं। इतनी बड़ी संस्था का

बहुत हल्की पड़ जाती है।

### बालकों और बालिकाओं को ऐसी उच्च शिक्षा देने वालों का भी विरोध !

परन्तु हमारे देश के दुर्भाग्य हैं कि जब पंडितों और पुजारियों ने देखा कि अब किस प्रकार ये कन्यायें मातायें लोगों में आध्यात्मिक जागृति पैदा कर रही हैं तो उनके दिल दहल गये और उनकी ईर्ष्या ने उन्हें झकझोर कर कहा कि इनकी निःस्वार्थ और धन की अपेक्षा-रहित सेवा द्वारा तुम्हारी प्रतिष्ठा का ह्रास होगा, तो वे अनेक प्रकार के स्वार्थी तत्त्वों को साथ लेकर खड़े हो गये और उन्होंने इस जागती ज्योति को बुझाने का प्रयत्न किया ताकि अज्ञानान्धकार में पड़े लोग उनके मन्दिरों और ठिकानों पर आना बन्द न करें। हमारी इस बात की गवाही २७ फरवरी, १९३९ को दैनिक पत्र 'कराची डेली' (Karachi Daily) में प्रकाशित आर० जी० सदानी के एक लेख द्वारा होती है। इसके एक परिच्छेद में लिखा है :—

### कराची के दैनिक पत्र में छपे पत्र से उद्धरण

"जनता का यह स्वभाव है कि जब कोई नवीन, अनोखा, अथवा क्रान्तिकारी कार्य शुरू होता है तो वे उसका विरोध करते हैं और जिन लोगों के स्वार्थ को इस नये कार्य से क्षति पहुँचने की आशंका होती है, वे इस नवीन क्रान्ति लाने वालों के शत्रु हो जाया करते हैं। अतः यह देखकर कि ओम मंडली द्वारा प्रचारित महान् सत्यों व उच्च आदर्शों से अज्ञान में पड़ी जनता की जड़ता को धक्का लगा है और इससे वे पंडित, पुजारी और बावे लोग भी इनके विरुद्ध हो गये हैं, मुझे कोई आश्चर्य नहीं होता क्योंकि उनके विरोध का कारण स्पष्टतः यह है कि वे महसूस करते हैं कि अब लोग इस आध्यात्मिक चेतना के फलस्वरूप उनके मन्दिरों और ठिकानों पर आना बन्द कर देंगे।"
उन्होंने अपने लेख के एक अनुच्छेद में लिखा है :—

"मंडली का यह मुख्य सिद्धान्त है कि संसार में रहो परन्तु इसमें लिप्त मत होओ और स्वयं को मत फँसाओ। अतः यह संस्था किसी भी नर अथवा नारी को अपना घर छोड़ने की सम्मति नहीं देती। जहाँ तक कन्याओ के विवाह से इन्कार करने की बात है, इसके लिए तो सिन्ध की जनता स्वयं भी ज़िम्मेवार है। यहाँ की दहेज प्रथा ऐसी घृणास्पद है कि यहाँ की स्वमानपूर्ण कन्यायें ऐसे पुरुषों से सम्बन्ध जोड़ना मनुष्यता का अपमान समझती हैं जो आज के दौर में कन्याओं को पुरुष वर्ग से घटिया (Inferior Stuff) मानते हुए उसे जीवन-संगिनी के रूप में स्वीकार करने के लिए ५००० से लेकर ३०,००० रु० तकइ वज़ाना (Compensation) माँगते हैं। अतः कुछ कन्याओं ने अपने माता-पिता के लिए चिन्ता का एक कारण बनने की बजाय ओम मंडली को अपनाया है।"

उन्होंने यह भी लिखा—**"इस संस्था में मनुष्य जाति की आध्यात्मिक प्रगति के लिए एक निहायत शानदार कार्य हो रहा है। इसमें जाने वाली अधिकतर बालिकायें हैं परन्तु २० वर्ष से छोटे होने पर भी वे आने वाले जिज्ञासुओं को गीता की इतनी ऊँची गहराईयाँ बताती हैं और उनके बताने में एक अनोखा उत्साह, आत्म-विश्वास और मन की सच्चाई देखने को मिलती है ! उनके नेत्रों में एक दिव्य नूर झलकता है जो कि उनके आध्यात्मवाद और उनके तत्सम्बन्धी कार्यकलाप में उनके गहरे और सच्चे निश्चय का फल है।"**

उन्होंने आगे लिखा –"यहां के निवासियों में, जिनमें छोटे-छोटे बच्चे भी सम्मिलित हैं, जो कि इस संस्था द्वारा संचालित स्कूल में पढ़ते हैं, एक अद्भुत अनुशासन है। उस दुर्घटना के बारे में किसको मालूम नहीं जो पिछले दिन इस संस्था की एक बस उलट जाने से हुई। उसमें इस विद्यालय की लगभग २० बालिकायें थीं। उनमें से लगभग १२ छोटी बच्चियाँ सिविल हस्पताल, कराची में दाख़िल की गईं। जिन्हें चोट लगी थी उन्हें जिन लोगों ने भी हस्पताल में जाकर देखा, उनमें कुछेक इस संस्था के आलोचक भी थे। उन बच्चियों के अनुशासन, परमात्मा के प्रति उनके समर्पण-भाव और ऐसी परिस्थिति में भी उनके शान्त स्वभाव को देखकर सबके मुख से प्रशंसा के बोल निकलते थे। दुर्घटना-ग्रस्त बालिकाओं में से किसी एक ने भी चोट अथवा घाव देने वाली इस दुर्घटना के बारे में एक भी तो दुःख-सूचक शब्द नहीं कहा। हर किसी के कोमल मुख पर सच्ची खुशी तैर रही थी और हरेक के होंठों पर ये वाक्य थे —"हम तो ठीकहैं। हम तो बहुत जल्दी ही हस्पताल से बाहर आ जायेंगे।"

इस लेखक ने अन्त में इस संस्था की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए लिखा है कि 'इस संस्था के वातावरण

में आध्यात्मिक सेवा की एक बहुत ही मधुर सुगन्धि है—ऐसी सेवा कि जिसमें ज़ात-पात और मज़हब के नाम पर कोई भेदभाव नहीं। यहाँ आने वालों को एक अद्भुत शान्ति देने की सेवा भी सम्मिलित है।'

इसी लेखक ने अपने लेख का आरम्भ यह कहकर किया है कि जब किसी नये सत्य का उद्घाटन किया जाता है और उससे किसी पुरानी मान्यता के लोप होने की संभावना उत्पन्न होने लगती है तब ऐसा सत्य उद्घाटन करने वालों के साथ अत्याचार होता ही आया है। लेखक ने इस विषय में सूफ़ी मत के सन्त मन्सूर और शमसतब्रेज़ का, भौतिकी (Physics) और खगोल विद्या (Astronomy) के क्षेत्र में नये चिन्तक गैलीलियो (Galilo) का रूई धुनने वाली मशीन के आविष्कार-कर्त्ता आर्क राइट (Arkwright) का गुरु तेग़ बहादुर का और भक्तिन मीराबाई का उदाहरण देते हुए बताया है कि किस प्रकार इन पर तत्कालीन स्वार्थी तत्त्वों ने संगठित होकर अत्याचार किये थे।

ऐसा ही बालकों और बालिकाओं को नैतिक, आध्यात्मिक तथा चारित्रिक शिक्षा देने वाली इस संस्था के साथ भी शुरू-शुरू में किया गया। समाज के धनी-मानी लोगों ने, पंडितों और पुरोहितों से मिलकर वैयक्तिक द्वेष और रूढ़िवादिता की कट्टरता के वशीभूत होकर जो सितम ढाये, उनकी दो मील लम्बी एक दुःख-भरी दासतान है जिसको सुनते-सुनते कितनों की आँखें गीली हो जाती हैं और कितने ही लोग सिसकियाँ भरने लगते हैं और आज वह घड़ी है कि लोग संसार में नैतिक ह्रास को देखकर मगरमच्छ के आँसू बहाते हुए बच्चों की नैतिक शिक्षा के लिए फ़रियाद करते हैं!

परन्तु कमाल उस बाबा की है जिसने इतना अत्याचार और विरोध होने पर भी उन कन्याओं-माताओं को नैतिक-आध्यात्मिक शिक्षा देकर इतनी श्रेष्ठ आध्यात्मिक क्रान्ति के लिये एक शक्ति-दल की स्थापना की। आज जो इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य संचालिका हैं, जो छः सौ से भी अधिक सेवा-केन्द्रों के संचालन के निमित्त हैं, वह उन दिनों लगभग पंद्रह-सोलह वर्ष की थीं और आज जो इसकी विभिन्न क्षेत्रीय प्रशासिकाएँ हैं, वे भी उन दिनों लगभग इसी आयु की थीं। आज उन्होंने नैतिकता की प्रेरणा का संचार करने वाले ऐसे प्रभावी, कर्मठ, उत्साही, अथक आध्यात्मिक सेवा-बल को संगठित कर लिया है जिसके सामने अनैतिकता निकट भविष्य में कई जगह तो घुटने टेक देगी और अन्य स्थानों पर वह अपने ही हाथों भस्मसात हो जायगी! □

# ऐसी थीं बाबा की मीठी युक्तियाँ

ले०—ब्रह्मा कुमारी कुंज, पटना

एक दिन प्रातः क्लास के बाद बाबा ने मुझे कहा—"बच्ची, आप भी ईश्वरीय सेवार्थ जाओगी न? कल जाओगी न देहली?" मुझे भी ईश्वरीय सेवा के लिये तो बहुत रुचि और लग्न थी परन्तु इतने वर्ष यज्ञ-पिता के निकट पवित्र वातावरण में जीवन बिताने के बाद अब बाहर मायावी वातावरण में जाने के लिये मन तुरंत नहीं उत्तर दे रहा था।

फिर जब हम यज्ञ-वत्स बाबा के साथ पहाड़ी पर घूमने गये तो वहाँ जब यज्ञ-वत्स बैठे थे तब बाबा ने कहा—"बाबा तो कुंज को वर्थ पाउंड (Worth Pound), अर्थात मूल्यवान रत्न समझते थे परन्तु यह वर्थ पैनी (Worth penny) निकली है, अर्थात वैसी योग्य सिद्ध नहीं हुई। बाबा के ये शब्द सुनकर मैं लगभग दो सप्ताह बाबा से छिपती रही। फिर एक दिन मैं मातेश्वरी के साथ बाबा के पास गयी और मैंने कहा—"बाबा अब मैं जाने के लिये तैयार हूँ।" तब मैंने यह भी कहा—"प्यारे बाबा मैंने आपसे केवल इतना ही तो कहा था कि मैं अगली पार्टी के साथ जाऊँगी। इस पर आपने मुझे 'वर्थ पैनी' कहा।" यह कहते हुए मैं भी हँस रही थी और बाबा भी मुस्करा रहे थे।

बाबा ने कहा—"बच्ची, बाबा जानता है कि किस बच्ची को कौन सी बात अथवा कौन सा शब्द तीर की तरह लगेगा। अगर मैं यह शब्द न कहता तो तुम कभी भी यज्ञ की चारदीवारी से बाहर न जाती क्योंकि तुम्हारा बाबा से अटूट स्नेह है।"

मैंने कहा—"बाबा, एक तो बात स्नेह की है और, दूसरे, मुझे बाबा के सम्मुख मुरली सुनना अच्छा लगता है···।" इस प्रकार हम ने अनुभव किया कि बाबा प्रेमस्वरूप होने के साथ-साथ अनेक युक्तियों से बच्चों को आगे बढ़ाने का भी यत्न करते थे।

□

ऊपर के चित्र में कुछ बच्चे दिखाई दे रहे हैं जो ओम निवास में पढ़ते थे। अब वे आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त कर विश्व में पवित्रता एवं शान्ति स्थापना की महान सेवा कर रहे हैं।

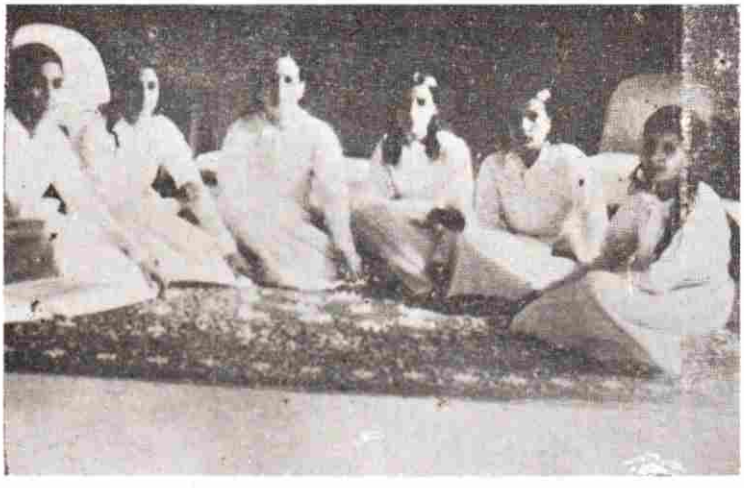

इस चित्र में (बांये से दायें) दिखाई दे रही हैं ब्रह्माकुमारी गुलजार मोहिनी, दादी कुमारिका जी जो अब मुख्य प्रशासिका हैं, ब्रह्माकुमारी वृज इन्द्रा जी, निर्मल शान्ता जी और दायीं ओर हैं ब्र० कु० शान्ता मणि जी। स्पष्ट है कि वे उन दिनों बीस-पच्चीस वर्षों के आसपास आयु की थीं।

सांवलवाडी (गोवा) में आयोजित राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के एक स्कूल की मुख्य अध्यापिका बहन मीरा जादव कर रही हैं। साथ में वहाँ के बहन भाई खड़े हैं।

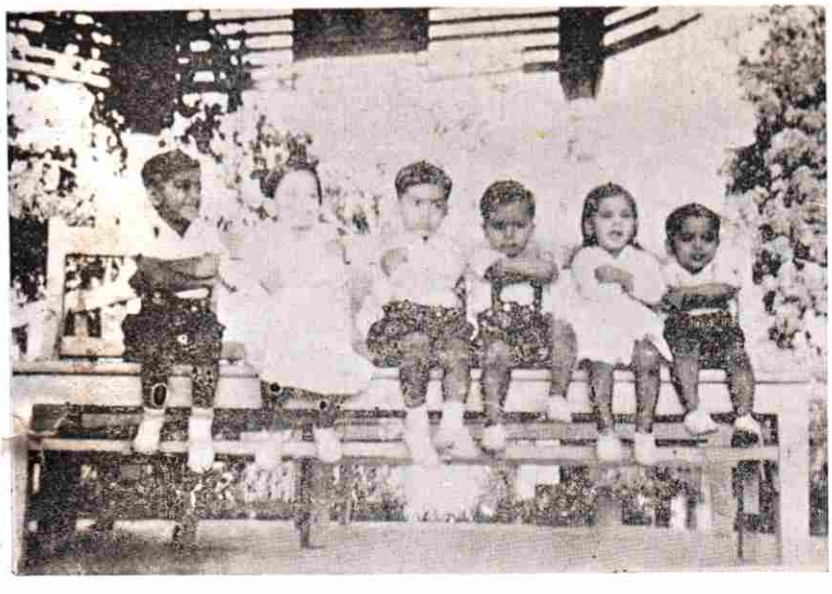

बायें के चित्र में भी बच्चे दिखाई दे रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि बाबा ने प्रारम्भ ही से बच्चों को भी नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा देने का महान् कार्य किया।

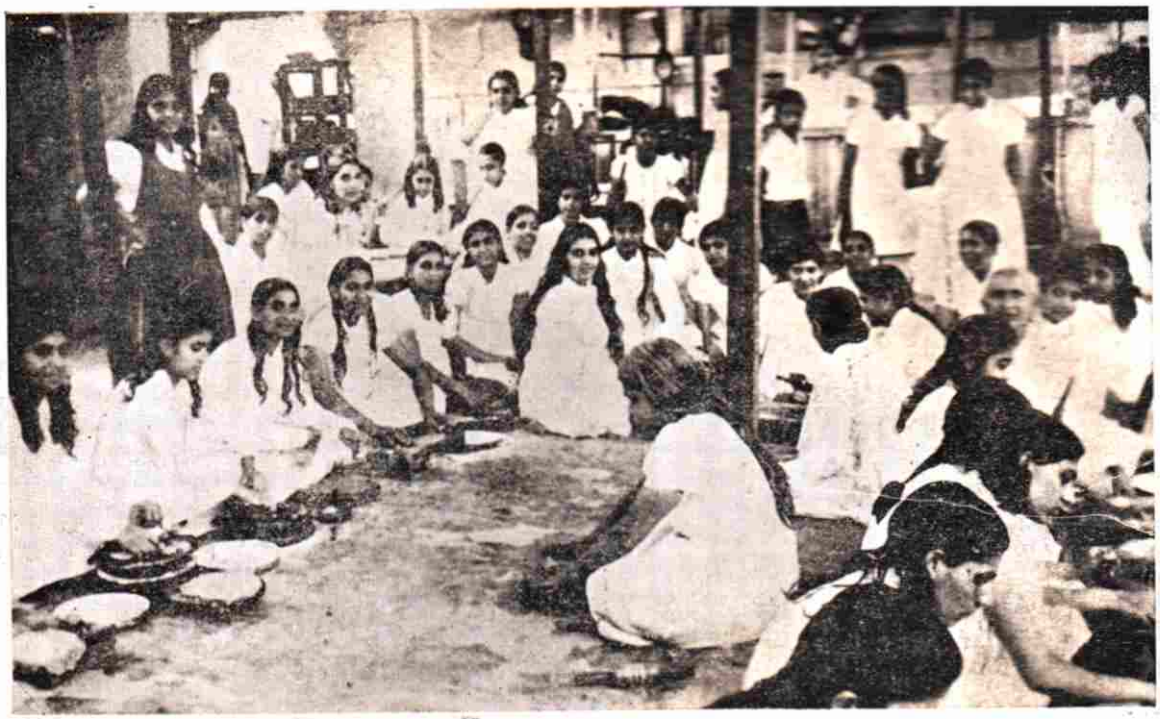

ऊपर के चित्र में बहुत सी वरिष्ठ ब्रह्मा कुमारियां दिखाई दे रही हैं। यह चित्र भी स्थापना' के काफी बाद का है। चित्र के मध्य में मुड़ कर पीछे की ओर देखते हुए ब्रह्माकुमारी मातेश्वरी सरस्वती जी हैं। स्पष्ट है कि तब अधिक संख्या कन्याओं की थी जो आज इतना महान कार्य कर रही हैं।

चित्र में बायीं ओर छोटी आयु के बालक और बालिकाएँ दिखाई दे रहे हैं। देखिये तो इनके विरुद्ध पिकेटिंग किया शहर के मुखियों तथा अन्य

# अनैतिकता से नैतिकता का छिड़ा संग्राम
# जब बिगल बजाया परमात्मा ने

इस संसार की गति न्यारी है। इधर-उधर, चहुँ ओर धार्मिक आलाप तो सुनने को मिलते हैं परन्तु 'धर्म', जिसका अर्थ उच्च मूल्यों की धारणा है, में जब कोई स्थित होने का साहस और पुरुषार्थ करता है, तब चारों दिशाओं के लोग जो अब तक धार्मिक होने का दावा करते थे, उसे वापस नारकीय जीवन में खींचने का यत्न करते हैं। माइक्रोफ़ोन लगाकर 'देवी-जागरण' के कार्यक्रम होते हैं और "ज्योतियों वाली माता तेरी सदा ही जय हो"—ऐसे आलाप किये जाते हैं परन्तु सचमुच जब कोई माता अथवा कन्या आध्यात्मिक ज्योति जगाने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ होती है तब उस पर अत्याचार किये जाते हैं। मस्जिदों से 'अल्लाह-हू-अकबर' की बाँक दी जाती है परन्तु जब कोई भगवान् (अल्लाह) ही को सबसे बड़ा (अकबर) मानकर जीवन को पवित्र बनाने की ईश्वरीय आज्ञा का पालन करने लगता है तब उसके मित्रजन उस पर सितम ढाने लगते हैं और उसे 'समझाने' (अर्थात वरग़लाने तथा फुसलाने) की पूरी कोशिश करते हैं। जब कोई शरीर छोड़ता है तो शव को ले जाने वाले लोग एक-स्वर होकर कहते हैं—"राम नाम संग (सत) है, सत्य बोलो गत है", परन्तु जब कोई शरीर छोड़ने से पहले राम का संग करता है तो लोग उसकी पहले ही गत बनाना शुरू करते हैं और उससे यह मनवाने की कोशिश करते हैं कि वह 'राम' का संग लेने से पहले 'काम' का संग लेगा और अन्त में अग्नि-दाह से पहले कामाग्नि की ज्वाला में जलेगा। इस प्रकार मन्दिर के पुजारी और महन्त देवताओं के जयघोष को मन्दिर तक ही सीमित रहने देते हैं परन्तु यदि मन्दिर से बाहर कोई अपने घर को मन्दिर बनाना चाहता है और स्वयं को देवी या देवता बनाना चाहता है तो वे महन्त उसकी इच्छा का अन्त कर देने का यत्न करते हैं और पुजारी उसे पूज्य पद पाने से रोकते हैं। ऐसी ही एक दास्तान, जो कि लम्बी दास्तान है, हमारे इसी जीवन में हमने कुछ देखी और कुछ सुनी है। यह अनेकानेक कन्याओं-माताओं पर अत्याचार की एक कहानी-दर-कहानी है। परन्तु यदि संसार की गत न्यारी है तो प्रभु की गत उससे भी न्यारी है। वह ऐसे मज़लूम—मानवीय प्रकोप और आतंक से सताये हुए जनों की रक्षा करता है। यह एक ऐसी कहानी है जिसका अधिकांश अब भी उनकी ज़बानी सुना जा सकता है जिन पर वह बीती।

### कथावस्तु का प्रारम्भ

इस कहानी की शुरूआत आज से लगभग ४२-४३ वर्ष पहले, सन् १९३७ से होती है। तब अभी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की औपचारिक रूप से स्थापना होनी थी। तब उसे वहाँ के बहुत-से लोग 'ओम मंडली' के नाम से जानते थे क्योंकि वहाँ पर 'ओ३म्' का आलाप करके आत्मा के स्वरूप में स्थित करने की तपस्या होती थी और वहाँ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन होता था और वहाँ आने वाली कन्यायें-मातायें तथा पुरुष वर्ग बाज़ार की कोई चीज़ नहीं खाते थे तथा आहार के पवित्रता-सम्बन्धी अन्य नियमों का पालन करते थे और फ़ैशन को छोड़कर सादा जीवन में चलने लगे थे तथा आत्मिक दृष्टि और वृत्ति को अपना रहे थे। इसलिए वहाँ नित्य प्रति आने वालों के आचार, व्यवहार और संस्कार में काफ़ी परिवर्तन आने लगा था। कितने ही लोगों को—जिनमें कई छोटे-छोटे बच्चे भी होते—दिव्य साक्षात्कार भी होते थे जिसके लिए प्रायः मनुष्य हर प्रकार का त्याग करने को उद्यत होता है। जब ज्ञान, पवित्रता और शान्ति का ऐसा दौर चल रहा था और सब पर रूहानी रंग खिल रहा था तब रंग में भंग डालने वाले कुछ लोग सामने आये। उनमें शुरू में तीन ऐसे व्यक्ति थे जो अपनी विकारी कामनाओं के कारण ऊधम मचाने लगे। उनमें से एक तो ऐसे व्यक्ति थे जो काफ़ी समय विदेश में रहकर वापिस लौटे थे। वे विदेश में खूब शराब पीने, मांसाहार करने और भोग-विलास तथा रंग-रेलियाँ करने की पक्की आदतें वहाँ से लेकर आये थे। इधर उनकी

अनुपस्थिति में उनकी युगल (अर्थात लौकिक नाते से धर्म-पत्नी) नित्य ज्ञान रूपी अमृत पिया करतीं, आत्मा के स्वरूप में स्थिति रूप योगाभ्यास किया करतीं और अपने आहार-व्यवहार को दिनोंदिन दिव्य बनाने का पुरुषार्थ किया करतीं।[1] अतः पति की ओर से नित्य वासना-भोग का प्रस्ताव पेश होता और पत्नी की ओर से नित्य ज्ञानामृत पीने का नम्र निवेदन होता। स्पष्टतः दोनों के विचारों में पश्चिम और पूर्व का अन्तर था। पत्नी दुर्गा अथवा 'ज्योतियाँ वाली माता' के मार्ग की गामिनी थी और पति महिषासुर की तरह काम कटारी से वार, प्रहार और अत्याचार करने लगा। ऐसा ही (कुछ रूपान्तर और कारणान्तरों से) अन्य दो व्यक्तियों का भी वृत्तान्त था। इन्होंने वहाँ के मुखियों को कहना शुरू किया तथा पण्डितों, पुरोहितों और पुजारियों को भी साथ मिलाने का यत्न किया। शुरू में जो एक छोटी-सी चिंगारी थी, लोगों के संस्कारों से ईंधन पाकर उसने काफ़ी बड़ी आग का रूप ले लिया!

### विषय-वासना के लिए प्रस्ताव

ओम मंडली के विरुद्ध एक काफ़ी बड़ा आन्दोलन उठ खड़ा हुआ। जो लोग कल तक अपने बच्चों को ओम मंडली द्वारा खोले हुए एक सुव्यवस्थित और दिव्य स्कूल में भेजते थे अथवा उन्हें वहाँ रहने की स्वीकृति दिये हुए थे, अब उन्होंने अपने बच्चों को घर वापिस बुलाया क्योंकि मुखी (मुखिया) लोगों ने उन पर सामाजिक व आर्थिक दबाव डाला। इन पैसे वाले मुखिया लोगों के आर्थिक अधिकार में अथवा पारिवारिक सम्बन्ध में जो दैनिक समाचार पत्र थे, वे भी इनकी बोली बोलने लगे और समाचार छापने की बजाय जनता को भड़काने और अत्याचार के लिए प्रोत्साहन देने का कुत्सित कर्म करने लगे। वहाँ के व्यापारी वर्ग (भाई बन्ध) लोगों ने वहाँ के एक साधु को लालच दिया कि वे भी पूर्ण पवित्रता (Complete Purity) की शिक्षा देने वाली तथा पूर्ण क्रान्ति (Total Revolution) लाने वाली इस संस्था के विरुद्ध झण्डा अपने हाथ में लें तो वे उन्हें कन्याओं-माताओं का स्कूल खोलने के लिए काफ़ी बड़ी धन-राशि देंगे और स्वयं उनके झंडे के पीछे-पीछे चलेंगे। इस प्रकार जो लोग अब तक 'राम' के गुण गाते दिखाई देते थे, अब 'काम' के कीर्तन में झाँझ बजाने लगे। उन्होंने अदालत में भी आवेदन पत्र देकर यह आवाज़ उठाई कि हमें भोगी बनने का कानूनी अधिकार (Conjugal right) दिया जाय अर्थात उनकी पत्नी को बाध्य किया जाये कि वह उनके विषय-विकार, विलास-वासना यानि नर्क-गमन (जिसे 'बलात्कार' कहें) की बात माने। वे दादा लेखराज, जिसे वे इस मंडली का कर्त्ता-धर्ता अथवा स्थापक और प्राध्यापक मानते थे, पर भी हर प्रकार से दबाव डालने लगे कि वे उन महिलाओं से कहें कि वे योगी जीवन छोड़कर भोगी बनना स्वीकार करें और यदि स्वयं न भी पीयें तो पति को अपने हाथ से बोतल उंडेलकर शराब का प्याला देने तथा हंडिया-पतीले में मांस पकाकर उसे भोजन में परोसने (का पाप-कर्म) करना स्वीकार करें! बताइये, पत्नी के पवित्र बनने के अधिकार को अपने कीलदार काले बूट के नीचे कुचलते हुए, जीव-हत्या द्वारा अपने पेट को कब्र में पशुमाँस को दफ़नाने के अधिकार को मनाने का कुल्हाड़ा हाथ में लेकर वे दादा लेखराज से तरह-तरह की बातें बनाने लगे और उन्हें आयें-बायें और शायें करने की धमकियाँ देने लगे!! जो कल तक नैतिकता की आवाज़ कसा करते थे, वे आज उसके विरुद्ध नफ़रत के नारे लगाने लगे!!!

### सर्वश्रेष्ठ नैतिकता की शिक्षा को बन्द कराने की कोशिशें

परन्तु ऐसी उच्च नैतिकता को अनैतिकता मानने वाले काम-पीड़ित लोग भाई बन्धों को साथ लेकर ओम मंडली को ही बन्द करने का यत्न करने लगे क्योंकि उन्हें यह मालूम नहीं था कि यह 'नर्क-बन्द'(!) करने वाला सत्संग वास्तव में परमपिता परमात्मा द्वारा ही स्थापित किया गया है जिसकी वे प्रतिदिन इन शब्दों में प्रार्थना करते थे—'विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा।' उन्होंने तत्कालीन सरकार को भी अपने साथ मिलाने का भरसक प्रयत्न किया ताकि वह ऐसा हस्तक्षेप करे कि यह सत्संग होने ही न दे। उन दिनों अंग्रेज़ों के राज्य में दो राज-

१ इस बहन का अलौकिक नाम सती है। यह आजकल बम्बई सान्ताक्रूज़-स्थित ईश्वरीय सेवा-केन्द्र में ईश्वरीय सेवा में तत्पर है। इन्हें दिव्य दृष्टि भी प्राप्त है।

नीतिक दलों की संयुक्त सरकार (Coalition Government) का शासन था। तब वहाँ की विधान सभा में कांग्रेस-दल के जो हिन्दू सदस्य थे, उनसे उन्होंने आवेदन-निवेदन किया कि वे अपना प्रभाव मुख्य मन्त्री तथा विधि मन्त्री पर डालें। तब मुख्य मन्त्री और विधि मन्त्री मुसलमान थे और उनके अपने राजनीतिक दल का स्वतन्त्र रूप से बहुमत नहीं था और उन्होंने काँग्रेस दल से मिलकर ही मन्त्री मण्डल बनाया था और उस दल के कुछ मन्त्री लिये थे। जब इन काँग्रेसी हिन्दु मन्त्रियों ने भी भाईबन्धों और उनके साथ मिलकर अत्याचार करने वाले काम-पीड़ित लोगों की बात को सारहीन, अवाञ्छित, अवैधानिक और अमान्य समझा तब भाईबन्ध और उनके साथ मिले हुए लोग और भी अधिक भड़क उठे। उन्हें जोश आया कि उनके बहुत-से मत (vote) और नोट लेकर ही जो विधान सभा के सदस्य बने और जिन्होंने मंत्री मंडल में पद प्राप्त किया, आज वे भी इन मुट्ठी-भर लोगों को ठीक बताते हैं और हमारा साथ नहीं देते तो उनके कुछ **हिंसावादी विधायकों (M.L.A's) ने पिस्तौल हाथ में लेकर कुछ मन्त्रियों को धमकियाँ दीं।** आखिर काम-पीड़ित लोगों से उकसाये हुए, समाचार पत्रों से भड़काये हुए, पण्डितों और पुजारियों से बहकाये हुए लोगों के हा-हल्ले से डरकर उन हिन्दु मन्त्रियों ने विधि मन्त्री और मुख्य मन्त्री पर दबाव डालना शुरू किया। ये सारी बात २४ मार्च, १९३९ को सिन्ध की विधान सभा के एक हिन्दु सदस्य आर० एस० गोकलदास के प्रस्ताव (adjournment motion) का उत्तर देते हुए वहाँ के विधि मन्त्री (Law Minister) सर गुलाम हुसैन हिदायतउल्ला ने जो भाषण किया, से स्पष्ट है। उनके उत्तर का निम्नांश पठनीय है :

### गुलाम हुसैन हिदायतउल्ला के वक्तव्य से उद्धारण

"(अध्यक्ष को सम्बोधित करते हुए)·····नहीं जनाब। मैंने अन्तिम वक्ता को सुना है और मुझे कहना पड़ेगा कि वे और उनके कुछ और दोस्त चाहते हैं कि सरकार उनसे अपनी नाक पकड़वाकर चले, उनके ही हुक्मों को माने और किसी से भी न्याय न करे। कुछ वक्ताओं ने यह मत प्रकट किया है कि सरकार अधिक संख्या वाले लोगों के कहने पर चले और अन्य लोगों के नागरिक अधिकारों की रक्षा न करे। तो, अध्यक्ष महोदय, जिन लोगों ने यह मत प्रकट किया है, **मैं उनसे यह पूछता हूं कि क्या उन बेचारी माताओं के अल्पसंख्या में होने के कारण हम कानून अपने हाथ में उठा लें और उनकी स्वतन्त्रता की रक्षा न करें? महोदय, आप देख रहे हैं कि यह कितने अन्याय की बात है!**

मैं असूल की बात कह रहा हूं। अगर आप न्याय चाहते हैं तो पहले आपका अपना मन और अपने हाथ साफ़ और बेदाग़ होने चाहिएँ। मेरे मान्यवर मित्र शेख़ साहब ने कहा कि सरकार नागरिक स्वतन्त्रता तथा नागरिक अधिकारों में हस्तक्षेप कर रही है। **मैं पूछता हूँ कि क्या दादा लेखराज का कोई अधिकार नहीं है, उनके लिए कोई स्वतन्त्रता नहीं है?**

वास्तव में जो लोग स्वतन्त्रता की बात करते हैं, उन्हें चाहिए कि वे दूसरों को – हरेक को – भी तो स्वतन्त्रता दें। भले ही वे अधिक संख्या में हों और दूसरे विचार के लोग गिनती में ५ या १० ही क्यों न हों, उन्हें चाहिए कि वे उनको भी पूर्ण स्वतंन्त्रता दें। **मैं यह स्पष्ट करने के लिए कुछ धर्म-स्थापकों के उदाहरण देना चाहता हूं कि जब उन्होंने अपने धर्म की स्थापना का कार्य शुरू किया तो वे भी संख्या में थोड़े थे।**

**हमारे अपने पवित्र धर्म-स्थापक अथवा रसूल हज़रत मोहम्मद साहब का उदाहरण लीजिये। उनके साथ कितने लोग थे? मुश्किल से पाँच या दस। तो यदि हम आदरणीय सदस्य शेख साहब द्वारा दी गई नागरिक स्वतन्त्रता की परिभाषा के अनुसार चलें तब तो मोहम्मद साहब को भी मुस्लिम धर्म के प्रचार करने से रोक लिया जाना ठीक था।** महोदय, बहु-संख्यक दल अथवा जाति का मत क्या है,– हमें यह भेदभाव न रख के हमें सब जातियों और उपजातियों को स्वतन्त्रता देनी चाहिए। **हमें शरम आनी चाहिए कि हमारे कुछ मान्य हिन्दु-विधायकों ने हाथ में पिस्तौल लेकर मान्य हिन्दु मन्त्रियों को इसलिये धमकी दी कि वे फ़लाँ-फ़लाँ फ़ैसला करायें वर्ना वे उनका साथ छोड़ देंगे।** हम हाथ में पिस्तौल लेने वाले कुछ विधायकों से डर कर उनके कहने पर नहीं चलेंगे और उनके कहे से दूसरों के साथ अन्याय नहीं करेंगे।

महोदय, हमने हिन्दुओं की भावनाओं को इतना आदर दिया है कि और हिन्दु भी इतना आदर नहीं

दे सकते। ओम मंडली तो पिछले चार वर्ष से अस्तित्व में थी, तब क्या आपने कोई बात सुनी थी? तब कुछ भी नहीं कहा और किया गया था। बाद में कुछ हालात पैदा हुए, मैं उसके विस्तार में जाना नहीं चाहता परन्तु मैं वास्तविकता बताना चाहता हूँ। पहले इन लोगों की माँग यह थी और, यहाँ जो मान्य सदस्य ईशरदास बैठे हैं, वे इस बात के गवाह हैं, कि माँग यह थी कि जो नाबालिग़ कन्यायें हैं, उन्हें घर वापिस भेज दिया जाये। अच्छा, महोदय, हम कानूनी ताकत का इस्तेमाल किये बिना दादा लेखराज के पास गये और उनके सामने यह बात रखी कि छोटे नाबालिग़ बच्चों को रखकर ऐसी शिक्षा देना[1] उचित नहीं। तो दादा लेखराज ने कहा कि यदि उनके माता-पिता चाहें, वे आयें और अपने-अपने बच्चो को ले जायें। ठीक। परन्तु महोदय, जब हम इनकी एक बात मानते हैं तो ये दूसरी माँग और लेकर आ जाते हैं। दूसरे दिन इन्होने बालिग़ कन्याओ के लिए कहा। यह एक बड़ा कठिन प्रश्न उ स्थित हुआ। महोदय, जैसे कि आप जानते हैं कि किसी भी बालिग़ कन्या को तो जबरदस्ती निकाला या ले जाया नहीं जा सकता। फिर भी हमने दादा लेखराज से कहा कि यदि वे सच्चाई का प्रचार कर रहे हैं और सत्य पर दृढ़ हैं तो उन्हें अपनी सच्चाई को प्रमाणित करना चाहिए। हमने कहा कि बालिग़ कन्याओं के सम्बन्धी उन्हें वापस चाहते हैं, अत: वे उन्हें वापस कर दें। उन्होंने यह भी किया। फिर, जनाब, अचानक ही यहाँ कराची में साधु वासवानी चले आये। उन्होंने पहले जलूस निकाला। यद्यपि वह कानून के विरुद्ध था तो भी हमने उन्हें शहीद नहीं बनाना चाहा। प्रारम्भ में तो सभी जलूस शान्तिपूर्ण होते हैं परन्तु उनका अन्त तो झगड़े-फ़साद, गाली-गलौच और खटपट से ही हुआ करता है। वास्तव में हुआ क्या? हुआ यह कि साधु वासवानी जलूस निकालकर मंडली के भवन की ओर गये। उन लोगों ने वहाँ सचमुच खिड़कियों के शीशों को तोड़ा, जंगलों को तोड़ा, दीवारों को तोड़ा; तब क्या यह शान्तिपूर्ण जलूस था? महोदय, यह सच है कि उन्होंने इन चीज़ों को तोड़ा। मैं आपको दिखा सकता हूँ, अब मरम्मत हुई है। अब चूँकि कुछ हिन्दु वोटर (मतदाता, Voters) उसे (ओम मंडली को) नहीं चाहते तो क्या हम त्याग-पत्र दे दें, मन्त्री मण्डल का कर्त्तव्य छोड़ दें और चले जायें? कानून को तो किसी भी व्यक्ति का लिहाज़ (पक्षपात) नहीं करना चाहिए। खैर, उसने फिर जलूस निकाला और वह भी निरुद्देश्य नहीं था .....

अब हमने जो-कुछ भी हमारी शक्ति में था, सब-कुछ किया। अब तो वास्तव में ओम मंडली की शिकायत होनी चाहिए। हमने तो अपने दोस्तों की भावनाओं को आदर देने के लिए जो हमारी शक्ति में था, उससे उनको खुश करने की पूरी कोशिश कर ली है।

महोदय, तो अब बाकी प्रश्न क्या है? हम जानते हैं कि हमें तो न्याय का पलड़ा दोनों पक्षों के बीच में ठीक रखना चाहिए। हमारी अपनी ओर जो विधायक बैठे हैं, हमें उनके वोट से वञ्चित होने का डर नहीं है। हमने दोनों पक्षों के विरुद्ध दफ़ा १४४ लगा दी है। जब हमने ओम मंडली और दादा लेखराज और अन्य दो व्यक्ति, जिन्हें ये भगवान की आपत्तिजनक रचना मानते हैं, पर यह दफ़ा लगा दिया तो हम इस साधु पर भी तो पाबन्दी लगायेंगे। ये रखे हैं हमारे लिखे हुए वायदे और हमने तो उनसे भी ज़्यादा इनके लिए किया है।

माननीय सदस्यों को इस मन्त्री मंडल के टूटने की या नया मन्त्री मण्डल बनने की चिन्ता नहीं होनी चाहिए। बात के गुण दोष को देखकर ही उन्हें निर्णय करना चाहिए...।"

ऊपर हम जो उद्धरण दे आये हैं, उससे उस काल की हलचल का काफ़ी स्पष्ट चित्र हमें देखने को मिलता है। जो लोग विधायकों और मन्त्रियों पर दबाव डाल रहे थे वे प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से स्वयं अथवा अपने मित्र-जनों के द्वारा उन पर भी ज़ोर डाल रहे थे जो ओम मंडली में जाते थे। अथवा जिन्होंने उसकी शिक्षा से प्रभावित होकर अपने बच्चों को नैतिकता-सम्पन्न बनने के लिए ओम मंडली द्वारा संचालित छात्रालय में अथवा पाठशाला में प्रविष्ट करा रखा था। उन सारे उपद्रवों का यदि हम यहाँ उल्लेख करें तो एक बहुत बड़ा ग्रन्थ बन जायेगा। परन्तु उन द्वारा डाले गये दबाव और उन द्वारा फैलाई गई अफवाहों और उन द्वारा दी गई धमकियों, सामाजिक सम्बन्ध-विच्छेद करने के डरावों के परिणाम स्वरूप उस समय नैतिकता,

१. अर्थात ब्रह्मचर्य और पवित्रता की शिक्षा।

आध्यात्मिकता तथा यम नियमों पर आधारित योग का जिन्होंने बीड़ा उठाया था उनकी दर्द-भरी दास्तानों में से इन्सानियत के दो आँसू-चित्र आपके सामने उपस्थित करते हैं। पहले हम पेश करते हैं एक सीधी-सादी स्व-उच्चारित भाषा में एक माता का अनुभव जिसे उन दिनों रुक्मणी कहा जाता था और बाद में जिसका अलौकिक नाम धैर्यमणि हुआ और जिनके बहु-कला-कुशल होने के कारण लोग उन्हें 'दादी आलराऊंडर' कहते हैं और फिर हम आपके सामने एक कन्या पर किये गए अत्याचारों की कहानी रखेंगे जिस कन्या का नाम उन दिनों में हरि था और अब जिनका अलौकिक नाम दादी मनोहर इन्द्रा है।[1] इन दोनों के बहुत-से लौकिक सम्बन्धी जीवित हैं और उनसे इस कहानी की पुष्टि की जा सकती है :—

□

# दास्तान दादी आलराऊन्डर की

हमारी एक मामी थीं, जिनका नाम गंगा देवी था और जो आजकल बम्बई में रहती हैं। उनकी भक्ति में अटूट भावना थी। मेरे भी संस्कार भक्ति-प्रधान थे। लौकिक सम्बन्ध के कारण मैं उनके पास जाया करती थी। उनके पास काश्मीर से लाल अक्षरों में लिखा हुआ पत्र आया करता था जिसे वह मुझे भी सुनाती थीं। सुनते-सुनते अन्दर सन्नाटा छा जाता था, एक लाईट सी अन्दर घूमती थी। उस पत्र को बार-बार सुनने की इच्छा होती थी। पत्र सुनने की इच्छा से मैं जैसे-कैसे उनके पास जाया करती थी।

एकबार मेरी मामी ने बाबा को एक महान पुरुष जान कर अपने घर में निमन्त्रण दिया। बाबा, ओम राधे, ध्यानि आदि ३० आत्मायें बस भर कर उनके यहाँ पधारे। मैं भी वहाँ पहुँच गई। पहले दिन जब सत्संग शुरू हुआ और सामने सिंहासन पर बाबा को देखा तो ऐसे लगा जैसे बाबा की भृकुटि में सफ़ेद प्रकाश का गोला चमक रहा हो। उस प्रकाश के गोले में आकर्षण था। मैं तो उसी की तरफ़ एकटक देखती रही। मन में विचार आया कि ऐसे महान पुरुष को तो कभी नहीं देखा ! जीवन में यह तो लक्ष्य था कि गुरु करना चाहिए क्योंकि यह सुन रखा था कि गुरु बिना गति नहीं। तो सोचा क्यों न ऐसे महान पुरुष को ही गुरु कर लें और उसी क्षण उन्हें गुरु बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया। ऐसा सोचते-सोचते ही सभा समाप्त हो गई और मैं वहाँ ही रहने लगी।

दूसरे दिन अमृत वेले बाबा ने ध्यानी बहन को कहा कि बच्ची को नक्शा समझाओ। अमृत वेले सतसंग के बाद बाबा ने मुझे 'तीन लोक' का नक्शा समझाया।

इस प्रकार बाबा सुबह-शाम सत्संग करते रहे। जितना समय बाबा वहाँ रहे मैं भी वहाँ ही रही। बस, मन में यही आता था कि भृकुटि में उस प्रकाश के गोले को ही देखती रहूं, फिर तो ज्ञान भी बुद्धि में घूमने लगा जिसे सुनने की बार-बार इच्छा उत्पन्न होती थी। उस दिन से बाबा से व इकट्ठे रहने के कारण अन्य बहनों से भी स्नेह जुट गया। बाबा ने समझाया कि देवलोक में वही जायेगा जो ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करेगा। फिर मेरे लौकिक पति भी वहाँ आने लगे। **उन्होंने जब बाबा से ज्ञान सुना तो उनका भी बाबा से रूहानी सम्बन्ध जुट गया और हम दोनों ने यह प्रतिज्ञा की कि विचारों में एक-दूसरे का साथ देंगे, जीवन को पवित्र बनायेंगे** और उसी समय से बाबा द्वारा बताई गई धारणाओं का हम पालन करने लगे। फिर बाबा वापस चले गए लेकिन पत्राचार जारी रहा।

### लौकिक बच्ची का बाल भवन में प्रवेश

जब हैदराबाद में बाल भवन बना तो हमें यह समाचार मिला कि जिन बच्चों के माँ-बाप ईश्वरीय ज्ञान की शिक्षा लेने ओम मंडली में आते हैं, वे बच्चे यहाँ रह सकते हैं। हमने अपनी एक लौकिक बच्ची शोभ्या, जो उस वक्त करीब १० वर्ष की थीं[2] और एक स्कूल में पढ़ती थीं, को स्कूल छुड़वा कर बाल भवन के छात्रालय में दाख़िल करवा दिया। इस

१. इन्हीं का नाम अब गुल्ज़ार बहन अथवा ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी है।

२. स्थानाभाव के कारण हम वह इस अंक में नहीं दे रहे।

ईश्वरीय छात्रालय को पढ़ाई देख कर हमारे अन्य सम्बन्धियों ने भी अपनी बच्चियों को वहाँ ही दाखिल करा दिया और स्वयं भी यह शिक्षा लेने लगे। इस प्रकार हम अपनी धारणाओं पर चलते रहे। इसी बीच हंगामे, पिकेटिंग आदि शुरू हो गये। उपद्रवियों ने खूब हल्ला मचाया। हरेक बच्चे को उनके अपने-अपने घर में रवाना कर दिया गया। उसमें शोभा भी आ गई। उनके आने से ऐसे लगता था जैसे एक अलौकिक दुनिया से लौकिक दुनिया में आ गये हैं। उनको जो शिक्षा मिली थी और जैसा वातावरण मिला था उसमें और अब घर के वातावरण में तथा रहन-सहन के तरीके में रात-दिन का फ़र्क था। इतना फ़र्क जितना ईश्वरीय पालना और जिस्मानी सम्बन्धियों की पालना में। यह देखकर मन में सदैव यह ख़याल आता था कि ईश्वरार्थ सेवा में दान दी हुई चीज़ (अपनी लौकिक बच्ची शोभा) को वापस नहीं लेना चाहिए। परन्तु बच्चे तो बच्चे ही होते हैं, उन्हें जैसे रखो, जिस ओर ढालो उसी तरफ़ ढल जाते हैं। घर वालों ने ऐसी ही कोशिश की थी। हम दोनों (मैं और मेरे लौकिक पति), जो एक-मत होकर चलते थे, के विचारों में अन्तर आ गया। एक तरफ़ सारा परिवार और दूसरी तरफ़ मैं। विचारों में अन्तर आ जाने के कारण मुझे संसार से वैराग्य आने लगा। मुझे यह संकल्प आता कि मैं पूरी तरह से ईश्वरीय सेवा करूँ, उसी प्रभु ही की बन जाऊँ और रात-दिन यही पुकार चलती रहती थी कि—'हे प्रभु, कब ये दोनों जीवन आपके हवाले होंगे?'

### हंगामे के कारण हम पर बन्धन

इसी बीच हैदराबाद में बहुत हंगामे होने के कारण बाबा कराची में आ गये। जब-जब मुझे मौका मिलता घूमने-फिरने या लौकिक सम्बन्धियों से मिलने के निमित्त कारण से मैं सुबह ४ बजे सत्संग में जाया करती थी। सत्संग भवन हमारे घर से लगभग १० मील दूर था। सवेरे एक ट्राम या घोड़े-गाड़ी मिलती थी। ट्राम सवेरे-सवेरे मज़दूरों को ले जाती थी, हम भी उसमें ही चढ़कर चले जाते थे। उन मज़दूरों की दृष्टि-वृत्ति तो ख़राब होती थी लेकिन हम इसी निश्चय के साथ कि—"जाको राखे साँईयां मार न सके कोय, बाल न बाँका कर सके चाहे सब जग बैरी होय", निर्भय होकर रोज़ सत्संग करके आठ बजे घर पहुँच जाती थीं। लौकिक पति कभी साथ देते थे और कभी नहीं देते थे। ऐसे चलते-चलते वैराग्य और भी बढ़ता गया। बच्ची शोभा को भी अन्य लौकिक सम्बन्धी इस मायावी दुनिया की ओर अधिक खींचने का यत्न करते थे। चलते-चलते कहीं उस संगत का, खान-पान का प्रभाव उस पर न पड़ जाय—यह सोचकर मन यही कहता था कि इसको इस मायावी दुनिया से बचाना चाहिये। यह देखकर लौकिक सम्बन्धी मुझ पर और भी अधिक बन्धन डालने लगे क्योंकि उनके मन में यह आता था कि स्वयं के साथ बच्ची को भी "बिगाड़ती है" (वे तब ईश्वरीय मार्ग पर ले जाने को बिगाड़ना मानते थे)। उन्होंने मेरा सत्संग में आना जाना बन्द कर दिया अब जब मुझ पर पूरी निगरानी रहने लगी तो ईश्वरीय प्यास को बुझाने के लिए मैं दिन के वक्त किसी-न-किसी कारण-वश घर से बाहर निकल जाती थी और दूसरे-तीसरे दिन अपने सत्संग के स्थान पर पहुँच ही जाती थी। कभी-कभी अपने ड्राईवर को भी थोड़ा समझा-बुझा-कर उससे मदद ले लेती थी वह कार में मुझे छोड़ आता था। इस प्रकार कुछ दिन यही चलता रहा। परन्तु आख़िर यह बात कब तक छिपती। जब सबको पता चला तो सब बहुत धमकाने डराने लगे क्योंकि ५० सदस्यों के बड़े परिवार में मैं ही सबसे छोटी थी। उस समय मैं उन्हें तो कुछ न कहती थी। बस, एक कोने में बैठकर भगवान् (शिव बाबा) को याद करती थी। मेरे कानों में यह आवाज़ गूँजा करती थी—

**क्यों हो अधीर माता गुरुकुल में आ बसा हूं**
**सन्ताप सख्त भारी अबला पर देख रहा हूं**
**क्यों हो अधीर माता···**

जिस समय यह गीत गाती थी, उस समय ऐसा अनुभव होता था कि बाबा हम आत्माओं में शक्ति भर रहे हैं जिसके आधार से ही हम जी रहे हैं। आख़िर एक दिन यह संकल्प आया कि इस स्वार्थी एवं विकारी दुनिया को छोड़कर ईश्वरीय दुनिया में क्यों न चलें? यदि अत्याचार न होते तो यह विचार न आते। अब यह दृढ़ संकल्प करके अमृत वेले ४ बजे शोभा को नींद से जगाकर; उसको साथ लेकर कराची सत्संग में पहुँच गई। सत्संग चल रहा था। बाबा की नज़र जब मुझ पर पड़ी तो बाबा ने पूछा—"बच्ची, कैसे आई हो?" बाद में और सबने भी पूछा। मैंने

कहा—"पुरानी दुनिया के धंधों को त्याग कर आई हूँ।" बाबा ने कहा—"बच्ची, ऐसे मौके पर, जबकि कराची में इतना हंगामा हो रहा है, तुम यहाँ कैसे रह सकती हो?" मैंने कहा—"नहीं बाबा—

**सत्गुरु मिलने जाइये, साथ न लीजे कोई,**
**आगे पाँव राखिये पीछे पाँव न होई।**

अब तो मेरा पाँव सद्गुरु के घर में है; अब यह पीछे कैसे हट सकता है।" फिर दयानिधि बाबा ने कहा—बच्ची पर सितम होता है, अच्छा जब बच्ची कहती है कि मैं सिलाई की क्लास में रहूँगी तो फ़िल हाल इसे वहाँ रहने दो और अगर कोई पूछे तो कहना कि वह स्युइंग क्लास (Sewing Class) में है।

**लोगों की अफवाहों के कारण हम पर अत्याचार**

इस प्रकार सारा दिन बीत गया। मन में संकल्प आता था कि कहीं काई खींचकर वापस न ले जावे। शाम के ६ बजे थे। एक टैक्सी लेकर मेरा पति और अन्य सम्बन्धी पधारे। दो व्यक्ति बाहर ही रहे, और दो अन्दर भवन में आ गये। कहने लगे—"हम रुक्मणी से मिलना चाहते हैं। बाबा की अनुमति से उन्हें अन्दर आकर मिलने की स्वीकृति दे दी गई। उन्होंने मुझसे पूछा—"तुम यहां क्यों आई हो? मैंने कहा कि मैं सत्संग के बिना नहीं रह सकती। अब हम दोनों (मैं और शोभा) यहाँ ही रहेंगे। अपने हाथ से मेहनत करके शरीर-निर्वाह करेंगे। हम सिलाई का काम करेंगे। यह सुनकर उनकी आँखें गुस्से से लाल हो गईं और उसी कम्पाउन्ड में, जहाँ मैं उन्हें मिल रही थी, उन्होंने मुझे खींचा, उठाया और हाथ-पाँव से पकड़कर टैक्सी में डाल दिया। टैक्सी में उन चारों (लौकिक देवर, दो मामे और लौकिक पति) ने मुझे कस कर पकड़ रखा और टैक्सी चल दी। मैंने भी उस टैक्सी के दरवाज़े से निकलने की पूरी कोशिश की। मैंने कहा—"आज मैं मर जाऊँगी, आपके साथ नहीं जाऊँगी। आपघात कर लूंगी लेकिन इस रीति से घर नहीं जाऊँगी।"

यह बात सुनकर उन्हें, विशेषकर पति को, मुझ पर या तो रहम आने लगा या वे डर गये और वे पूछने लगे कि क्या तुम अलग रहना चाहती हो? वे मुझे ५ मील दूर एक दोस्त के ख़ाली फ़्लैट में ले गये और कहने लगे—"हम तुम्हें अलग रखते हैं; तुम आपघात न करो।" मैंने कहा—मेरी चार बातें सुन लो। (१) मैं अलग रहूँगी अर्थात जो जीवन को अशुद्ध बनाने के लिए दबाव डाल तेहैं उनके साथ नहीं रहूँगी। (२) दिन में एक बार सत्संग में ज़रूर जाऊँगी। (३) शोभा को घर वापस नहीं लाऊँगी (४) सभी नियमों (ब्रह्मचर्य, शुद्ध अन्न आदि के नियमों) पर चलूँगी। आप मुझे इन चारों बातों की स्वीकृति की चिट्ठी लिखकर दो, वर्ना तो मैं आपघात कर लूँगी। (सम्बन्धी सभी चले गये थे, सिर्फ़ लौकिक पति ही साथ थे) और मैं चुन्नी लेकर गला घोटने लगी।

उन्होंने मुझसे पूछा—"तुम घर से निकलना क्यों चाहती हो? आपघात क्यों करती हो?"

मैंने कहा—मैं सत्संग छोड़ नहीं सकती, नियमों को छोड़ नहीं सकती, बच्ची को ईश्वरीय पढ़ाई तथा सेवा में देकर वापस ले नहीं सकती। आप ना तो मेरी बात मानो नहीं तो मैं आपघात करूँगी। रात का समय था। उन्होंने सोचा कहीं कोई ऐसी घटना न घट जाये तो चारों ही बातों का स्वीकृति पत्र लिख कर दे दिया। शायद यह उसी अविनाशी ज्ञान के बीज का था जो पति में भी पड़ा हुआ था। प्रभात अमृत वेले ४ बजे, उसी अकेले मकान से मुझे वे सत्संग में ले गये।

जब मैं वहाँ पहुँची तो सभी आश्चर्यचकित रह गये। कल तो इसको हाँथ-पाँव पकड़ कर, उठाकर ले गये थे, आज सवेरे ही फिर यह कैसे पहुँची! फिर तो शोभा भी वहाँ ही रहने लगी। लगभग ढाई मास तो ये चारों बातें ठीक चलीं। धीरे-धीरे उस घर से फिर मुझे अपने बंगले में ले चले। वे कहते थे कि हम रोज़ तुझे सत्संग में ले आयेंगे परन्तु अपना मकान होते हुए ३०० रुपये फ़ालतू इस बंगले के किराये पर क्यों खर्चें? वहाँ अपने मकान में भी कुछ समय तो ठीक चला। परन्तु फिर वही सत्संग बन्द करने की सख़्ती शुरू हो गई।

**फिर वही ढाक के तीन पात**

अब फिर लौकिक सम्बन्धी लौकिक पति को उल्टा पाठ पढ़ाने लगे। व्यापार इकट्ठा होने के कारण बड़े भाइयों का छोटों पर बहुत प्रभाव था, अतः मेरा पति उनकी बात मानने पर मज़बूर हो जाता था। अब उन्होंने भी रोकना-टोकना शुरू कर दिया। स्वयं को बन्धन में देखकर एक दिन मैं किसी बहाने से फिर सत्संग में पहुँच गई। उन्होंने जाँच की तो

उन्हें वहाँ जाने की बात मालूम हो गयी। अतः अब उन्होंने सारे घर में ताला लगा दिया। मैंने कहा अगर आप मुझे जेल में बन्द रखते हैं तो मैं भोजन नहीं खाऊँगी। आप आत्मा का भोजन बन्द करते हैं तो मैं शरीर का भोजन बन्द कर दूँगी। शरीर छूट जायेगा तो मैं प्रभु की बन जाऊँगी। ताले लग गये, पहरेदार खड़े हो गये। छोटे-बड़े-सभी को यह बता दिया गया—'इसकी पूरी निगरानी की जाये।' दो-तीन दिन खाना न खाने के कारण मेरा शरीर कमज़ोर हो गया परन्तु आत्मा को सूक्ष्म शक्ति रूप भोजन मिलता रहा। सबको डर लगने लगा कि कहीं इसका शरीर न छूट जाये। बहुत बार उन्होंने मायावी दुनिया की तरफ़ बहलाने की कोशिश की परन्तु जो मन एक बार प्रभु का हो चुका था, वह अब और किसी का कैसे हो सकता था?

मैंने रंगीन वस्त्र, ज़ेवर आदि उतार कर सफ़ेद कपड़े पहन लिये थे। घर वालों को यही विचार आता था कि अमीरी से ग़रीबी को कैसे देखेंगे? वे सोचते थे कि यह स्वयं ही ठीक हो जायेगी।

### इधर सितम उधर प्रभु-कृपा

इधर रात-दिन ऐसे सितम सह रही थी, उधर प्रभु-कृपा से साक्षात्कार होने लगे। विष्णु के रूप में बाबा आकर यही कहते थे कि—"बच्ची, धैर्य धरो! ये कष्टों की दुनिया, सितमों की दुनिया अब गई कि गई। इससे पार करने के लिए मैं आ चुका हूँ।" जब यह आवाज़ सुनती थी तो मुझे तसल्ली होती थी कि इस जेल ख़ाने में मेरा भी कोई रक्षक है। फिर मैं बाबा के साथ बात भी करती थी जो बाहर वाले भी सुनते थे जिससे उनको यह लगता था कि इसकी लग्न पक्की होती जा रही। परन्तु वे सब तो इतने सहानुभूतिहीन थे कि उन्होंने बहुत ही निर्दयतापूर्वक व्यवहार किया, मेरी एक भी बात नहीं मानी। मन में यही आता था कि आख़िर इस जेलख़ाने में कब तक रहूँगी; अब इससे कैसे छूटूँ। कोशिश तो बहुत की कि चाबी मिल जाये परन्तु नहीं मिली। मैंने सोचा कि कहते हैं कि जब प्रहलाद पहाड़ी से कूदा तो इसे भगवान् ने बचाया। तब मैं भी तो उस प्रभु ही की हूँ; तो मैं भी क्यों न इस गैलरी से छलांग लगा दूँ? भगवान् मुझे भी अवश्य बचायेंगे। यह संकल्प दृढ़ होता गया! अन्दर ही अन्दर तैयारी चलती रही। जो भी सामान था, (कपड़े ज़ेवर आदि) उसकी लिस्ट बनाकर बाहर की अलमारी में रखी ताकि कहीं उनका ये संकल्प न चले कि सामान लेकर चली गई। मैंने एक रज़ाई को दो-तीन लपेटे देकर नीचे डाल दी ताकि उस पर छलांग लगाने से आवाज़ नहीं आयेगी।

### प्रभु के आसरे पर विकारों की जेल से छूटने का यत्न

जब रात को १२ बजे, सब सो गये, तो मैंने छलांग लगानी चाही। नीचे नज़र डाली तो चौकीदार घूम रहे थे। उस समय छलांग लगाना मैंने उचित न समझा। यह सोचते-सोचते मेरी नज़र साथ वाले बंगले की ओर गई जिसकी गैलरी हमारी गैलरी से ८-१० फुट दूरी पर थी। विचार चला कि वहाँ पहुँच कर उनकी सीढ़ियों से चली जाऊँगी। इसके सिवा उस जेल से निकलने का और कोई उपाय नहीं दीखता था। इसमें बहुत ख़तरा था परन्तु क्या करती?

गर्मियों के दिन थे। उस परिवार वाले उस गैलरी में सो रहे थे। रात को एक बजे मैंने चलकर अपनी गैलरी से उनकी गैलरी में छलांग लगा दी। जैसे ही मैं वहाँ उतरी, मेरा पाँव उनके बच्चे को लगा। वह बच्चा रोने लगा, उसकी माँ जाग गई। मैं जल्दी से उनके कमरे में अन्दर आ गई। मैं सोचने लगी कि अगर इन्होंने मुझे देख लिया तो पता नहीं क्या कहेंगी। परन्तु फिर सोचा कि शिव बाबा तो साथ है ही और मेरे मन में भी कोई ख़राबी तो है नहीं। ख़ैर उस माता ने मुझे नहीं देखा और मैं वह गैलरी पार करके आगे बढ़ने लगी और हाथ से टटोलने लगी कि बिजली का स्विच कहाँ है ताकि सीढ़ियों का पता चले। कमरे के बाहर आने पर एक स्विच पर हाथ पड़ा। मैंने जैसे ही बत्ती जलाई मकान मालिक जाग गया और इधर-उधर देखने लगा। मैंने फ़ौरन बिजली बन्द कर दी। मकान मालिक फिर सो गया। फिर मैं आगे बढ़ी तो एक दरवाज़े पर हाथ लगा। उसको खोला तो सीढ़ी नज़र आई। सीढ़ी से नीचे उतरी तो वहाँ सामने एक होटल था। वहाँ से आवाज़ आ रही थी। उस वक्त मेरे मन में यही आया—

**जिसके सिर ऊपर तू मेरे रक्षक स्वामी,**
**वह दुःख कैसे पाये!**

(पृष्ठ २९ देखिये)

यह चित्र बंगलौर (विश्वेश्वरपुरम) द्वारा 'बालवर्ष' के उपलक्ष में आयोजित 'बाल रैली का है। विभिन्न स्कूलों के बच्चोंने शहर के मुख्य भागों से शान्ति यात्रा निकाली तथा 'पवित्र और योगी बनने का ईश्वरीय संदेश दिया।

यह चित्र बंगलौर में "बाल दिवस समारोह' के अवसर का हैं। चित्र में एक छोटी सी कन्या प्रवचन कर रही हैं। मंच पर ब्र० कु० जमना, पब्लिक इन्सटक्शन की ज्वायंट डायरेक्टर तथा ब्र० कु० हृदय पुष्पा बैठी हैं।

↓

यह चित्र भावनगर सेवाकेन्द्र द्वारा धधुंवा ग्राम में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के अवसर का है। वहाँ के तालुका पंचायत की उपाध्यक्ष अपने विचार प्रकट कर रही हैं तथा मंच पर ब्र० कु० सरोज, तालुका पंचायत के प्रधान तथा ब्र० कु० गोविन्द भाई बैठे हैं।

यह चित्र चण्डीगढ़ सेवाकेन्द्र द्वारा मोहाली में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर का है। लेफ्टीनेन्ट कर्नल (रिटायर्ड) भ्राता अजीतसिंह टेप काटकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं। वहाँ के बहन-भाई साथ में खड़े हैं।

↓

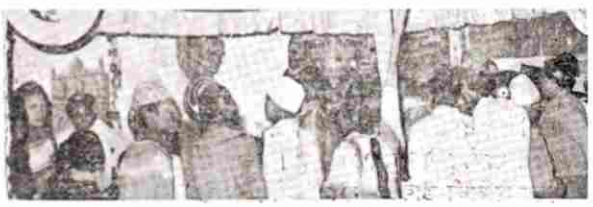

यह चित्र नेपाल में आयोजित विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी के अवसर का है। ब्र० कु० शशि चित्रों की व्याख्या कर रही हैं तथा उपस्थित जनता बड़े ध्यानपूर्वक सुन रही हैं।

यह चित्र भीलवाड़ा में आयोजित [illegible] समारोह के अवसर का है। आदर्श विद्या-निकेतन की छात्रा प्रवचन कर रही है। मंच पर भूतपूर्व लोकसभा सदस्य श्री [illegible] ब्र० कु० कुमुद, ममता तथा ब्र० कु० [illegible] बैठे हैं।

यह चित्र मेरठ सेवा केन्द्र द्वारा कंकड़खेडा में खोली गई गीता पाठशाला के उद्घाटन के अवसर का है। मंच पर ब्र० कु० कमल सुन्दरी जी एवं ब्र० कु० विनोद बैठी हैं। और ब्र० कु० भगवान जी खड़े हैं तथा दो बच्चे माया और प्रभु का संवाद कर रहे हैं।

यह चित्र [illegible] मण्डी में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर का है। बहादुरगढ़, सोनीपत तथा नई दिल्ली के बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र दावणगेरे में आयोजित बाल वर्ष समारोह के अवसर का है। चित्र में मुख्य अतिथी डाक्टर नगन गोवड़ा के साथ वहाँ के बहन भाई बैठे हैं।

(पृष्ठ २६ का शेष)

दरवाज़ा खोलने लगी पर वह नहीं खुला। शिव बाबा को मन-ही-मन बहुत याद किया और सोच लिया कि अब कदम आगे बढ़ाया है तो पीछे नहीं हटाना है। रक्षक मेरी रक्षा करे ! फिर मैंने दरवाज़ा खोलने की कोशिश की। हाथ लगते ही लोहे की पट्टी ऊपर उठी, दरवाज़ा खुल गया। जैसे ही दरवाज़ा खोला तो देखती क्या हूँ कि उसी वक्त चौकीदार दरवाज़े के सामने से आगे चला जा रहा था। मैं बाहर निकली, दरवाज़ा बन्द किया। अब डेढ़ बज चुका था। दीवार से कूदने के कारण मैंने चप्पल भी नहीं पहना था ताकि कोई उस आवाज़ से उठ न जाये और कपड़े भी बाँध लिये थे ताकि छलांग लगाते समय कहीं अटक न जाये। **'जिसके ऊपर तू मेरा रक्षक स्वामी, वह दुःख कैसे पाये'**—यह मन ही मन गुनगुनाते हुए नंगे पाँव रास्ता पार करने लगी।

### परीक्षा के बाद परीक्षा

उसी समय बारिश ने भी स्वागत किया। रास्ते में एक सिपाही मिला। जब उसने देखा कि एक स्त्री रात के अंधेरे में नंगे पाँव वर्षा में जा रही है तो उसने पीछा किया कि आख़िर जाती कहाँ है। रास्ते में और भी सिपाही मिले। वे भी उनके साथ हो मेरा पीछा करते गये। घर से तीन मील की दूरी पर बाजार था। वहाँ से गाड़ी मिलती थी। मैंने सोचा वहाँ से गाड़ी में बैठकर आश्रम में पहुँच जाऊँगी। इस प्रकार सोचती हुई चली जा रही थी। पुलिस वाले मिलकर आठ हो गये। उन्होंने मुझ से पूछा —"कहाँ जा रही हो ?" मैंने कहा—"सत्संग में जा रही हूँ।" लेकिन फिर भी उन्होंने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। वे कहने लगे—"इस समय सत्संग में कैसे जाओगी ? मैंने गाड़ी वाले को कहा कि दस मील दूर सतसंग में ले जाओ। पुलिस ने सोचा कि कहीं और ही न ले जाय, उन्होंने कहा —"अभी थाने में चलकर बैठो, सुबह होते ही चली जाना।" नंगे पाँव और रात के कपड़े देखकर उन्होंने सोचा कि शायद यह अच्छी नारी भी है या नहीं। उन्होंने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। उस समय प्रभु को पुकारा—"हे प्रभु, अब रक्षा करो ! भक्तों पर, भीड़ पड़ी है, उसे आप ही तो सँवारेंगे !"

पुलिस और भी इकट्ठी हो गई। मैंने सोचा—अब कहाँ जाऊँ ? आश्रम तो १० मील दूर था। दूसरे के घर से कूदी थी तो थोड़ी देर मन में हलचल भी मची। फिर मन से आवाज़ आई—

**जिसके ऊपर तू मेरा रक्षक स्वामी**
**सो दुख कैसे पाये !**

### मुसीबत अकेली नहीं आया करती

मैंने सोचा क्यों न लौकिक पियर घर में अपनी लौकिक माँ के पास जाऊँ ? मैंने पुलिस वालों को कहा कि मुझे सत्संग में ४ बजे जाना था लेकिन अगर अभी २ बजे हैं तो मैं तब तक अपनी माँ के पास चली जाती हूं। इलाके-इलाके के सिपाही इकट्ठे होते-होते अब तक २५ हो गये। रास्ता पार कर मैं २५ पुलिस वालों के साथ माता जी के दरवाज़े पर पहुँची। दरवाज़ा बन्द था। सब सो रहे थे। माता जी तीसरी मंज़िल पर थीं। मैंने दरवाज़ा खटखटाया परन्तु उन्होंने नहीं सुना। माता जी के घर के नज़दीक ही गंगा देवी (मेरी लौकिक मामी जी) का घर था। वहाँ के चौकीदार ने जब देखा कि हमारे घर की लड़की नंगे पाँव आई है और साथ में २५ पुलिस वालों को लाई है तो उन्होंने मुझ से बिना कुछ पूछे ही मामा जी को इतला दे दी। मेरे दोनों मामे, जो इस ईश्वरीय ज्ञान के बिल्कुल ख़िलाफ़ थे, आये। उन्होंने पुलिस को कहा—"आप जाइये, यह हमारी लड़की है।" पुलिस तो चली गई। मामा जी ने बहुत ही क्रूरता से मुझसे व्यवहार किया। वे मेरे सम्मुख आये और पूछने लगे—"क्या हुआ, इस समय कहाँ से आई हो ? तुमने हमारी इज़्ज़त ख़ाक में मिला दी है। क्या यह शोभा देता है कि तुम इतनी छोटी-सी हो और इतनी पुलिस के साथ आई हो ? तुम तो हमारे घर की आबरू ख़त्म करने के लिए पैदा हुई हो।" उन्हें मालूम था कि मैं तालों में बन्द थी; वे कहने लगे अब अपनी ज़िद्द छोड़ो, जैसे वे कहते हैं, वैसे करो !"

मैंने कहा—"मामाजी, अब मेरी छुट्टी है, इसलिए आज सत्संग में जा रही हूँ। घड़ी रुक जाने के कारण मैंने समझा ४ बज गये हैं लेकिन बजे हैं अभी दो। मैंने कहा कि चलो अपनी बहन रुक्मणी के साथ ही चली जाऊँगी (रुक्मणी मेरी छोटी बहन हैं)। पुलिस वाले साथ हो लिये थे, बाकी ऐसी कोई बात नहीं है। "फिर मैंने दरवाज़ा खटखटाया। माताजी ने सुना और वह नीचे आयीं। मैंने मामा जी से कहा—"माता जी, आप जाकर आराम कीजिये, मैं ऊपर

चली जाऊँगी और सवेरे रुक्मणी के साथ ही सत्संग में चली जाऊँगी। मैं समझती हूँ कि यह भगवान् (शिव बाबा) की ही कृपा थी कि मामाजी जाकर सो गये ! फिर तो ऊपर आकर माताजी को सारी दुःख-भरी दास्तान सुनाई कि कैसे मुझे इतने दिन उन्होंने तालों में बन्द रखा। मैंने खाना भी नहीं खाया। उन्हें भी यह सुनकर वैराग्य उत्पन्न हुआ। मैंने कहा—"इतने दिनों से सत्संग में नहीं गई हूँ। आज रुक्मणी बहन भी मेरे साथ चलेगी। हम ठीक ४ बजे घोड़ा-गाड़ी लेकर कुंज भवन वाले मकान में पहुँच गये। कुंज भवन वहाँ से लगभग १४ मील दूर था। आख़िर हम सत्संग में पहुँचे।

### नया जीवन

बाद में मातेश्वरी जी और पिता-श्री जी से मिलना हुआ। मैंने उन्हें बताया कि आज हमने आसुरी जीवन का त्याग कर ईश्वरीय जीवन बनाने का कदम उठाया है। आज मैं बीते हुए जीवन को इस ड्रामा की रील में समाप्त कर देने की प्रतिज्ञा करती हूँ। बाबा यह सुनकर मुस्कराये। मातेश्वरी जी ने कहा —"इसके लिये बहुत हिम्मत चाहिए। तुम्हारे लौकिक सम्बन्धी आयेंगे और फिर ऐसे ज़ोर-ज़बर-सितम करेंगे। माया भिन्न-भिन्न रूपों से आयेगी। इतनी हिम्मत है कि इन लौकिक सम्बन्धियों की निर्दयता का, सितमों का, सब प्रकार की परीक्षाओं का सामना कर सको? मेरे निश्चय की नींव की मज़बूती देखने के लिए मातेश्वरी जी ने ऐसी कई बातें सुनाईं। परन्तु हमने कहा उन मायावी मनुष्यों को चाहिए—भौतिक सुख-सामग्री; मैं सब-कुछ (धन, ज़ेवर आदि) उनको देकर आई हूँ; तभी तो नंगे पाँव आई हूँ। ईश्वर से मिलने के लिए कदम उठाया है तो आज मेरी यह प्रतिज्ञा है कि—"हे प्रभु, जहाँ बिठाओगे, जो पिलाओगे, जैसे रखोगे वैसे रहेंगे।"

यह सुनकर मातेश्वरी जी और पिता-श्री जी मुस्कराये। उस दिन से मैं कुंज भवन में रहने लगी। वह दिन मेरे लिये पुरानी दुनिया से मरने और ईश्वरीय दुनिया में जीने का शुभ दिवस था।

### अब उधर क्या हुआ ?

अमृतवेले घर वालों को जब पता चला कि मैं वहाँ नहीं हूँ, दरवाज़े बन्द हैं, ताले लगे हैं तो उन्होंने चौकीदार से पूछा। उसने कहा—"मुझे नहीं पता।" फिर जब साथ वालों ने अपना दरवाज़ा खुला देखा तो उन्होंने समझा कि चोर आया है। जब देखा कि किसी भी चीज़ की चोरी नहीं हुई है तो सबने यही नतीजा निकाला कि वह ज़रूर गैलरी कूद कर गई है। उन्हें एक तरफ़ तो ५ वर्ष याद आ रहे थे जो मैंने ईश्वरीय धारणाओं में बिताये थे और दूसरी तरफ़ मन में यह भी था कि जैसे बुद्ध दुनिया से वैराग्य करके रात्रि को २ बजे जंगल में गये थे, इसने भी धन, ज़ेवर आदि का त्याग किया है तो ज़रूर कुछ और उच्च मिला है।"

### वे फिर पीछा करने आ गये !

मन-ही-मन इस बात पर विचार करते हुए वे शाम को ४ बजे कुंज भवन में पहुँच गये। उन्होंने कहा—"हमें रुक्मणी से मिलना है। मातेश्वरी जी ने कहा—"अवश्य मिलो। मुझे पहले तो थोड़ा डर लगा कि पता नहीं अब फिर क्या कहेंगे और क्या करेंगे। लेकिन फिर तो शिव-शक्ति बनकर मैं उनके सामने गयी। मैंने साफ़ शब्दों में कह दिया कि मैं आपकी पुरानी दुनिया से मर चुकी हूँ, इसलिए अब मेरा पीछा न करो।" अगर आपको मायावी दुनिया पसन्द है तो आप बेशक दूसरी शादी करो, यदि चाहते हो तो माया के सुख लूटो। वे सुख अगर मुझे अच्छे लगते होते तो मैं सब-कुछ आपको न दे आती। ज़रूर उससे कुछ उच्च प्राप्ति हुई है, तभी तो उसको त्याग कर यह जीवन बिताना चाहती हूँ। लौकिक पति ने कहा —"मैं शादी करना चाहता हूँ, तुम मुझे लिखकर दोगी ?" मैंने कहा—"आप मालिक हैं पुरानी दुनिया के सुख लूटने के। मैं मालिक हूँ ईश्वरीय सुख लूटने के लिये। आप चाहते हो तो शादी करो, लिखवाने की कोई ज़रूरत नहीं है। फिर तो वे एक सप्ताह तक रोज़ आते रहे। कभी मोह के, कभी लोभ के रूप से वे मुझे ईश्वरीय मार्ग से हटाने के यत्न करते रहे। मैंने कहा—"मेरा तो एक ईश्वर ही है। लौकिक मामीजी, जिसके घर से पहले-पहले ईश्वरीय ज्ञान का तीर लगा था, ने बताया कि ईश्वरीय जीवन बिताना कोई इतना सहज नहीं। सोच लो, सारे जीवन का फ़ैसला जल्द-बाज़ी में न करो। बहुत परीक्षायें आयेंगी, क्या आप में उनको पार करने की शक्ति है ? ज्ञान तो

हमने भी लिया है परन्तु दुनिया की हालतों को देख-कर घर में रहते हुए निमित्त पार्ट बजाना है। सोच-समझ कर कदम आगे बढ़ाना। मैंने कहा जबकि सत्गुरु के दर पर आये हैं तो पीछे क्यों हटा रही हो? आपने ही तो यह शिक्षा दी थी।

सत्गुरु मिलने जाइये, साथ न लीजे कोई
आगे पाँव धरिये, पीछे पाँव न होई।

यह मेरा दृढ़ संकल्प है, इससे मुझे कोई हटा नहीं सकता। मामी ने कहा—यह तो मैंने सोचा भी नहीं था कि आप इस प्रकार चल पड़ोगी। अभी आप जोश में हो, कुछ होश भी रखो! मैं भी तो ऐसे चल ही रही हूँ न? मैंने कहा—"हरेक का अपना-अपना पुरुषार्थ है। इस प्रकार एक सप्ताह तक माया ने अनेक मोहिनी रूप दिखाये। आख़िर उन्होंने मुझसे लिखवाया, मैंने लिख दिया कि आप जो चाहे सो कर सकते हैं।

यह थी देह के सम्बन्धों से ममता टूटने की अन्तिम घड़ी। ऐसा था यह अनैतिकता का नैतिकता से संग्राम जब बिगल बजाया था परमात्मा ने। ●

# बाप-दादा

ब्रह्माकुमार करुणा शंकर, बम्बई

( १ )

सुना आज मुरली में बोले हैं बाबा।
कहो बाप-दादा, कहो बाप-दादा॥
मिटेगी फ़िकरिया, कटे कोटि व्याधा।
रहे न ग़रीबी मिले माल ज़्यादा॥
बनोगे तुम्हीं स्वर्ग में कृष्ण राधा।
कहो बाप-दादा कहो बाप-दादा॥

( २ )

तुम्हीं सच्चे ब्राह्मण हो कर्त्तव्यधारी।
रचयिता तुम्हीं विश्व-कल्याणकारी॥
आधार-उद्धार की ज़िम्मेदारी।
सहायक ही मेरी है आशा तुम्हारी॥
निभाना पड़ेगा तुम्हें अपना वादा।
कहो बाप-दादा कहो बाप-दादा॥

( ३ )

तुम्हीं सूर्यवंशी हो लक्की सितारे।
नूरे रत्न मेरे नैनों के तारे॥
तुम्हीं दिल तख्त नशीं प्राण प्यारे।
हम हैं तुम्हारे तुम ही हमारे॥
बनो फिर से मालिक यही है इरादा।
कहो बाप-दादा कहो बाप-दादा॥

( ४ )

योगी बनो कर्म-बंधन को तोड़ो।
माया की महफ़िल से मनवा को मोड़ो॥
सारे सम्बन्ध बच्चो मुझसे ही जोड़ो।
मेरे लिए सारी दुनिया को छोड़ो॥
मैं तो बनाऊँ तुम्हें शहज़ादा।
कहो बाप-दादा कहो बाप-दादा॥

( ५ )

सुनो मीठे बच्चो न ग़फ़लत में आना।
दुनिया बदलकर तुम्हें है दिखाना॥
आया हूँ मैं ले खुशी का ख़ज़ाना।
लूटो-लुटाओ बदल दो ज़माना॥
"करुणेश" हूँ मैं इसी पर आमादा।
कहो बाप-दादा कहो बाप-दादा॥●

# कैसी अद्भुत थीं वह सुहावनी घड़ियाँ !

ले०—ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र, देहली

साकार बाबा के साथ जीवन की जो घड़ियाँ बीतीं, वे सभी निस्सन्देह अत्यन्त अनमोल घड़ियाँ थीं। उनके संग और सम्पर्क की वे घड़ियाँ इस आत्मा पर अमिट छाप छोड़ गई हैं। इस ईश्वरीय ज्ञानमय जीवन के प्रारम्भ ही से बाबा की हरेक कृति को मैं अपने लिए एक कृपा मानता हूँ। मुझ प्रभु-प्यासी आत्मा को योग-युक्त करने के लिए बाबा ने क्या नहीं किया होगा? मुझ पर उनका अकारण प्यार एक ऐसा प्यार था जो अनिर्वचनीय है। दिन हो या रात, सोने का समय हो या जागने का, उनकी कृपा-दृष्टि एक चुम्बक की तरह मुझ लोहे को अपनी ओर खींचे चली जाती थी। इसके उदाहरण स्वरूप जीवन में अनन्त घटनायें हैं जिनका उल्लेख किया जा सकता है। उनमें से दो-एक जो तुरत मेरे मन पर उभर आये हैं, उन्हें यहाँ लिपि-बद्ध कर देता हूँ :—

### याद की तार कैसे जोड़ी जाती है ?

ये वृत्तान्त सन् १९५३ का है। तब इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का मुख्यालय भरतपुर के महाराजा की 'बृज कोठी' में स्थित था। यह कोठी आज भी माऊण्ट आबू में, वर्तमान बस अड्डे से कोई डेढ़ फ़र्लांग आबू रोड़ की ओर है। उस कोठी का एक हिस्सा था जिसका नाम था—'सरदारी क्वार्टर्स। उसके ऊपर की मंज़िल में बड़े-बड़े कमरों में बहुत बड़ी-बड़ी चारपाइयाँ ही पड़ी थीं। एक दिन की बात है कि रात्रि को बाबा उस कमरे में लेटे हुए थे और वे ईश्वरीय जीवन, ईश्वरीय ज्ञान इत्यादि की मीठी-मीठी बातें हम पाँच-सात उपस्थित जनों से काफ़ी देर तक बड़ी सहृदयता और बड़े वात्सल्य से करते रहे थे।

उन बातों से आत्मा को बड़ा सुख अनुभव हुआ और उनको सुनते-सुनते योग में ऐसी स्थिति हुई कि मन करता था कि श्री-मुख से यह चर्चा होती रहे ताकि ये आत्मा आज पुर्णतः धुलकर योग की उच्चतम पराकाष्ठा का पारावार पा ले। इतने में ही जो वरिष्ठ बहनें मेरे साथ बैठी थीं, उन्होंने कहा—"जगदीश भाई, अब चलो, बाबा को आराम करने दो; काफ़ी देर हो गई है।" मैं मन मसोस कर रह गया। अपने प्रियतम के आराम में ख़लल कैसे डाल सकता था? बाबा ने मुस्कुराते हुए चितवन से कमल नयनों को विशेष आभा देते हुए मेरी ओर निहारा और मैं उस चित्र को मन के फ्रेम में जड़कर वहाँ से प्रस्थान करने लगा। एक विचित्र दशा थी। मन नहीं जाना चाहता था, बुद्धि जाने का निर्णय देती थी और टाँगें इस असमंजस में थीं कि वे मन की बात मानें या बुद्धि की! लाचार चल रहा था परन्तु चलते समय भी ऐसा अनुभव होता था कि आज पाँव पृथ्वी पर नहीं हैं (छत पर भी नहीं हैं), बल्कि मैं स्वयं को प्रकाश के एक समुद्र में विदेह अव्यक्त में स्वयं को अनुभव करता था। एक अजब सरूर को लिए हुए धीरे-धीरे नीचे उतर आया। नीचे कुछ कमरे थे जिन्हें 'धोबी क्वार्टर' कहते थे क्योंकि वहाँ दो कमरों में कपड़े प्रैस होते थे। उसके निकट ही कई ख़ाली कमरे थे। मैं उसी ओर बढ़ रहा था क्योंकि उस रात्रि को मेरे शयन की वहाँ व्यवस्था थी। जब मैं बाहर आकर चल रहा था तो चाँदनी की सफ़ेद छटा छिटक रही थी। उसने मेरी उस प्रकाशमय स्थिति को और बल दे दिया। चलने में मैं अपने कमरे तक आ पहुँचा। वहाँ आकर कुछ देर अपनी चारपाई पर इसी मस्ती में बैठा रहा क्योंकि उस स्थिति में नींद का तो नाम ही नहीं था। आख़िर कब तक बैठा रहता? उसी कमरे में वहीं लेट गया।

परन्तु बाबा को वह तस्वीर भुलाये नहीं भूलती थी। उस मौन चित्र से मेरे मन में ऐसे आवाज़ आती कि—"बच्चे, ये तुम्हें विदा कर रहे हैं। तुम इन्हें जाने दो और अभी तुम भी चले जाओ, फिर मैं तुम्हारे पास आऊँगा।" बस, यही अव्यक्त आवाज़ भीतर के कानों में गूँजती रही। वही मुस्कान भीतर की आँखों के सामने आती रही और वही बन्द होंठ कुछ बोलते हुए सुनाई देते रहे और वही नयन कुछ आँखों से

इशारा करते हुए महसूस होते रहे। इस अजब हालत में समय गुजरते पता भी नहीं चला परन्तु आज सोचने से ऐसा लगता है कि तब रात्रि के १२-३० या १-०० का समय हो गया होगा क्योंकि लगभग ११ बजे तो मैंने बाबा के यहाँ से प्रस्थान ही किया था। इतने में देखता क्या हूँ कि अकेले बाबा उस कमरे में मेरे सामने आ खड़े हुए हैं और प्यार से पुचकार कर कह रहे हैं -"क्यों बच्चे, नींद नहीं आ रही ?" बाबा को देखकर मुझे बेहद खुशी भी हुई और साथ-साथ मुझे अपनी आँखों और अपने कानों पर एतबार भी नहीं होता था। मैंने थोड़ा उठने की कोशिश की कि बाबा की ओर बढ़ूं परन्तु बाबा ही मेरे सिरहाने की ओर बढ़े और मस्तक पर हाथ रखते हुए बोले – "बच्चे, अब सो जाओ, फिर सुबह मिलेंगे।" काश, मुझे वह शिष्टाचार भी नहीं आया कि उठकर बाबा के कमरे तक साथ चला जाता, परन्तु यह बाबा का हीप्रभाव था, कि बस, यादों में खोए हुए मुझ पर धीरे-धीरे नींद ने अपनी चादर डाल दी। बस, इसके बाद जब प्रातः मैं उठा तो रात का वही दृश्य फिर याद हो आया और मैंने सोचा कि हमारे बाबा शिव बाबा के माध्यम होने से—दोनों– किस प्रकार हमारी याद से अपनी याद का तार जोड़े हुए हैं और किस प्रकार वह करुणाकर एक नाचीज़ बच्चे के याद करने पर उसके प्यार की (बिना तार की) डोरी से खिंचे चले आते हैं और अपने वरद् हस्तों से उसे दुलार देकर सुलाते हैं। यह सब तो अनुभव की बात है, परन्तु इससे यह भी तो स्पष्ट हुआ कि ज्ञान और प्रेम की डोरी द्वारा बाबा से याद की तार कैसे जोड़ी जा सकती है।

○ ○ ○

इसी प्रकार के अनुभव कई बार हुआ करते। मैं पाण्डव भवन में पहले जब-कभी भी जाया करता तो नये भवन का कुछ हिस्सा बन जाने पर मेरे रहने की व्यवस्था प्रायः उसी कमरे में होती जिस कमरे में अभी निर्वैर भाई रहते हैं। सामने ही बाबा का कमरा था। रात को क्लास इत्यादि समाप्त होने के घण्टा-दो घण्टे बाद तक भी बाबा की लाईट जग रही होती। तब मैं भी प्रायः अपनी लाईट का स्विच ऑफ़ नहीं करता। बहुत बार ऐसा होता कि बाबा लच्छू बहन, सन्देशी बहन, संतरी बहन या जवाहर बहन, जो उन दिनों वहाँ बाबा के साथ होती थीं को कहते—"देखो, जगदीश के कमरे की लाईट जग रही है ?" बहुधा तो जग ही रही होती थी। तो बाबा उन्हें कहते—"अच्छा, उसे बुला लाओ।" इसीलिए ही तो मैं जाग रहा होता था।

जब मैं बाबा के कमरे में पहुँचता तब कई बार खड़े-खड़े ही दूसरे दिन के लिए कुछ आवश्यक निर्देश दे देते और कभी-कभी अपनी चारपाई पर बिठा देते और जिस बात के लिए बुलाया होता, वह बात भी करते रहते और कई बार साथ में लिटा कर ही ईश्वरीय बातें करते रहते।

ऐसा भी होता कि प्रातः को कभी मेरी यदि ढाई बजे या तीन बजे नींद खुल जाती तो खिड़की में से झाँक लेता कि क्या बाबा के कमरे की लाईट हो रही है और मैं पाता कि प्रायः लाईट जग रही होती थी। तो मैं भी अपनी लाईट का स्विच ऑन कर देता। शीघ्र ही बाबा के कमरे से बुलावा आ जाता। इस प्रकार कभी ३ बजे, कभी ३-३० बजे, कभी ४ बजे एकान्त और शान्ति के समय में साकार रूप में भी बाबा से रूह-रूहान करने का सौभाग्य प्राप्त होता था।

एक बार की बात है कि मैं प्रातः जल्दी उठ गया। उस दिन स्नान भी जल्दी कर लिया। आकर अपने कमरे में बैठा सोच रहा था कि क्या ही अच्छा होता यदि मैं भी ध्यानावस्था में जाता और साक्षात्-कार करता होता तो मैं देख आता कि परमधाम कैसा है, कितना विशाल है और परमधाम जाते समय मार्ग में जो सूर्य-चाँद-तारागण हैं, वे वहाँ से गुज़रते हुए कैसे दिखाई देते हैं ? चलो यदि ये भी न देखता, कम-से-कम सन्देश ले जाता और ले आता और ईश्वरीय सेवा में सहयोगी तो रहता। यज्ञ के सामने कई प्रकार की समस्यायें आती है। बाबा मुझे इस ईश्वरीय सेवा पर भेज देते हैं। अगर मुझे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाय तो मैं कठिनाई के समय बाबा से मदद तो ले सकूंगा। उसी समय ही संकल्प आया कि मैं बुद्धि ज़्यादा चलाता हूँ और ज्ञान में काफ़ी घुस जाता हूँ ; शायद इसलिए बाबा के बुलाने पर भी नहीं जा सकता हूँ", परन्तु तुरन्त यह विचार आया कि वह भी सेवा तो यज्ञ ही की है। इतने में बाबा के कमरे से बुलावा आ गया। बुलाने वाली बहन ने पूछा—आपने स्नान कर लिया है ? मैंने कहा—जी हाँ—उन्होंने कहा—तब चलो, बाबा ने याद किया है।"

मैं बाबा के पास गया। बाबा ने अपनी चारपाई पर अपने दाहिने पक्ष में मुझे लिटा दिया और संदेशी बहन को उस कमरे में जो गद्दी रखी रहती है उस पर लेट जाने को कहा। तब बाबा ने संदेशी को निर्देश दिया --"बच्ची, (शिव) बाबा के पास जाओ। बाबा को कहना—"यह मेरा लाडला बच्चा है, सर्विस में अच्छा मददगार है। यदि इसे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाये तो और भी अच्छा मदद कर सकता है। इसलिए बाबा को कहना कि यह बाबा खुद रेकमेन्ड (Recommend) करता है कि अगर बाबा इस बच्चे की ध्यान की डोरी आज खेंच लेंगे तो अच्छा ही होगा। अच्छा बच्ची जाओ—।" उसको ऐसा कहने के बाद बाबा ने मेरी ओर करवट ली और मुझे कहने लगे "अच्छा बच्चे, अब बाबा को याद करो। तुम थोड़ा-थोड़ा तो जाते ही हो, क्या पता आज बाबा तुम्हें अपने पास बुला लें। अर्ज़ी हमारी, मर्ज़ी बाबा की। ऐसा कहकर बाबा मुझे मदद करने लगे और मैं भी कोशिश करने लगा कि इस शरीर से किसी तरह निकलूं और बाबा के पास पहुँचूं। बाबा की याद मन में लाने की पूर्ण प्रयत्न कर रहा था। वहाँ से तो गुम हो ही गया था, ऐसा अनुभव हुआ कि सूक्ष्म लोक में जा पहुँचा हूँ परन्तु वहाँ बाबा दिखाई नहीं दिये। कुछ समय के बाद मैं अव्यक्त से व्यक्त में लौट आया। इतने में संदेशी बहन भी लौट आईं।

बाबा ने पहले उससे पूछा—"बच्ची, यह बच्चा वहाँ पहुँचा था? बाबा ने इस बच्चे के लिए क्या कहा?" संदेशी खिलखिला उठीं। मैं भी यह सुनते हुए वहाँ पड़ा मुस्करा रहा था। सन्देशी ने कहा—"बाबा, यह पहुँचा तो था परन्तु बाबा किधर है? -- इसे यह नहीं मालूम पड़ा। फिर बाबा को मैंने आपकी बात कही तो बाबा ने कहा कि बच्चा आ तो सकता है थोड़ा संदेशी से सुनता रहे और हल्का हो तो ये (अव्यक्त में) आ तो सकता है।"

तब बाबा ने मेरी ओर मुड़कर मुझे कहा—"अच्छा बच्चे, देखो, कोशिश करना अपना फ़र्ज़ था। बाबा ने तुम्हारी अर्ज़ी तो भेज ही दी थी। भई, अब मर्ज़ी तो उस बाबा की है। दिव्य दृष्टि की चाबी तो उसके पास है। यह चाबी उसने मुझ को नहीं दी।"

ये सब मीठी बातें सुनकर मेरे मन में बाबा के लिये बहुत प्यार उमड़ आया। मैंने यह सोचा कि देखो बाबा तक हमारे मन के भाव कैसे पहुँच जाते हैं और बाबा हमारे लिये क्या कुछ नहीं करते। (उसी दिन ही बाबा ने दादी कुमारिका जी को भी ध्यान में भेजने का प्रयत्न किया था।) मैंने यह भी सोचा कि शायद यह मेरे ज्ञान की कमज़ोरी की ओर इशारा था क्योंकि यहाँ (व्यक्त में) मैं बाबा के पास ही तो था। उन्हें यहाँ छोड़कर वहाँ पाने की मैंने कोशिश की थी; इसलिए वहाँ बाबा से मिले बिना यहाँ लौटना पड़ा! परन्तु बाबा कितना मीठे हैं, बच्चों पर कितनी मेहनत करते हैं।) ●

# मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मुझे त्रिलोकी मिल गयी है

ले०—ब्रह्मा कुमारी हरदेवी (छोटी)

एक बार मैं शिमले में ठहरी हुई थी। वहाँ ओम मण्डली वाली एक माता ने मुझे बाबा का एक पत्र सुनाया। पत्र में यह लिखा था कि 'तुम आत्मा हो।' उस पत्र को सुनते-सुनते मुझे दिव्य साक्षात्कार होने लगा कि (सिन्ध में) ऐसा बाबा है, ऐसी उनकी सभा है। जब मैं लौट कर हैदराबाद आई तो मैंने एक पत्र लिखा था कि मैं बाबा से मिलना चाहती हूँ।

उत्तर आने पर बाबा के सामने गयी तो साक्षात्कार वाला बाबा देखा। बाबा ने पूछा—"क्या चाहती हो?

मैंने कहा—"बाबा, परमात्मा से मिलना चाहती हूँ।"

बाबा ने कहा --"यह तो बहुत सहज है। यह पाँच तत्त्वों का बना शरीर है; तुम आत्मा हो, तुम्हें आत्मा के स्वाभाविक गुणों में स्थित होना है। तुम परमात्मा के बच्चे हो, बस इस नशे में रहना है···।"

बाबा के समझाने का तरीका और बाबा की स्थिति ऐसी थी कि सुनते-सुनते मैं देह से न्यारी हो गयी और चार घण्टे आत्मिक सुख में एक-टिक बैठ गयी। ऐसा अनुभव हुआ कि ज्योतिस्वरूप परमात्मा का साक्षात्कार हो रहा है। उस स्थिति में ऐसी खुशी थी कि जैसे त्रिलोकी का राज्य मिल गया है। उस से नीचे उतरी तो बाबा ने कहा—"बच्ची, घर जाओ!

मैंने घर जाकर सभी को सन्देश दिया! □

# सतयुग–संपूर्ण क्रांति और स्वतंत्रता

ब्रह्माकुमार रमेश गामदेवी, बम्बई

अभी-अभी लोकनायक जयप्रकाश जी का देहान्त हुआ। वे मानते थे कि भारत में ख़ास और विश्व में आम सम्पूर्ण क्रान्ति होनी चाहिये। क्रान्ति के बिना मूलभूत परिवर्तन नहीं हो सकता और इस क्रान्ति के लिये उन्होंने विभिन्न पक्ष बनाये, राजकीय प्रयत्न किये और विद्यार्थी आदि के द्वारा भी अनेक प्रयत्न किये। स्वप्न लेना सहज है परन्तु उसकी पूर्ति करना अर्थात् उसके लिये उतना ही पुरुषार्थ करना बहुत ज़रूरी है। पुरुषार्थ से ही मालूम पड़ता है कि प्रयत्न हमें मंज़िल के समीप ले जा रहे हैं या नहीं। हमारे शिवबाबा ने भी सन् १९३६ में घोषित किया कि मैं विश्व परिवर्तन करने के लिए आया हूँ। उस समय विश्व-परिवर्तन के लिये आवश्यक ऐसे अस्त्रों-शस्त्रों का आविष्कार नहीं हुआ था। परन्तु आज विनाशी अस्त्र-शस्त्र तथा गृह युद्धों आदि की तैयारियाँ इतनी स्पष्ट दिखाई दे रही हैं कि प्रतीत होता है कि विश्व-परिवर्तन और उसके लिये विनाश, यह एक कल्पना नहीं बल्कि वास्तविकता है। साथ-साथ इसी लक्ष्य की पूर्ति अर्थ ब्रह्मा बाबा का जीवन प्रमाण (Sample) के रूप में मिला कि इस प्रकार के सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय ज्ञान और योग की पढ़ाई तथा पुरुषार्थ द्वारा कर्मातीत होना संभव है। क्या ऐसे उदाहरण या प्रमाण हमें स्थूल या सूक्ष्म रूप में (जैसे परमात्मा शिव ने स्थूल में विनाश-कारी शस्त्र और सूक्ष्म में ब्रह्माबाबा को कर्मातीत पद की प्राप्ति रूपी उदाहरण स्पष्ट हमारे सामने रखे हैं) मिलते हैं जिससे सिद्ध हो कि सम्पूर्ण क्रान्ति की मंज़िल के हम सच्चे राही हैं।

### राम राज की स्थापना कब और कैसे होगी ?

महात्मा गांधी ने भी चाहा था कि भारत में स्वराज्य हो, अर्थात् ब्रिटिश सत्ता से हमें छुटकारा मिले। लोकमान्य तिलक ने भी कहा था कि स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। भारत को सन् १९४७ में स्वतंत्रता मिली और सन् १९५० में भारत गणतंत्र के रूप में विश्व के सामने प्रत्यक्ष हुआ परन्तु क्या इस स्वतंत्रता ने हमें पिछले ३२ वर्षों में संपूर्ण सुख दिया ? रामराज्य की स्थापना हेतु पंचवर्षीय योजनाओं का आयोजन हुआ परन्तु आज तक हमारे प्रश्न का जवाब कोई भी शासकीय नेता न दे सका। हमारा प्रश्न है कि कितनी पंचवर्षीय योजनाओं के पश्चात रामराज्य अर्थात संपूर्ण स्वतंत्रता का स्वप्न साकार होगा ? रामराज्य के लिये, अर्थात संपूर्ण स्वतंत्रता के लिये, अनेक प्रकार के स्थूल-सूक्ष्म साधनों की उत्पत्ति चाहिये तथा भौतिक सृष्टि का वातावरण भी उसी के अनुरूप चाहिये। सत्तासूत्र के संचालक नेतागणों में भी राजा राम के समानश्रेष्ठता चाहिये। राम राज की चाहना रखने वालों के स्थूल पुरुषार्थ को देखते हुए मुझे बचपन की एक कहानी याद आती है। एक व्यक्ति जिसको शादी करने की बहुत इच्छा थी, बूढ़ा हो गया, फिर भी शादी न कर सका। इस पर किसी व्यक्ति ने उससे पूछा कि तुमने शादी क्यों नहीं की, तब उसने उत्तर दिया कि मैं सीता को ढूंढ रहा था। इस पर उससे दूसरा प्रश्न किया गया कि "क्या सीता नहीं मिली", तब उसने जवाब दिया कि "सीता मिली परन्तु वह राम को ढूंढती थी।" इसी तरह रामराज्य की स्थापना की इच्छा रखने वालों, संपूर्ण स्वतंत्रता की इच्छा रखने वालों को देखकर क्या हमें ऐसी अनुभूति होती है कि वे राजा राम जैसे वचन बद्ध, शुद्ध पवित्र, निर्माण और सर्वस्व त्यागी हैं ?,

### सम्पूर्ण स्वतंत्रता

सम्पूर्ण स्वतंत्रता की परिभाषा हमारे सामने अनेक प्रकार के तत्वज्ञानी आदि-आदि के विचारों से प्रस्तुत हुई है। परमपिता परमात्मा ने भी इस विषय पर एक अव्यक्तवाणी द्वारा सम्पूर्ण स्वतंत्रता का विवरण किया है। उन्होंने सम्पूर्ण स्वतंत्रता का यह ज्ञान आर्थिक दृष्टि से नहीं दिया लेकिन आध्यात्मिक स्वतंत्रता का स्वप्न लक्ष्य के रूप में हमारे सामने रखा। वे इस आध्यात्मिक स्वतंत्रता की परिभाषा

और उसके अर्थ ईश्वरीय जीवन में पुरुषार्थ—स्वयम् सद्गुरू बनकर हम आत्माओं को सिखा रहे हैं। आध्यात्मिक स्वतन्त्रता का यह चित्र कितना मनो रम्य है कि उसका कल्पना आते ही मन में रोमांच खड़े हो जाते हैं और योग की उसी अवस्था में उसी लक्ष्य को लक्षण के रूप में धारण करते आत्मा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलती है। आध्यात्मिक स्वतंत्रता के बल से ही जीवन सर्व प्रकार से संतुष्ट और सुखी बनता है। सच्चे योगी के जीवन में आध्यात्मिक स्वतंत्रता के यह लक्षण स्वतः ही दिखाई पड़ते हैं।

शिव पिता परमात्मा ने हमें आध्यात्मिक स्वतंत्रता के लिये चार बातें बताई हैं जिसका पुरुषार्थ करना हमारे लिये अति आवश्यक है। उसी पुरुषार्थ के फल-स्वरूप यही आध्यात्मिक स्वतंत्रता हमें कर्मातीत अवस्था के समीप ले जावेगी। वे चार बातें निम्न लिखित हैं :—

**देह-भान और देह के लगाव से स्वतंत्रता**

(१) देह-भान और देह के लगाव से संपूर्ण स्वतंत्र—पिछले ६३ जन्मों के खास देहभान के कारण देह के साथ अति लगाव है। यह लगाव एक ज़बरदस्त लगाव है। आज की दुनिया में लोगों ने देह को ही संपूर्ण सुख का साधन मान लिया है। दुनिया के हर एक देश के लोग देह भान की इस जंजीर में बंधे हुए हैं। सभी का व्यवहार, खान-पान आदि स्थूल हो गया है। विषय-विकारों से उभरे हुए जीवन ने मनुष्य को विकारों के पराधीन कर रखा है। विकारों के पराधीन व्यक्ति सदा ही परतंत्र और गुलाम होता है। विकारों की इस गुलामी से मुक्त होना यहा आध्यात्मिक स्वतंत्रताका लक्ष्य है। देह का लगाव भी कुछ कम नहीं है। हर एक मनुष्य अन्य मनुष्य को देह के रूप में ही देखता है। देह के आधार पर व्यक्ति की राष्ट्रीयता धर्म, भाषा, रंग, वर्ग आदि गिना जाता है। देह ही सभी प्रकार के भेद उत्पन्न करता है। अशरीरी बनाने वाला राजयोग तथा उसकी शिक्षा और पुरुषार्थ, इन सभी भेद, भाव और लगाव से मुक्त करके आत्माओं को इस स्थूल सृष्टि से उड़ाकर सूक्ष्म वतन तक ले जाता है। इस तरह यह देह भान से मुक्त अवस्था ही आध्यात्मिक स्वतंत्रता की प्रथम Stage है।

**पुराने स्वभाव से स्वतंत्र**

(२) मनुष्य का स्वाभाविक स्वभाव है बंधनों से मुक्त होना। मनुष्य चाहता है मुक्ति परंतु अपने स्वभाव के ही वशीभूत हो जाता है। स्वभाव से मुक्त होना बड़ा मुश्किल है। शिव बाबा ने इसीलिये हम बच्चों को यह स्लोगन दिया है कि "भाव को देखो स्वभाव को नहीं"—भाव नये आध्यात्मिक जीवन का स्मृति चिन्ह है और स्वभाव पिछले ६३ जन्मों के आधार पर बना हुआ है। ज्ञान और योग के आधार पर मन बुद्धि की विचार शक्ति में परिवर्तन आता है और उसी कारण यह परिवर्तन मन और बुद्धि स्वभाव को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने में मददगार बनता है। शरीर की बीमारियां दूर होने से शरीर में ताकत आती है और शक्ति और क्रिया का संचार होता है। इसी तरह ज्ञान और योग के आधार पर जब पिछले विकर्म भस्म होते हैं तब जो परिवर्तन होता है उसी से आत्मा में बल भरता है और इस नई शक्ति के आधार पर स्वभाव रूपी दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन होता है। अज्ञानी स्वभाव के कारण हर एक क्रिया की प्रतिक्रिया तमोप्रधान होती थी अब वही प्रतिक्रिया सतोप्रधान होती है। कर्म वही हैं परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में परिवर्तन हुआ और उसी कारण पुराने स्वभाव से स्वतंत्रता मिली। इसी तरह पुराने स्वभाव से स्वाभाविक रूप से आजादी मिलती है। कई बार यह परिवर्तन इतना सूक्ष्म होता है कि जिसमें परिवर्तन हुआ उसे भी मालूम नहीं होता कि मुझ में कोई परिवर्तन हुआ है।

मुझे याद आता है एक बार बंबई में किसी एक बहन ने साकार बाबा को कहा कि "बाबा, मैं यह कभी भी नहीं मानूंगी कि गीता का भगवान शिव है।" साकार बाबा ने कहा "अच्छा, बच्ची ठीक है, भले तुम अपनी ही मान्यता से चलती रहो लेकिन ज्ञान-स्नान रोज़ करना।" करीब एक वर्ष के बाद जब बाबा की मुरली सुनाई जाती थी तब क्लास-संचालिका बहन ने पूछा कि "गीता का भगवान शिव है ऐसा मानने वाले हाथ उठावें"। इस पर दूसरे भाई-बहनों के साथ उस बहन ने भी हाथ उठाया। क्लास के पश्चात मैंने उस बहन से पूछा कि आपने अपनी स्वाभाविक मान्यता का कब से परिवर्तन किया? कुछ सोचकर उस बहन ने बताया कि "मुझे मालूम नहीं है कि मैंने कब से 'गीता का भगवान शिव है, कृष्ण नहीं", यह माना। यह परिवर्तन इतना सहज

था कि उस बहन को खुद भी मालूम नहीं पड़ा कि उसकी मान्यता में परिवर्तन हुआ है। इस ईश्वरीय ज्ञान से मान्यता तथा स्वभाव आदि में इतना परिवर्तन होता है कि वह परिवर्तन कैसे हुआ, कब हुआ—यह आत्मा को पता नहीं पड़ता। दुनिया में अनेक लोग अपने पुराने स्वभाव की जंजीर से मुक्त होना चाहते हैं इसीलिये पश्चिम की दुनिया के एक विचारक ने कहा है कि 'हम हमारे स्वभाव के कैद में हैं।' स्वभाव की कैद और उससे मुक्ति यह बहुत ही सूक्ष्म बात है।

### पुराने संस्कार से स्वतंत्र

(३) मन, बुद्धि, संस्कार – में आत्मा के सूक्ष्म अंग है। यह ज्ञान सिर्फ शिवबाबा ने दिया है। आत्मा की ऐसी परिभाषा कोई भी धर्मशास्त्र या धर्मनेता ने नहीं दी बल्कि सभी ने आत्मा को संस्कारों से मुक्त माना है। हमें शिव बाबा ने बताया है कि आत्मा में ८४ जन्मों के संस्कार भरे हुए हैं। लोग इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं हैं कि आत्मा में संस्कार भरे हैं। यह बात बहुत सूक्ष्म है। एक कवि ने कहा है कि "दाने-दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम।" प्रश्न यह है कि वह नाम किस तरह से लिखा। एक ही बीज से सौ दाने उत्पन्न होते हैं उसमें से एक की पिसाई होती है और दूसरा फिर से खेती में बीज बनकर ज़मीन में बोया जाता है और फिर से उससे १०० बीज उत्पन्न होते हैं वही १०० बीज बोये जाने पर १०,००० दाने मूल-बीज में किस रूप में समाये हुए थे? केवल शिव बाबा द्वारा दिया हुआ ज्ञान ही बताता है कि वे १०,००० दाने संस्कार के रूप में मर्ज थे। और इन्हीं संस्कारों को अब हमें अच्छी रीति से जानना है।

पुराने संस्कारों से आध्यात्मिक स्वतंत्रता का अर्थ है मध्यकालीन संस्कारों को मिटाना और आदि संस्कारों को इमर्ज (emerge) करना। आत्मा का स्वधर्म सुख, शांति, प्रेम आदि है। इसी स्वधर्म में स्थित होना इसका नाम है आदि सतोप्रधान संस्कारों की प्राप्ति होना। संस्कारों से स्वतंत्रता प्राप्त कराने के लिये शिवबाबा ने महावाक्य उच्चारे हैं कि "बच्चे कल तुम देवता थे और अब फिर वही बनना है। यह हूबहू पुनरावृत्ति का ज्ञान हम आत्माओं को पुराने, तमोप्रधान संस्कारों से मुक्ति प्राप्त कराने में बहुत मददगार बनता है। संस्कार तमोप्रधान विकर्मों के आधार पर हुए हैं। विकर्म योग से भस्म होते हैं। इससे सिद्ध है कि योग के द्वारा संस्कारों में परिवर्तन होता है। इस तरह शिवबाबा हमें पुराने संस्कारों से स्वतंत्रता दिलाते हैं।

### सभी सम्बन्धों से स्वतंत्र

लौकिक संपर्क और संबंध से स्वतंत्र और अलौकिक परिवार के संपर्क और संबंध में भी स्वतंत्र—एक आंग्ल तत्त्वज्ञानी ने कहा है कि "Man is a Social animal" अर्थात् मनुष्य को लौकिक संबंध की सदा ही आवश्यकता रहती है। मेरा-मेरा-मेरा इसी भान में दुनिया के सभी मनुष्य परतंत्र हैं। 'मैं' और 'मेरा' इन दो शब्दों के संबंध से उत्पन्न हुई एक बहुत बड़ी इंद्रजाल है और इस इंद्रजाल में सारी दुनिया फंसी हुई है। सन्यास-धर्म भी इस परतंत्रता को छुड़ाने के लिये स्थापित हुआ परंतु वहाँ भी सन्यासी रूपी अलौकिक जीवन में जीवन के बंधन में सब फंस जाते हैं और संन्यासी जीवन भी एक तरह का गृहस्थी जीवन बन जाता है। इस ईश्वरीय जीवन के संपर्क और संबंध में आत्मा फँसनी नहीं चाहिये। लौकिक जीवन का संपर्क और संबंध एक लोहे को जंजीर है और अलौकिक जीवन का संपर्क और सम्बंध सुनहरी जंजीर है। दोनों से मुक्ति पाना ही बेहद का सन्यास या बैराग्य अर्थात् त्याग है। ब्रह्मा बाबा इस अलौकिक परिवार के निमित बने परंतु इस अलौकिक संबंध के बंधन में फँसे नहीं और "मैं बाबा के पास जा रहा हूं" ऐसा कहकर वे एक सेकंड में व्यक्त से अव्यक्त हो गये। आज भी गुलज़ार बहन के तन में शिवबाबा का प्रवेश और बिदाई हमें लौकिक और अलौकिक सभी प्रकार के संबंधों से स्वतंत्र बनने की प्रेरणा देता है।

ऐसी आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त की हुई आत्माएं जब सतयुग में देवता बनकर इस सृष्टि पर आती हैं तब ऐसे आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त किया हुआ समाज कहा जा सकता है। विश्व के हर एक संपूर्ण स्वतंत्रता और संपूर्ण क्रांति के स्वप्न के चाहक तथा उसी आदर्श को जीवन का उद्देश्य समझकर चलने वाली सभी आत्माओं को शिवबाबा का अमर संदेश है कि "बच्चे ऐसी संपूर्ण क्रांति या स्वतंत्रता या

(शेष पृष्ठ ४० पर)

# "'मेरे बाबा'–आज भी वे कर्म अपना कर रहे"

लेखक— ब्रह्माकुमार रामश्लोक, मधुबन, आबू

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अपने परमप्रिय परम पूज्य पिता श्री साकार प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की अव्यक्त दिवस पुण्य तिथि १८ जनवरी, ज्यों-ज्यों निकट आ रही थी, त्यों-त्यों मेरे मानस पटल पर उस अद्वितीय महान हस्ती पिता – श्री जी की दिव्य स्मृतियां, नित्य प्रातः अमृत बेले से लेकर रात्रि विश्राम के समय तक, मेरे आँखों के सामने एक अलौकिक चरित्र के रूप में घूमती रहती है। मैं कहीं भी, किसी भी कार्य में कितना भी व्यस्त रहता, परन्तु 'मेरे बाबा', मेरे सामने, अव्यक्त होते हुये भी व्यक्त की तरह आँखों से ओझल नहीं होते।

जब कभी मैं अपने प्राण बाबा की बातें किसी को सुनाता या ज्ञान वा योग की गहराई की चर्चा होती तो वार्तालाप के दौरान श्रोता भाई वा बहिनें, मुझ से एक ही प्रश्न पूछते आपने तो साकार बाबा को देखा होगा? उनके प्रश्न के मध्य ही पुनः साकार बाबा की दिव्य झाँकी मेरे मस्तिष्क में उभर जाती और मैं मुस्कुराते हुए उत्तर देता—मैंने साकार बाबा को पाँच तत्त्वों के अमूल्य शरीर में नहीं देखा, परन्तु उनसे मैं रोज़ बातें करता हूं। हरेक बात का उत्तर हमें वैसे ही मिलता है, जैसे साकार बाबा साकारी रूप से देते थे। सर्व सम्बन्धों से सर्व रसनाओं के कई अनुभव हमारे पास हैं। स्पष्टीकरण के लिए एक छोटा-सा अनुभव यहाँ प्रस्तुत करता हूं कि मीठे बाबा आज भी उसी रूप में पूर्ववत् कर्म कर रहे हैं और हम बच्चों को हर बात में कितना न हल्का कर आत्मोन्नति की ओर अग्रसरित करते हैं।

सन १९७३ की बात है, मैं लौकिक पढ़ाई के अन्तिम वर्ष की परीक्षा में सम्मलित होने जा रहा था। पढ़ाई के दौरान मेरा अधिक समय ईश्वरीय सेवा में व्यतीत होता, परीक्षा की तैयारी यथायोग्य थी। कालेज जाते समय सोचा, सेवा केन्द्र पर जाकर मीठे बाबा से मिलता चलूं, कुछ क्षण रूह-रिहान कर लूंगा। ज्ञान कक्ष में साकार बाबा की एक फुल-साइज़ की तस्वीर रखी थी। मैं शिव बाबा की याद में बैठकर बाबा से बोला—"बाबा! परीक्षा देने जा रहा हूं, तैयारी यथा-योग्य है! बाबा मुस्कुराते हुए बोले—"मीठे बच्चे! यह लौकिक डाक्टरी की परीक्षा तो पाई-पैसे की है, और प्राप्ति भी अल्प काल की, तुम तो इससे भी बड़ी परीक्षा दे रहे हो, और उस परीक्षा को पास कर, देवी-देवता पद की अविनाशी प्राप्ति कर श्री लक्ष्मी—श्री नारायण बनोगे, जो बड़ी ही गुप्त और असाधारण है। खुशी से जाओ, स्वमान में रह, रूहानी टीचर बाप की याद में रह परीक्षा दो, सफलता तुम्हारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। फरिश्ता स्वरूप आकारी बाबा के इस साकारी जवाब ने कमाल कर दिया। मैं उसी नशे में परीक्षा भवन १० मिनट देर से पहुंचा परन्तु किसी ने कुछ कहा तक नहीं, परीक्षा सकुशल, निर्विघ्न समाप्त हुई। समयानुसार परीक्षाफल घोषित हुआ, ७० विद्यार्थियों में से केवल ११ विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए, जिसमें मुझे ७वाँ स्थान प्राप्त हुआ। बाप-दादा के वे मीठे बोल आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं—सफलता तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। बाबा तो सदैव मुरलियों में यही कहते – मीठे बच्चे! अगर पक्के निश्चय के साथ बाबा के श्री मत को पालन करोगे तो, नुकसान वा घाटा का संकल्प भी नहीं, हर बात में फ़ायदा ही फ़ायदा होगा, यह बाप की गारण्टी है।

### विश्व के सर्वश्रेष्ठ सुन्दरतम पावन महापुरुष

मैं अनेकानेक साधु, सन्त, महात्मा, वीरपुरुष, लेखक, कवि, देशभक्त, राष्ट्रसेवकों की तस्वीरें, अपनी-अपनी खुबियों भरी, यत्र-तत्र दिवारों पर लटकता हुआ देखता हूँ, और दूसरी ओर मधुबन में साकार बाबा की भिन्न-भिन्न कर्म करते हुए का तस्वीर, यज्ञ इतिहास कक्ष (छोटे हॉल) में देखता हूँ तो मैं बाबा की तस्वीर के सामने कुछ क्षण अनायास ही एकाग्रचित हो, एकटक देखता ही रह जाता हूँ कि कितना न असाधारण, परन्तु अति साधारण रूप में

८५ वर्ष की बजुर्गी में साकार बाबा ! अति मीठा, दर्पण के समान अति स्वच्छ, जिसमें बच्चों की कमियाँ स्वतः नज़र आने लगतीं, बाबा अति सुन्दर, कितना न कोमल लगता, जैसे अभी-अभी का खिला हुआ गुलाब। उनके भव्य ललाट पर प्रस्फूटित होती अलौकिक रश्मियां, ऐसी महसूस होती, जैसे मेरे बाबा सारे विश्व की आत्माओं को सुख, शान्ति, पवित्रता वा शक्ति की किरणें बिखेर रहे हो, और मैं ही नहीं, हज़ारों आत्मायें इस अनुभव से वंचित नहीं रहती।

### वरदानों का श्रोत बाबा का कमरा

आकारी सो साकारी, सर्व का सत्कारी परोपकारी बाबा, आज भी विश्व सेवाधारी बन अपने बच्चों की सेवा में उपस्थित है। पुराने भाई-बहनें जो बाबा के अव्यक्त होने के बहुत समय बाद यहाँ कमरे में आकर बाबा के साथ बिताई सुनहरी घड़ियों को याद कर, उनके चरित्र सुनाते हैं कि बाबा यहां आराम करते, यहाँ बच्चों से मिलते, यहाँ टोली देते आदि-आदि; परन्तु मैं अपने अनुभव के साथ कहता हूँ कि बाबा आज भी कमरे में बैठे हैं, सभी से मीठी-मीठी बातें करते हैं एवं सभी की मनोकामनायें पूरी कर वरदानों से झोली भर रहे हैं ? आज चाहे आगन्तुक ईश्वरीय ज्ञान से परिचित हो या न हो, ज्ञाना हो या अज्ञानी परन्तु बाबा सभी से उसी रूप में मिल रहे हैं, जैसे साकार में मिलते थे। जब-कभी मेरे मन में कोई छोटी-मोटी बातें आती हैं या क्षणभंगुर उलझनें आती हैं तो मैं उसी क्षण प्यारे बाबा के कमरे में भागा-भागा जाता हूँ और सेकेन्ड में हल्का होकर अपने प्राण बाबा को कोटि-कोटि शुक्रिया अदा करके चला आता हूँ।

### प्रेरणादायक बाबा

आज भी बाबा के नये-पुराने बच्चे जो पावन तपोभूमि, वरदानभूमि, स्वर्गाश्रम मधुबन में आते हैं, वे आते ही बाबा के कमरे में जाकर मुलाकात करते और फिर वापिस सेवार्थ जाते समय भी मीठे बाबा से छुट्टी लेते हैं तो बाबा उन्हें सर्विस और धारणा की नई-नई प्रेरणा से परिपूर्ण कर देते हैं, जिससे उनके नयनों से जन्म-जन्मान्तर के अगाध प्रेम के मोती छलक पड़ते हैं।

विदेशी भाई-बहनें जब बाबा के कमरे में जाते तो बाबा के ट्रान्सलाइट के चित्र को देखकर आत्मविभोर हो उठते हैं, और ऐसा अनुभव करते हैं, जैसे बाबा बहुत प्यार से उनको आत्मोन्नति के लिये प्रेरित कर रहे हों। यह बाबा की ही प्रेरणा शक्ति थी जिसने अबला माताओं, और कन्याओं को, जिन को पुरुषों ने दमन किया, असुर संहारनी शिव शक्तियाँ बनायी।

### अखण्ड शान्ति का उद्गम स्थान बाबा की झोपड़ी

आत्मानुभूति, परमात्मानुभूति के लिए मीठे बाबा हमेशा एकाग्रचित्त होकर, एकान्त में अपनी झोंपड़ी में बैठा करते थे। बाबा ने न केवल आत्माओं को पावन बनाया परन्तु अपने योगबल से ५ तत्वों को भी पावन बनाकर अखण्ड शान्ति की ज्योति जगाई जिसका जीता-जागता ज्वलन्त उदाहरण है बाबा की झोंपड़ी। इसमें प्रवेश करते ही हर आत्मा अन्तर्मुखी होकर एक बाप की याद की लग्न में मग्न हो जाती है। प्रत्येक बच्चे को ऐसा अनुभव होता है जैसे बाबा हमें फरिश्ता बनाने के लिए शिक्षा, सावधानी और बल भर रहे हों।

मधुबन का हर कण केवल मुझे ही नहीं, अपितु अनेकानेक भाई-बहिनों को यह अनुभव कराता है कि आज बाबा सम्पूर्ण पावन बन कर आकारी रूप में साकारी पार्ट बजा रहे हैं, और प्रत्येक सेकेण्ड इस पार्ट की अनुभूति सर्व को करा रहे हैं। मुझे कभी भी ऐसी महसूसता नहीं आती कि मैं साकार बाबा से नहीं मिला हूं बल्कि प्रतिक्षण मैं तो ऐसा अनुभव करता हूँ कि मैं अभी भी बाबा से मिल रहा हूँ और मिलता रहा हूं। यद्यपि उनका मधुर मिलन अति सूक्ष्म है, तथापि यह सूक्ष्म मिलन ही अतीन्द्रिय सुख एवं सर्व सम्बन्धों के स्नेह की अनुभूति कराती है, जिसका वर्णन इस कागज पर करने के लिये मेरी लेखनी असमर्थ है।

अन्त में मैं अपने आकारी सो साकारी, सो निराकारी, निरंहकारी, निर्विकारी बाबल का कितना न गुणगान करूँ, जो मुझे ही नहीं, अपितु हज़ारों-लाखों देशी-विदेशी सर्व धर्मों की आत्माओं को नवजीवन प्रदान कर रहे हैं, एवं विकारों के दलदल से निकाल दैवी सृष्टि के नूतन पथ पर आरूढ़ कर रहे

हैं। अपने प्यारे बाबा की महिमा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। बाबा के विस्तृत विश्व कल्याण के श्रेष्ठ कार्य कलापों को देखकर मेरा मन बरबस ही गुनगुनाने लगता है :

बाबा ! आज भी तुम कर्म अपना कर रहे।
हर आत्मा में अपनी शक्ति भर रहे,
सर्व सम्बन्धों की अनुभूति सभी को कराकर
सर्व खज़ानों से तुम झोली भर रहे॥ □

# ब्रह्मा

**बाबा आदम :- ब्र० कु० प्रेम, गुलबर्गा**

पहले पहल
जब मैं यहां आई,
कहा गया मुझे,
"यह आदम है,
बाबा है,
था जवाहरी,
एक करोड़पति भी यह।
फिर ?
एक दिन
इन्हें,
शिव ने कहा
"छोड़ गधाई,
तू अलिफ,
मैं अल्लाह,
बन विदेही,
कर याद मुझे,
मैं तुझे,
बनाऊँगा,
शाहों का शाह।"
किया त्याग,
सर्वस्व का,
न कि संन्यास
यह
निकला अकेला,
छोड़ दुनिया का झमेला
आज—
आज इसके पीछे,
है एक
रूहानी मेला।
यह बाबा है
बाबा आदम है,
आदम खुदा नहीं
जानती हूँ
खुदा के नूर से ये जुदा नहीं।
एक दिन
यह हुवा जुदा,
पहुँचा,
फरिश्तों की दुनिया में,
कहा—
"चलो बच्चे !
अब घर जाना है,
जिस्मानी दुनिया से,
दूर
रूहानी दुनिया में।"
आज
चलना है,
उनके नक्शे कदमों पर,
चलकर,
आना है,
नई दुनिया में
शाहजदि बनकर।
खिलेंगे जहाँ
यह नुकीले काँटे
फूल बनकर॥

**पृष्ठ ३७ का शेष**

स्वराज्य आपका जन्म सिद्ध अधिकार है।' 'स्वराज्य को जन्मसिद्ध अधिकार मानने वालों को ऐसी संपूर्ण स्वतंत्रता और स्वराज्य का यदि संदेश मिले तो ऐसे बुद्धि जीवी लोग नाच उठेंगे ओर कहेंगे कि जो चाहते थे उसे पाना अब अति सहज है।

सम्पूर्ण क्रांति के चाहकों को या स्वतंत्रता के इच्छुकों को यह बतलाना ज़रूरी है कि यह काम मनुष्य के बुद्धि बल से, या विज्ञान की उपलब्धियों से या गरीब और अमीर ऐसे वर्गभेद मिटाने से, सिर्फ़ राजसत्ता के बल से या पक्षों (Party) को स्थापन करने से, पंचवर्षीय योजनाएं बनाने से, धर्मनिरपेक्षता से, ज्यादा कानून बनाने से, चुनाव के समय पर अपने चुनाव-जाहिरानों (Election menifestoes) में ज्यादा बातें लिखने से, आदि-आदि बातों से नहीं होगा। विश्व-परिवर्तन तो विश्व के रचयिता परमपिता परमात्मा की योजना (Planning) अनुसार, पवित्रता के बल पर, ईश्वरीय ज्ञान-योग तथा दैवी गुणों की धारणा तथा वृत्ति और विचार-परिवर्तन द्वारा, विकारों से, देह सहित देह के सभी धर्मों को भूलने से, परमात्मा के इस दैवी महान कार्य में मददगार बनने से, ईश्वरीय कानून की लक्ष्मण-रेखा के अंदर रहकर चलने से, आदि-आदि बातों के आधार पर होगा। काश ! आज के यह गण्यमान्य नेताएं, विचारक (Thinkers) आदि प्राची के सूर्य—ज्ञान सूर्य परमात्मा को तथा उनके दैवी कार्य और कर्त्तव्यों को पहचानते तो जरूर उनका अज्ञान अंधकार मिट जाए और सतयुगी दैवी स्वराज्य संपन्न, संपूर्ण क्रांति और आध्यात्मिक ऐहिक तथा भौतिक स्वतंत्रता संपन्न सृष्टि में आ सकें।

दुनिया के लिये तो पश्चिम के कार्ल मार्क्स, एंजीलिओं, लेनिन अदि कबर दाख़िल हैं या लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी जी आदि के पुतले (Statues) खड़े हैं। हम जानते हैं कि उन्हों की आत्माएं विभिन्न नाम और रूप से इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर उपस्थित हैं। इसी कारण हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन्हें सच्ची आध्यात्मिक स्वतंत्रता, संपूर्ण क्रांति, ग़रीब-अमीर के वर्गभेद का निवारण आदि का शुभ संदेह दें। ऐसी सच्ची क्रांति और स्वतंत्रता के दिन अब दूर नहीं—आये की आये।

# आध्यात्मिक सेवा समाचार

लेखक:—ब्रह्माकुमार सुन्दरलाल की डायरी से

**मोरिशस में दीपावली महोत्सव व विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम**— मोरिशस से ब्रह्माकुमारी सोमप्रभा जी लिखती हैं कि जन-जन की आत्मा की ज्योति जगाने हेतु मोरिशस सेवाकेन्द्र की ओर से दीपावली महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर वहाँ के त्रियोले ग्राम में स्थित स्वामी पूर्णानन्द के आश्रम में 'राजयोग प्रदर्शनी' एवं 'चरित्र-उत्थान सम्मेलन' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के उद्योग एवं वाणिज्यमंत्री भ्राता वसंतराय ने किया। इस कार्यक्रम से हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इस अवसर पर 'राजयोग' एवं 'आनन्द' फिल्म भी प्रदर्शित की गई तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया। इस कार्यक्रम का विस्तृत समाचार स्थानीय समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से भी इसे प्रसारित किया। इसके अतिरिक्त वहाँ के 'क्वीन एलिजाबेथ कालेज' में भी बहनों के साप्ताहिक प्रवचन होते रहते हैं जिससे अनेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को चरित्रवान बनने की प्रेरणा मिलती है। 'गंगास्नान' के अवसर पर भी बहनों के प्रवचन हुए तथा बेलमार नामक स्थान पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

**इलाहाबाद के निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी**—इलाहाबाद सेवाकेन्द्र की ओर से करछना ग्राम में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के तहसीलदार ने किया। प्रदर्शनी को सभी वर्ग के हजारों लोगों ने देखा और इसे श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने का सहज साधन बताया।

**कोलार (कर्नाटक) में बालवर्ष समारोह**— कोलार सेवाकेन्द्र की ओर से बालवर्ष के उपलक्ष में वहाँ के विभिन्न स्कूलों में आध्यात्मिक प्रवचन, प्रोजेक्टर शो एवं निबन्ध प्रतियोगिता का कार्यक्रम हुआ जिसमें हजारों विद्यार्थियों ने भाग लिया। चित्रकला स्पर्धा एवं भाषण-प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को पुरस्कार भी दिया गया।

**बम्बई में बालवर्ष समारोह**—बम्बई (गोरेगाँव एवं गामदेवी) सेवाकेन्द्रों की ओर से बालवर्ष के उपलक्ष में बच्चों की रेली, वक्तव्य स्पर्धा, संगीत स्पर्धा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बम्बई विश्व-विद्यालय के आई० सी० एस० एस० आर० के निर्देशक भ्राता एस० डी० कार्णिक अध्यक्ष के रूप में पधारे थे तथा नगरपालिका के स्कूलों के अधिक्षक भ्राता के० डी० ठक्कर मुख्य अतिथी थे। अनेकानेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने इस कार्यक्रम से लाभ उठाया। विजेता बच्चों को पुरस्कार भी दिया गया।

**भावनगर में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम**— भावनगर सेवाकेन्द्र की ओर से धंधुका तालुका के ग्रामों में बिजली पहुँचाने के अवसर पर आयोजित समारोह में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए तथा गुजरात के बिजली बोर्ड के इन्जिनियरों की मीटिंग में भी बहनों के प्रवचन हुए जिससे अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया। वहाँ के अनेक स्कूलों में भी 'बाल उत्थान प्रदर्शनी का' आयोजन बड़ा सफल रहा जिस से अनेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया।

**चण्डीगढ़ के निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी**—चण्डीगढ़ के उप-सेवाकेन्द्र 'माहोली' द्वारा जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

**काठमण्डू में 'विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी'**—बालवर्ष के उपलक्ष में 'महिला संगठन' की ओर से आयोजित 'मेला' में काठमण्डू सेवाकेन्द्र की ओर से आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिसे सभी वर्ग के हजारों लोगों ने देखा। इसके अतिरिक्त वहाँ की जेल व विभिन्न कालेजों में आध्यात्मिक प्रौजेक्टरशो तथा प्रवचनों का कार्यक्रम बहुत ही

सफल रहा। वहाँ की महारानी के जन्म-दिवस के उपलक्ष पर भी बहनों ने ईश्वरीय सन्देश व सौगात दी जिसे महाराजा व महारानी ने सहर्ष स्वीकार किया।

**अम्बाला में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम**—अम्बाला सेवाकेन्द्र की 'सिलवर जुबली' मनाने हेतु आबू से आदरणीया दादी प्रकाशमणी जी पधारी थीं। इस अवसर पर शहर के अनेक प्रमुख व्यक्ति पधारे थे तथा वहाँ के आध्यात्मिक संग्रहालय को देखकर तथा दादी जी से मिलकर बहुत प्रभावित हुए।

**कलकत्ता के 'वोरिशाचण्डी मेला' में प्रदर्शनी द्वारा सेवा**—कलकत्ता सेवाकेन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु वहाँ के 'वोरिशाचण्डी मेला' में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

**नागपुर के निकटवर्ती ग्रामों में ज्ञान की गजगोर**—नागपुर सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रवचनों, प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्टरशो का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने सच्ची सुख-शान्ति की प्राप्ति का सहज मार्ग जाना। इनमें से महादुला, डोरली, रामठेक, मौदा, कोराड़ी आदि ग्रामों का नाम उल्लेखनीय है।

**हाथरस में अन्तर्राष्ट्रीय बालवर्ष समारोह**—हाथरस में स्थित उप-सेवाकेन्द्र की ओर से 'अन्तर्राष्ट्रीय बालवर्ष' के उपलक्ष में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व प्रवचनों का कार्यक्रम वहाँ के विभिन्न स्कूलों में किया गया तथा शहर के प्रमुख भागों से प्रभातफेरी (शोभा यात्रा) भी निकाली गई।

**आगरा में बालवर्ष समारोह**—आगरा सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के डी० ए० वी० कालेज, सैन्टकोलज रत्न बाई कालेज आदि में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए जिससे काफी संख्या में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया। अनेक विद्यार्थी व शिक्षक सेवाकेन्द्र पर भी आये और बहुत प्रभावित होकर गये।

**साँपला में आध्यात्मिक प्रदर्शनी**—सोनीपत सेवाकेन्द्र की ओर से साँपला की जनता को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त सांपला खेडी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया।

**देवनगिरी में बालवर्ष समारोह**—देवनगिरी उप-सेवाकेन्द्र की ओर से बालवर्ष के उपलक्ष में वहाँ के स्कूलों में आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा। अनेकानेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने इससे लाभ उठाया।

**जामनगर में बालवर्ष समारोह**—जामनगर सेवाकेन्द्र की ओर से बाल उत्थान प्रदर्शनी का आयोजन वहाँ के विभिन्न स्थानों पर किया गया जिससे अनेकानेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया। इस अवसर पर शहर के प्रमुख भागों से शोभा यात्रा भी निकाली गई। स्थानीय समाचार पत्रों ने इस कार्यक्रम को प्रकाशित करके अनेकानेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश पहुँचाने में सहयोग दिया।

**कोल्हापुर में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम**—कोल्हापुर सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के विभिन्न स्कूलों में आध्यात्मिक प्रवचनों, गीतों एवं नाटक का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिसमें वहाँ के मेयर तथा शिक्षा अधिकारियों ने विशेष रुची दिखाई। अनेकानेक आत्माओं ने इससे लाभ उठाया।

**ट्रिवैन्ड्रम तथा कन्नूर में आध्यात्मिक कार्यक्रम**—ट्रिवैन्ड्रम तथा तथा कन्नूर के विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

**चित्रदुर्ग की जेल में कैदियों को ईश्वरीय सन्देश**—चित्रदुर्ग में स्थित उप-सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ की सैन्ट्रलजेल में कैदियों के समक्ष ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए तथा उन्हें परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया। जेल अधिकारियों तथा कैदियों ने बहनों के द्वारा दी गई शिक्षाओं को धारण करने तथा श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली।

**तेजपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी**—तेजपुर सेवाकेन्द्र की ओर से निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक ग्रामवासियों को परमात्मा शिव का वास्तविक परि-

चय दिया गया।

**उज्जैन में 'नव-विश्व अन्तर्राष्ट्रीय मेले' की तैयारी**—अगले वर्ष सिंहस्थ में होने वाले 'अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक मेला' की तैयारियाँ उज्जैन सेवाकेन्द्र की ओर से जोरशोर से आरम्भ हो गई है। इसके कार्यालय का उद्घाटन अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायधीश एवं उपाध्यक्ष भ्राता नगेन्द्रसिंह ने किया। इस अवसर पर अपने सन्देश में मेले की सफलता की शुभ कामना देते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान युग में राजयोग एवं आध्यात्मिक शिक्षा की अति आवश्यकता है तथा यह विश्व-विद्यालय इस दिशा में महान कार्य कर रहा है।

**मेरठ व मोदीनगर में बालवर्ष समारोह**—मेरठ व मोदीनगर के विभिन्न स्कूलों एवं कालेजों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, तथा प्रोजैक्टरशो द्वारा अनेकानेक विद्यार्थियों को चरित्रवान बनने की शिक्षा दी गई। इसके अतिरिक्त मेरठ के निकट कंकडखेडा में ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा देने हेतु सच्ची गीता पाठशाला खोली गई जिससे काफी संख्या में लोग लाभ उठा रहे हैं।

**सिकन्दराबाद में अन्तर्राष्ट्रीय बालवर्ष समारोह**—सिकन्दराबाद सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के पन्द्रह विद्यालयों में 'बाल प्रदर्शनी' का आयाजन किया गया जिसे लगभग २०००० विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने देखा और लाभ उठाया। यह प्रदर्शनी दूरदर्शन पर भी दिखाई गई जिससे अनेकानेक लोगों को चरित्रनिर्माण की प्रेरणा मिली। स्थानीय समाचार पत्रों में भी इस प्रदर्शनी का समाचार प्रकाशित हुआ। शिक्षामंत्री तथा अनेक सरकारी अधिकारियों ने भी इस प्रदर्शनी को देखा तथा इसे श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने का सहज साधन बताया।

**चन्द्रपुर में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी**—चन्द्रपुर सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के लक्ष्मीनारायण मन्दिर के प्रांगण में 'चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसे हजारों लोगों ने देखा और लाभ उठाया। इस प्रदर्शनी का समाचार स्थानीय समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुआ। इस अवसरपर आयोजित राजयोग शिविर से भी अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

**लखनऊ में बाल दिवस समारोह**—लखनऊ (पेपर मिल) सेवाकेन्द्र की ओर से "बेबी मान्टेसरी जूनियर हाई स्कूल" तथा अन्य विद्यालयों में 'बाल प्रदर्शनी' एवं प्रोजेक्टरशो का आयोजन किया गया जिससे हज़ारों विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया।

**फिरोजाबाद में आध्यात्मिक प्रदर्शनी**—गंगास्नान के अवसर पर आयोजित बटेश्वर मेले में फिरोजाबाद में स्थित सेवाकेन्द्र की ओर से 'आध्यात्मिक प्रदर्शनी' लगाई गई जिसका उद्घाटन अतिरिक्त जिला अधिकारी भ्राता बिनायक उपाध्याय ने किया। इस प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा और परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

**चौमुहाँ में बाल दिवस समारोह**—चौमुहाँ उपसेवाकेन्द्र द्वारा 'बाल दिवस समारोह, आध्यात्मिक प्रवचनों, गीतों, भाषण प्रतियोगिता तथा शिक्षाप्रद प्रहसन के रूप में मनाया गया। इस समारोह में अनेक विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भाग लिया। वहाँ के ब्लाक अधिकारी, ग्राम सरपंच एवं विकास अधिकारी आदि इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए।

**पोरबन्दर में बाल-वर्ष समारोह**—पोरबन्दर सेवाकेन्द्र को ओर से वहाँ के सत्यनारायण मन्दिर में 'बाल-उत्थान प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन नगरपालिका के अध्यक्ष ने किया। इस प्रदर्शनी से अनेक विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया।

**लखनऊ में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम**—लखनऊ (खुरशेद बाग) में स्थित सेवाकेन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इनमें से पुवारगंज, चांदगंज, अमीनाबाद, मलीहाबाद, बालामऊ, रहीमाबाद आदि स्थानों पर 'आयोजित प्रदर्शनी' विशेषतौर से उल्लेखनीय हैं। इन अवसरों पर आयोजित राजयोग शिविरों से भी अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त गंगास्नान के अवसर पर वहाँ के प्रसिद्ध पार्क 'बेगम हजरत महल' में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे लाखों भक्तों ने देखा और

ज्ञान स्नान करके पावन बनने की प्रेरणा ली। स्थानीय जेल के प्रांगण में आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा कैदियों एवं जेल अधिकारियों को भी ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

**भुवनेश्वर में आध्यात्मिक कार्यक्रम**—भुवनेश्वर सेवाकेन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी व प्रोजैक्टरशो का आयोजन किया गया जिसे हजारों लोगों ने देखा और श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली। इनमें से खुर्दा रोड, जटनी, बाली पटना आदि स्थानों का नाम उल्लेखनीय है।

**तिपटूर में बाल-वर्ष समारोह**—तिपटूर उप-सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के 'स्कूलों' में आध्यात्मिक प्रवचनों, गीतों, ड्रामा का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया।

**बंगलौर में बाल-वर्ष समारोह**—बंगलौर (विश्वेश्वरपुरम एवं शिवलिंग कालोनी) में स्थित सेवाकेन्द्रों की ओर से बाल-वर्ष के उपलक्ष में आध्यात्मिक प्रवचनों, गीतों एवं शान्ति यात्रा का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेक स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया अनेक स्कूलों में प्रोजैक्टरशो व राजयोग फिल्म भी दिखाई गई।

**बालासोर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी**—बडोपदा में स्थित उप-सेवाकेन्द्र की ओर से बालासोर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

**राजकोट में बाल-उत्थान प्रदर्शनी**—राजकोट सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के 'बालभवन' के हाल में बाल-उत्थान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिस का उद्घाटन वहाँ के कलक्टर ने किया। इस प्रदर्शनी को शहर के सभी वर्ग के हजारों लोगों ने देखा तथा अनेक स्कूलों, कालेजों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने इसे देखकर चरित्रवान बनने की प्रेरणा ली। इसका विस्तृत समाचार वहाँ के अनेक समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ जिनमें से 'जयहिन्द', जनसत्ता, लोकमान्य, नूतन सौराष्ट्र, इण्डियन एक्सप्रैस, टाईम्स आफ़ इण्डिया आदि का नाम उल्लेखनीय है।

**बरेली के निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी**—बरेली सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक ग्रामवासियों ने लाभ उठाया। इनमें से गोपालपुर ग्राम तथा सिकरीग्राम का नाम उल्लेखनीय है।

**सिद्धपुर में बाल-दिवस समारोह**—सिद्धपुर सेवाकेन्द्र की ओर से वहां के विभिन्न स्कूलों में आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रोजैक्टरशो का कार्यक्रम हुआ। शिक्षाप्रद नाटक व गीतों द्वारा भी विद्यार्थियों को चरित्रवान बनने की प्रेरणा दी गई।

**फैजाबाद एवं रेवना में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम**—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु फैजाबाद के निकटवर्ती स्थानों पर आध्यात्मिक प्रवचनों, प्रदर्शनी, प्रोजैक्टरशो तथा प्रभातफेरी का कार्यक्रम हुआ। इनमें से टोडाचौक, अकबरपुर तथा मुबारकपुर का नाम उल्लेखनीय है।

**जूनागढ़ में बालवर्ष समारोह**—जूनागढ़ सेवाकेन्द्र की ओर से 'बाल-उत्थान प्रदर्शनी' का आयोजन वहाँ के विभिन्न स्थानों पर किया गया। इस अवसर पर बाल रैली भी निकाली गई जिसमें कई स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम व व्यक्तव्य प्रतिस्पर्धा में भी अनेक बच्चों ने भाग लिया।

**अमलनेर (जलगांव) में आध्यात्मिक कार्यक्रम**—अमलनेर में स्थित उप-सेवाकेन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रोजैक्टरशो का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय पाया। □

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक, एवं प्रकाशक, १५१ ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिंटर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-५१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D) 178

यह चित्र बंगलौर (मरियप्पा) में आयोजित बाल वर्ष समारोह के अवसर का है। बाल प्रतिस्पर्धा में विजेता कन्या को पुरस्कार भेंट किया जा रहा है।

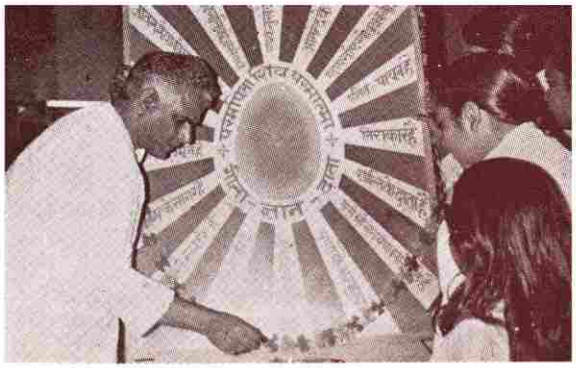

भोपाल में आयोजित 'चरित्र निर्माण प्रदर्शनी' का उद्घाटन वहाँ के शिक्षा मंत्री भ्राता विभाष बैनर्जी दीपक जलाकर कर रहे हैं।

यह चित्र अमलनेर में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के अवसर का है ब्र० कु० मीनाक्षी उद्घाटन कर रही हैं.

भावनगर में इन्जिनियरों के स्नेह मिलन के अवसर पर ब्र० कु० कोकिला प्रवचन कर रही हैं।

यह चित्र इलकल्ल में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के अवसर का है। ब्र० कु० बसवराज प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष समारोह के अवसर का है। बाल उत्थान प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या ब्र० कु० उषा संसद सदस्य भ्राता विनोद भाई शेठ व अन्य लोगों को दे रही हैं।

यह चित्र कोलार में आयोजित बालवर्ष समारोह के अवसर का है। निबन्ध प्रतियोगिता में विजेता कन्या कुबीणा को भ्राता रामचन्द्र राव पुरस्कार दे रहे हैं।

Regd. No. D (D) 178

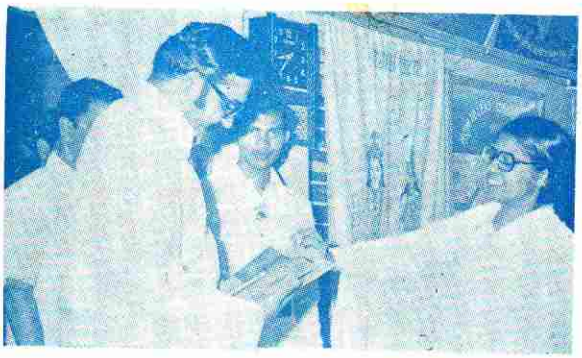

बेलगाँव के आध्यात्मिक संग्रहालय के चित्रों की व्याख्या देने के पश्चात् ब्र० कु० उषा वहाँ टेलीग्राफ के सीनियर अधीक्षक भ्राता सी० वी० गोपीनाथ को ईश्वरीय साहित्य भेंट कर रही हैं।

यह चित्र राजकोट में आयोजित बाल संस्कार शिविर व बाल उत्थान प्रदर्शनी के अवसर का है। वहाँ के कलेक्टर शिविर का उद्घाटन कर रहे हैं। साथ में वहाँ की नगर-पालिका के शासन अधिकारी खड़े हैं।

यह चित्र मैनपुरी में आयोजित 'बाल उत्थान प्रदर्शनी' के अवसर का है। ब्र० कु० मनोरमा वहाँ के जिलाधीश एवं पुलिस अधीक्षक की धर्मपत्नी को चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

यह चित्र आगरा में आयोजित बाल वर्ष समारोह के अवसर का है। मंच पर बाईं ओर से ब्र० कु० मिथलेश बिमला, सेन्ट जौन कालेज के प्रिंसिपल तथा ब्र० कु० अशोक बैठे हैं।

उज्जैन में कुम्भ के अवसर पर होने वाले 'आध्यात्मिक मेला' का स्थानीय कार्यालय का उद्घाटन अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायधीश एवं उपाध्यक्ष भ्राता नगेन्द्रसिंह दीपक जलाकर कर रहे हैं।

यह चित्र श्री गंगानगर में आयोजित बाल वर्ष-समारोह के अवसर का है। वहाँ के समाज उत्थान एवं कल्याण मण्डल की सदस्या बहन ज्ञान देवी को ईश्वरीय सौगात ब्र० कु० विद्या दे रही हैं।